A

शिवाजी विश्वविद्‌यालय, कोल्हापुर

महाराष्ट्र

दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र

प्रथम सत्र

पटकथा लेखन

द्‌वितीय सत्र

लघुपट निर्माण

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के नुसार सुधारित पाठ्यक्रम
(शैक्षिक वर्ष 2023-24 से)

एम. ए. भाग–1 : हिंदी

© **कुलसचिव,** शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
प्रथम संस्करण : 2024
एम. ए. भाग 1 (हिंदी)
सभी अधिकार विश्वविद्यालय के अधीन। शिवाजी विश्वविद्यालय की अनुमति के बिना किसी भी सामग्री की नकल न करें।

प्रतियाँ : 500

■

प्रकाशक :
डॉ. व्ही. एन. शिंदे
कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

मुद्रक :
श्री. बी. पी. पाटील
अधीक्षक,
शिवाजी विश्वविद्यालय मुद्रणालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

ISBN- 978-93-89345-82-7

★ दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र और शिवाजी विश्वविद्यालय की जानकारी निम्नांकित पते पर मिलेगी– शिवाजी विश्वविद्यालय, विद्यानगर, कोल्हापुर–416 004. (भारत)

दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

■ सलाहकार समिति ■

प्रो. (डॉ.) डी. टी. शिर्के
कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) पी. एस. पाटील
प्र-कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) प्रकाश पवार
राज्यशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एस. विद्याशंकर
कुलगुरू, केएसओयू
मुक्तगंगोत्री, म्हैसूर, कर्नाटक-५७० ००६

डॉ. राजेंद्र कांकरिया
जी-२/१२१, इंदिरा पार्क,
चिंचवडगांव, पुणे-४११ ०३३

प्रा. (डॉ.) सीमा येवले
गीत-गोविंद, फ्लॅट नं. २, ११३९ साईक्स एक्स्टेंशन,
कोल्हापुर-४१६००१

डॉ. संजय रत्नपारखी
डी-१६, शिक्षक वसाहत, विद्यानगरी, मुंबई विश्वविद्यालय,
सांताक्रुझ (पु.) मुंबई-४०० ०९८

प्रो. (डॉ.) कविता ओझा
संगणकशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) चेतन आवटी
तंत्रज्ञान अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एम. एस. देशमुख
अधिष्ठाता, मानव्य विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एस. एस. महाजन
अधिष्ठाता, वाणिज्य व व्यवस्थापन विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) श्रीमती एस. एच. ठकार
प्रभारी अधिष्ठाता, विज्ञान व तंत्रज्ञान विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्राचार्या (डॉ.) श्रीमती एम. व्ही. गुळवणी
प्रभारी अधिष्ठाता, आंतर-विद्याशाखीय अभ्यास विद्याशाखा
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. व्ही. एन. शिंदे
प्रभारी कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. ए. एन. जाधव
संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

श्रीमती सुहासिनी सरदार पाटील
वित्त व लेखा अधिकारी,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) डी. के. मोरे (सदस्य सचिव)
संचालक, दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

हिंदी अध्ययन मंडल

अध्यक्ष

प्रो. डॉ. साताप्पा शामराव सावंत
विलिंग्डन कॉलेज, सांगली

सदस्य

- **प्रो. डॉ. नितीन चंद्रकांत धावडे**
  मुधोजी कॉलेज, फलटण, जि. सातारा
- **डॉ. श्रीमती मनिषा बाळासाहेब जाधव**
  आर्टस ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, ११७, शुक्रवार पेठ, सातारा-४१५ ००२.
- **प्रो. डॉ. श्रीमती वर्षाराणी निवृत्ती सहदेव**
  श्री विजयसिंह यादव कॉलेज, पेठ वडगाव, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. डॉ. हणमंत महादेव सोहनी**
  सदाशिवराव मंडलीक महाविद्यालय, मुरगुड, ता. कागल, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. (डॉ.) अशोक विठोबा बाचूळकर**
  आजरा महाविद्यालय, आजरा, जि. कोल्हापुर
- **डॉ. भास्कर उमराव भवर**
  कर्मवीर हिरे आर्टस, सायन्स, कॉमर्स ॲण्ड एज्युकेशन कॉलेज, गारगोटी, ता. भुदरगड, जि. कोल्हापुर
- **डॉ. संग्राम यशवंत शिंदे**
  आमदार शशिकांत शिंदे महाविद्यालय, मेढा, ता. जावळी, जि. सातारा
- **प्रो. डॉ. अनिल मारुती साळुंखे**
  यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, करमाळा, जि. सोलापूर-४१३२०३
- **डॉ. गजानन सुखदेव चव्हाण**
  श्रीमती जी.के.जी. कन्या महाविद्यालय, जयसिंगपूर, ता. शिरोळ, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. डॉ. सिद्राम कृष्णा खोत**
  प्रो. डॉ. एन. डी. पाटील महाविद्यालय, मलकापुर, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. डॉ. उत्तम लक्ष्मण थोरात**
  आदर्श कॉलेज, विटा, जि. सांगली
- **डॉ. परशराम रामजी रगडे**
  शंकरराव जगताप आर्टस ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, वाघोली, ता. कोरेगाव, जि. सातारा

भूमिका

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के दूरस्त शिक्षा विभाग की ओर से एम.ए.भाग एक के लिए निर्धारित किया गए पाठ्यक्रम प्रथम सत्र प्रश्नपत्र 'पटकथा लेखन' और द्वितीय सत्र प्रश्नपत्र 'लघुपट निर्माण' का सिम आज आपके हाथों में देते हुए हमें बेहद खुशी का अनुभव हो रहा है।

प्रथम सत्र प्रश्नपत्र 'पटकथा लेखन'के इकाई एक में पटकथा का स्वरूप, पटकथा के तत्व, पटकथा की विषयवस्तु, पटकथा का द्वंद्व, पटकथा के प्रकार और इकाई दो में प्रत्यक्ष पटकथा लेखन, कथा/विषयवस्तु, संवाद लेखन, सामान्य संवाद, विशेष संवाद लेखन, कहानी, उपन्यास, फिल्म का रूपांतरण/रीमेक, दृषयिकरण, शूटिंग स्क्रिप्ट, पटकथा और शूटिंग स्क्रिप्ट में फ़र्क उदा, लगान फिल्म का दृश्य, प्रस्तुत दृश्य का विश्लेषण तथा द्वितीय सत्र प्रश्नपत्र 'लघुपट निर्माण' में लघुपट निर्माण की प्रक्रिया, कथा का फिल्मांकन, संपादन, दृश्य विभाजन, कॅमेरा का विस्तृत परिचय, साहित्य और संस्कृति, लघुपट तथा साहित्य विधाओं का दृश्य माध्यमों में रूपांतरण आदि के संदर्भ में विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की गई है।

विश्व के सभी व्यक्तियों के जीवन के साथ जैसे अन्य क्षेत्र जुड़े हुए हैं वैसेही या अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा रोजमर्रा के जीवन से जुड़ा हुआ क्षेत्र है फिल्म-क्षेत्र ! विश्व में स्थित शायद ही कोई ऐसा समुह, व्यक्ति, या आदि जातियाँ होंगी जो फिल्म को नहीं जानते। अगर हैं तो वह भी फिल्म का विषय बन सकता है। लेकिन इंसान की जिंदगी से जुड़ा हुआ सबसे करीबी प्रस्तुत क्षेत्र ही शिक्षा के क्षेत्र से वंचित रहा है। गलत फहमियाँ या अनिश्चितता के कारण शिक्षा क्षेत्र में उतना सम्मिलित नहीं किया गया जितने की अन्य क्षेत्र!

इस क्षेत्र के बारे में अनगिनत शंका, कुशंका, जिज्ञासा, कौतूहल, मन-घडन्त कल्पनाएं, तर्क-वितर्क आदि अनेक व्यक्तियों को बचपन से होती हैं। इस क्षेत्र में काम करनेवालों के बारे में अनगिनत सुनी-सुनाई अफवाहों का तो समंदर उफानता रहता है। इस क्षेत्र में प्रवेश पाने से लेकर अपने जिंदगी की कश्ती को उसमें प्रवाहित करने की चाह को लेकर अनेक प्रतिभाएं यूं ही रुखसत हो गई हैं, हो जाती हैं। लेकिन इस क्षेत्र से जुड़े हुए सारे प्रश्नों के उत्तर नहीं मिलते। क्योंकि इस क्षेत्र में काम करनेवालों के पास इतना समय ही नहीं होता कि वे इस संदर्भ में आम लोगों से बात कर सकें या उनके जिज्ञासाओं की पूर्ति कर सके। दूसरी बात यह भी है कि इस क्षेत्र में काम करनेवाले लोग अपने एक मिनट को भी आर्थिक फायदा नुकसान के कसौटी पर परखते, तौलते हैं। बिना मुआवजे इस क्षेत्र में पत्ता भी नहीं हिलता। यह क्षेत्र पहले कुछ वर्गों तक ही सीमित था। लेकिन आज उसकी कायनात आम इंसान के मुठ्ठी में आ चुकी है। कल्पना के नींव परे खड़े करोड़ों रुपयों के लेनदेन को रोज करनेवाले इस क्षेत्र में आप में से कोई भी अपने प्रतिभा के आधार पर प्रवेश कर सकता है। बस इस क्षेत्र के किसी भी हिस्से को लेकर हद की दीवानगी होनी चाहिए।

इस सिम के जरिए इस क्षेत्र की पूरी पहचान होना तो संभव नहीं है। उसके लिए भारत सरकार ने अलग इन्स्टीट्यूटस बनाएं हैं। बड़े बड़े कलाकार उस इंस्टीट्यूट के छात्र और आज इस क्षेत्र के बेताज बादशहा बन बैठे हैं। लेकिन उन इंस्टीट्यूटस में जाने के बाद ही आप इस क्षेत्र में प्रवेश कर सकेंगे ऐसा सोचना बिल्कुल गलत होगा। इस संदर्भ में मैं कहना चाहूँगा कि जिस तरह प्राकृतिक सुंदरता को मेकअप की जरूरत नहीं होती। उसी तरह आप में अगर लेखन, अभिनय, गायन, शूटिंग, कला आदि की प्रतिभा अगर है तो प्रस्तुत सिम में इतनी जानकारी अवश्य ही है कि आप खुद का 'लघुफिल्म' जरूर बना सकते हैं। निर्धारित किए गए पाठ्यक्रम को याद रखते हुए उसके दायरे में रहकर हमें यह सिम बनानी थी। लेकिन हमने इसमें गागर में सागर भर देने की कोशिश इसलिए की है कि मात्र हिन्दी का ही नहीं अपितु कोई भी छात्र या पाठक इसे पढ़ लें तो उसकी प्रतिभा को रास्ता मिलें। इस क्षेत्र के नींव से लेकर चोटी तक के संक्षिप्त सफर का मात्र परिचय पाकर आप इतना जरूर जान पाएंगे कि आम छात्र/पाठक के लिए इस क्षेत्र में प्रवेश पाने के लिए कोई गुंजाईश है या नहीं। यह बहुत बड़ा क्षेत्र है और इसके अनेक विभाग होते हैं। आपके सामने हम कुछ महत्वपुर्ण तथ्यों को ही रख सकें है। हो सकता है कुछ गलतियाँ भी हों। लेकिन इस पाठ्यक्रम के जरिए इस क्षेत्र के द्वार खोलकर अपने विश्व विद्यालय ने छात्रों के प्रतिभा को नया रास्ता उपलब्ध कराया है। इसलिए शिवाजी विश्व विद्यालय का दिल से धन्यवाद यापित करता हुं।

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के मा. कुलगुरु, हिंदी विषय समन्वयक, दूर शिक्षा विभाग के संचालक एवं उनके सभी सहकारियों, संबंधित कर्मचारियों का हम अंतस्तल से आभार प्रकट करते हैं।

– संपादक

दूरशिक्षण और ऑनलाईन शिक्षण केंद्र
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर

सत्र–1 : पटकथा लेखन
सत्र–2 : लघुपट निर्माण
एम. ए. भाग–1

लेखकाचे नाव	**घटक क्रमांक**
सत्र–1 : पटकथा लेखन	
★ **प्रो. (डॉ.) रमेशकुमार गवळी** अध्यक्ष, हिंदी विभाग (U.G. & P.G.) कृष्णा महाविद्यालय, रेठरे बुद्रुक, पोस्ट शिवनगर ता. कराड, जि. सातारा	**1, 2**
सत्र–2 : लघुपट निर्माण	
★ **प्रा. निलेश डामसे** अध्यक्ष, हिंदी विभाग सौ. मालती वसंतदादा पाटील कन्या महाविद्यालय, इस्लामपुर, ता. वाळवा, जि. सांगली	**1, 2**

■ **सम्पादक** ■

प्रो. (डॉ.) रमेशकुमार गवळी
कृष्णा महाविद्यालय, रेठरे बुद्रुक,
पोस्ट शिवनगर, ता. कराड, जि. सातारा

प्रो. (डॉ.) सातापा शामराव सावंत
अध्यक्ष, हिंदी अध्ययन मंडल,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर तथा
विलिंग्डन कॉलेज सांगली, जि. सांगली

सत्र–1 : पटकथा लेखन
सत्र–2 : लघुपट निर्माण
एम. ए. भाग–1

अनुक्रम

इकाई		पृष्ठ
	सत्र–1 : पटकथा लेखन	
1.	पटकथा का स्वरूप, पटकथा के तत्त्व, पटकथा की विषयवस्तु, पटकथा का द्वंद्व, पटकथा के प्रकार	1
2.	पटकथा लेखन, संवाद लेखन, रूपांतरण, दृश्यिकरण/शूटिंग स्क्रिप्ट	12
	सत्र–2 : लघुपट निर्माण	
1.	लघुपट निर्माण लघुपट निर्माण की प्रक्रिया, कथा का फिल्मांकन, कथा का दृश्य विभाजन, संपादन, कैमरा और उसका महत्त्व	29
2.	पटकथा लघुपट साहित्य और संस्कृति, पटकथा साहित्य और संस्कृति, लघुपट साहित्य और संस्कृति, साहित्य, लघुपट और पटकथा का सौंदर्यबोध, शिल्प, साहित्य विधाओं का दृश्य माध्यमों में रुपांतरण	55

हर इकाई की शुरूआत उद्देश्य से होगी, जिससे दिशा और आगे के विषय सूचित होंगे-

(१) इकाई में क्या दिया गया है।

(२) आपसे क्या अपेक्षित है।

(३) विशेष इकाई के अध्ययन के उपरांत आपको किन बातों से अवगत होना अपेक्षित है।

स्वयं-अध्ययन के लिए कुछ प्रश्न दिए गए हैं, जिनके अपेक्षित उत्तरों को भी दर्ज किया है। इससे इकाई का अध्ययन सही दिशा से होगा। आपके उत्तर लिखने के पश्चात् ही स्वयं-अध्ययन के अंतर्गत दिए हुए उत्तरों को देखें। आपके द्वारा लिखे गए उत्तर (स्वाध्याय) मूल्यांकन के लिए हमारे पास भेजने की आवश्यकता नहीं है। आपका अध्ययन सही दिशा से हो, इसलिए यह अध्ययन सामग्री (Study Tool) उपयुक्त सिद्ध होगी।

इकाई–1
पटकथा का स्वरूप, पटकथा के तत्त्व, पटकथा की विषयवस्तु, पटकथा का द्वंद्व, पटकथा के प्रकार

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवेचन

    1.3.1 पटकथा

    1.3.2 पटकथा की कथा/विषयवस्तु

    1.3.3 पटकथा का स्वरूप

1.4 पटकथा के तत्त्व

    1.4.1 कहानी

    1.4.2 दृश्यमय बुनावट

    1.4.3 संवाद

1.5 कथा का फिल्मांकन

    1.5.1 प्रस्तावना, संघर्ष और समाधान

1.6 पटकथा के प्रकार

    रचना के आधार पर पटकथा के प्रकार

    1.6.1 क्रमबद्ध तरीका

    1.6.2 स्थापित तरीका

    1.6.3 उदा–पटकथा लेखन का क्रमबद्ध तरीका

    1.6.4 उदा–पटकथा लेखन का क्रमबद्ध तरीका

1.7 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.8 फिल्मी शब्द, शब्दार्थ

1.9 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.10 सारांश

1.11 स्वाध्याय

1.12 क्षेत्रीय कार्य

1.13 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य –

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप –

1. फिल्म की पटकथा से परिचित हो जाएंगे।
2. पटकथा और फिल्म–क्षेत्र को समझ पाएंगे।
3. फिल्मों की नींव से परिचित हो जाएंगे।
4. अपनी प्रतिभा को जान पाएंगे।
5. पटकथा का विस्तृत क्षेत्र तथा इस क्षेत्र से जुड़े हुए रोजगार के अवसरों से परिचित हो जाएंगे।

1.2 प्रस्तावना –

फिल्म क्षेत्र के बारे में अनगिनत शंका, कुशंका, जिज्ञासा, कौतुहल, मन–घडंत कल्पनाएं, तर्क–वितर्क आदि अनेक व्यक्तियों को बचपन से होती हैं। लेकिन इन सारे प्रश्नों के उत्तर नहीं मिलते।क्योंकि इस क्षेत्र में काम करनेवालों के पास इतना समय ही नहीं होता कि वे इस संदर्भ में आम लोगों से बात कर सकें या उनके जिज्ञासाओं की पूर्ति कर सकें। दूसरी बात यह भी है कि इस क्षेत्र में काम करनेवाले लोग अपने एक मिनट को भी आर्थिक फायदा नुकसान के कसौटी पर परखते, तौलते हैं। बिना मुआवजे इस क्षेत्र में पत्ता भी नहीं हिलता।

इस क्षेत्र की पूरी पहचान होना तो संभव नहीं है। उसके लिए भारत सरकार ने अलग इन्स्टीट्यूटस् बनाएं हैं। लेकिन इस क्षेत्र के नींव से लेकर चोटी तक का सफर देखकर हम इतना जरूर जान पाएंगे कि आम छात्र के लिए इस क्षेत्र में प्रवेश पाने के लिए कोई गुंजाईश है या नही।

यहाँ हम जिस पाठ का अध्ययन करेंगे वह पाठ है 'पटकथा'। पटकथा है क्या चीज और उसका फिल्मों से क्या लेना देना है? अगर वह है तो किस तरह की होनी चाहिए और अगर नहीं होती है तो क्या होता है? आदि अनेक शंकाओं का समाधान प्रस्तुत करने की कोशिश करेंगे। इस पाठ को पढ़ने से पहले बस इतना जान लें कि पटकथा किसी भी फिल्म की जान, नींव होती है। इसके बिना फिल्म क्षेत्र का अस्तित्त्व ही नहीं है। लेकिन यह भी सच है कि इस क्षेत्र का दारोमदार कल्पना के उडान पर अवलंबित है।

1.3 विषय विवेचन –

1.3.1 पटकथा (Screenplay)

पटकथा शब्द 'कथा' और 'पट' इन दो शब्दों के संयोग से बना हुआ है। पटकथा लेखक मनोहर श्याम जोशी के शब्दों में देखिए–''पटकथा शब्द 'कथा' और पट इन दो शब्दों के मेल से बना हुआ है।पट और कथा! कथा का मतलब आप सभी जानते हैं–कहानी! और पट का अर्थ होता है–परदा! अर्थात् ऐसी कथा जो परदे पर दिखाई जाए।''[1]

इसी के आधार पर हम व्याख्या कर सकते हैं कि 'जो कथा केवल फिल्म या धारावाहिक को छोटे या बड़े परदे पर ('पट' अर्थात् चित्रों का पट =चित्रपट) दिखाने के लिए अनेक दृश्यों तथा फिल्माने के दर्जनों सूचनाओं के साथ लिखी गई हो- पटकथा हैं।

पटकथा ढाई-तीन घंटे के फिल्म की भी हो सकती है और 5 मिनट के शॉर्ट फिल्म की भी! दो-एक मिनट के विज्ञापन की भी हो सकती है और दो साल चलनेवाली धारावाहिक की भी!

1.3.2 पटकथा की कथा / विषयवस्तु –

पटकथा से पहले होती है कथा। कथा से मतलब है 'कहानी'। एक अच्छे प्रभावकारी पटकथा के लिए सख्त जरूरत होती है एक प्रभावशाली कहानी की।प्रस्तुत कहानी पढ़ते ही पाठक के दिलों-दिमाग पर छा जाती है।कहानी काल्पनिक, वास्तव या मात्र मनोरंजन करनेवाली भी हो सकती है। लेकिन उसका आदि मध्य और अंत परिणामकारक होना जरूरी होता है।वास्तव दिखाकर लोगों को सजग करने से लेकर अद्भुत, भयानक, वीर, शृंगार, भक्ति आदि 11 रसों के निर्माण तक उसका परिणाम होता है।चाहे जो हो लेकिन कहानी का परिणामकारक होना निहायत जरूरी हो जाता है। क्योंकि कहानी के स्ट्रक्चर पर ही पटकथा का खिलना,फूलना सफल होना निर्भर रहता है। संक्षेप में कहें तो कहानी का मतलब है एक घर और जैसे इंटेरियर डिजाइनर उस घर को डिजाइन कर उसका विकास करता है। ठिक उसी तरह पटकथाकार प्रस्तुत कहानी को घर (फिल्म) के हिसाब से डिजाइन कर रहने लायक या देखने लायक बनाता है। इसलिए एक कामयाब फिल्म के लिए सबसे पहली जरूरत होती है एक सशक्त कहानी की।कहानी की सशक्तता ही पूरे फिल्म की प्रथम नींव होती है। जैसे इस बात को युं कह सकते हैं कि तबीयत ठीक हो तो ही बॉडी बिल्डिंग संभव है।

1.3.3 पटकथा का स्वरूप –

कहानी लिखनेवाला साहित्यकार कभी ये सोचकर कहानी नहीं लिखता कि आगे जाकर उस पर फिल्म बनेगी।वह अनेक कारणों से कहानी लिखता है। यहाँ कहानी का मतलब सिर्फ लघु कथा (शॉर्ट-स्टोरी) न होकर उसकी विस्तृतता छोटे उपन्यास से लेकर बडे उपन्यास के साथ-साथ कोई नाटक, महा-नाटक, खंडकाव्य, महाकाव्य, दंत-कथा, लोककथा तक हो सकता है। अब पटकथा लिखनेवाले पर निर्भर रहता है कि वह छोटी कहानी को कैसे ढाई-तीन घंटे के फिल्मी समय में खिंचता है या बड़े उपन्यास या महाकाव्य को कैसे चुनिंदा घटना, दृश्यों में समेटकर मूल उपन्यास या महाकाव्य का प्रभाव, ढांचा न बिगाड़ते हुए प्रस्तुत करता है। पटकथा में लेखक जिन दृश्यों को लिखता है वही दृश्य निर्देशक कैमरा अभिनेताओं के अभिनय से परिपूर्ण बनाकर, उसमें आवाज आदि मिलाकर, उसका संपादन कर निश्चित समय में बिठाकर पेश करता है।पटकथा को छोड़ कोई दृश्य नहीं फिल्माया जाता है।

कहानी को समय के हिसाब से दृश्यों में तब्दील कर बारिकियों के साथ प्रस्तुत करना ही पटकथा लिखना है। आम तौर पर लेखक कहानी या उपन्यास लिखते समय यह बातें जानबूझकर याद नहीं रखता कि

रेखांकित पात्र को कब, कैसे, कहाँ, किसके साथ, किन कपड़ों या सुविधा, गैरसुविधाओं के साथ पेश करना है। वह तो लिखने के रौ में अपने आप लिखता जाता है और ये बातें अपने आप उसमें आ जाती हैं।

लेकिन पटकथा लिखते समय लेखक को इन बातों का मात्र ध्यान ही नहीं रखना पड़ता अपितु जानबूझकर इन चीजों को रखना ही पड़ता है। इसी को पटकथा कहते हैं कि प्रस्तुत पात्र कब, कैसे, कहाँ, किसके साथ, किन कपड़ों या सुविधा, गैरसुविधाओं के साथ वहाँ क्रियाकलाप करता है। साथ ही वह क्या, किससे, क्यों, कैसे बोलता है? दिन में, रात में, शाम को, सुबह? आदि लिखकर दृश्य में जान डालने के लिए अभिनेताओं/अभिनेत्रियों के लिए किन भाव-भंगिमाओं की जरूरत है तथा उस दृश्य के महत्त्व को भी रेखांकित करता है।कुछ अच्छे और फिल्म को असरदार बनाने के उद्देश्य से पटकथा लिखनेवाले मंजे हुए लेखक पार्श्व संगीत और अभिनेताओं के लिए व्हाईस ऐक्टिंग की सूचनाए भी लिखते हैं। जिससे क्या करना है की सूचना अभिनेता, अभिनेत्री, निर्देशक के साथ साथ यूनिट के सभी कर्मचारियों को भी मिलती है।

एक सशक्त पटकथा फिल्माएं जानेवाले प्रस्तुत दृश्य को कैसे दृश्याए जाना चाहिए की सभी सूचनाओं से युक्त होती है।यह बात और है कि पटकथाकार के सभी सूचनाओं का पालन बहुत बार निर्देशक करते हैं, मानते ही हैं ऐसी बात नहीं है।क्योंकि फिल्म मात्र पटकथाकार की ही नहीं अपितु निर्देशक के नजरिए से भी बनती है। इसका मतलब यह नहीं होता कि वह पटकथाकार की सूचनाओं को नजर अंदाज करता है। बल्कि वह उन्हीं सूचनाओं को आधार बनाकर उनको अपने ढंग, कल्पना तथा उस दृश्य के साथ कोई सूचक दृश्य निर्माण कर उस दृश्य की सुंदरता को, प्रभावात्मकता को निखारता है। मैं तो इस प्रसंग को इस तरह देखता हूँ कि जो बात पटकथाकार के नजरों से छूट जाती है, उसकी पूर्तता निर्देशक की नजर करती है। पटकथाकार को इसमें आपत्ति नहीं होती।

संक्षेप में कहें तो अनेक लोग जब कोई कहानी सिर्फ सुनते या पढ़ते हैं तो उनके मन:चक्षुओं के सामने एक ही कहानी के पात्र अलग अलग कल्पना के जरिए आकार लेते हैं। वे सभी पात्र एक से नहीं हो सकते।लेकिन कोई पटकथाकार उसी कहानी को सुनकर या पढ़कर उसके दिमाग में उसकी कल्पना के आधार पर आकार लेनेवाले पात्र को पटकथा में उतारता है। वह तय करता है कि उस पात्र के कपड़े, व्यक्तित्त्व, उसके कार्यकलाप, संवाद, भाषा आदि क्या होने चाहिए। तब जाकर वह पात्र जब किसी अभिनेता के माध्यम से हमारे सामने प्रस्तुत होता है तो हम उसी पात्र को हमारे दिमाग में उगे हुए पात्र को हटाकर पक्का बिठाते हैं।

उदा. सोच लीजिए शोले के गब्बरसिंग का पात्र कहते हैं कि पहले डैनी डेंजगोप्पा को सामने रखकर लिखा गया था। इत्तिफ़ाक से वह पात्र अमजदजी को मिला। और फिल्म में धर्मेन्द्र, संजीवकुमार, अमिताभ जैसे सुपरस्टारों के होने के बावजूद अमजदजीने उस पात्र में इस तरह जान भर ली कि आज हम अमजदजी के अतिरिक्त गब्बर के लिए किसी और को सोच भी नहीं सकते। इसका सारा श्रेय पटकथाकार सलीम-जावेद को जाता है कि उन्होंने इस तरह के पात्र का निर्माण किया। किसी दृश्य को फिल्माने से पहले प्रस्तुत दृश्य को पटकथा में आमतौर पर क्रमबद्ध तरीका या स्थापित तरीके से लिखा जाता है।

1.4 पटकथा के तत्त्व –

वैसे तो पटकथा के निश्चित तत्त्व कहानी और उपन्यास की तरह कही लिखित रूप में प्राप्त नहीं होते।लेकिन एक सुचारु ढंग की पटकथा के लिए निम्नलिखित तीन तत्त्व –कहानी, दृश्यमय बुनावट और संवाद आवश्यक हो जाते हैं–

1.4.1 कहानी –

पटकथा के लिए आवश्यक और जिसके बिना पटकथा लिखी ही नहीं जा सकती या यूं कहे कि जिसके बिना पटकथा की कल्पना भी नहीं की जा सकती वह है पटकथा का धरोहर तत्त्व–कहानी! फिल्म हो या धारावाहिक हो या कोई भी ऐसा दृश्य जो पाठकों पर प्रभाव छोड़ता हो बिना कहानी के पटकथा तक पहुँच ही नहीं सकती। अब सवाल उठता है कि अच्छी कहानी मिलेगी कहाँ? इस संदर्भ में आप फिल्मों का, धारावाहिकों का इतिहास देखेंगे तो पाएँगे कि सुपरहिट फिल्म या धारावाहिक किसी प्रतिभावन्त लेखक की किसी कहानी, उपन्यास, नाटक या महाकाव्यों पर बनी हुई हैं और इस तरह अपना प्रभाव बना चुकी हैं कि प्रस्तुत फिल्में, धारावाहिक आज 35 सालों के बाद भी जन मानस के दिलों–दिमाग पर छाए हुए हैं। अर्थात् इस तरह की फिल्में, धारावाहिक बनानेवाले पटकथाकार, निर्माता, निर्देशक उतने ही प्रतिभावान थे। उन्होंने मूल कहानी के प्रसंगों से कोई छेड़कानी नहीं की और की भी तो उसका समाधान भी प्रस्तुत किया।उदा.के लिए सत्यजित राय की फिल्म 'पाथेर', 'पांचाली', मन्नू भण्डारी के कहानी पर बनी बासु चटर्जी की फिल्म 'रजनीगंधा', धारावाहिक 'रामायण' और 'महाभारत' की पटकथा लिखना प्रत्यक्ष में लोहे के चने चबाना था। रामानंद सागर के लिए तो मुश्किलें तो थी ही किन्तु महाभारत के एक पटकथाकार राही मासूम रजा के लिए तो तलवार के धार पर चलकर साक्षात् मृत्यु को बुलाना था। क्योंकि राही साहब मुसलमान थे और हिंदू के सबसे प्रसिद्ध तथा श्रध्येय महाकाव्य महाभारत पर लिखना था।लेकिन उन्होंने इस तरह पटकथा को प्रस्तुत किया कि आज भी महाभारत उतना ही श्रेष्ठ साबित होता है। कहानी के अनेक स्त्रोत हो सकते हैं। भूतकाल, भविष्य, वर्तमान से लेकर अनेक क्षेत्र, इतिहास, पुराण, दंतकथा, लोककथा, मनोदशाएं आदि तक कहानी के स्त्रोत हुआ करते हैं।

1.4.2 दृष्यमय बुनावट –

कहानी को व्यवस्थित तरीके से पेश करने के लिये जिन दृश्यों का चयन किया जाता है, उन दृश्यों का क्रम ठीक ढंग से रखना कि जिससे बिना किसी समस्या के कहानी मात्र समझ में ही न आए अपितु शुरू से लेकर अंत तक दर्शक, वाचक और श्रोताओं में उसकी उत्सुकता बनी रहनी चाहिए की रचना, दृश्यमय बुनावट होती है। यह बुनावट ठिक ढंग से होती है तो ही कहानी तथा अंत देखने, पढने, सुनने के बाद दर्शक को समाधान प्राप्त होता है। पटकथाकार को इसकी सतर्कता बरतनी चाहिए कि दृश्यों का क्रम पहले से ही तय करके रखें! किस दृश्य के बाद किस दृश्य को रखना ज्यादा परिणामकारक होगा इस पर काफी विचार होना जरुरी हो जाता है। संक्षेप में कह सकते हैं कि कहानी के प्रभाव को कायम रखते हुए दर्शक को बांधे रखने का कार्य इस तत्त्व के आधार पर किया जाता है।

1.4.3 संवाद –

पटकथा दृश्यों के क्रम से बुनने के बाद दृश्यों में जो पात्र होते हैं उन्हे आपस में बातचीत करना जरुरी हो जाता है। अगर ऐसा नही होता तो वह मात्र चल–चित्र या मूक पट हो जाएगा। बोलपट बनने से पहले या फिल्म में चित्र आपस में बाते करने तक के विकास से पहले मात्र मूकपट ही हुआ करते थे।लेकिन फिल्मों में वार्तालाप आने के बाद पटकथा में संवाद का होना निहायत जरुरी हो गया। पटकथा का विकास पात्रों पर चित्रित किये गये दृश्योंसे होता है।लेकिन इन दृश्यों में कहानी को आगे बढाने के लिये संवाद का होना निहायत जरुरी है। पटकथाकार दृश्य के तथा पात्रों के अनुसार संवाद लिखता है। उसका उद्देश्य कहानी को सरल ढंग से आगे ले जाना होता है। बहुत बार पटकथाकार के द्वारा लिखे गये संवाद ही फिल्म के लिये काफी होते है।लेकिन किसी निर्देशक, निर्माता को अगर अपनी फिल्म को और ज्यादा असरदार बनानी है तो वह संवाद लिखनेवाले विशेष साहित्यकार या लेखक की नियुक्ति कर किसी पटकथाकार द्वारा लिखी गई पटकथा उसे सौंप देता है। प्रस्तुत लेखक उस पटकथा को पढकर, अध्ययन कर अपने अनुभव के आधार पर असरदार शब्दों का उपयोग कर कम से कम शब्दों में ज्यादा आशय समेटकर शेरो–शायरी, यमक, अतिशयोक्ति, रूपक आदि अलंकारो के आधार पर इस तरह संवाद को परोसता है कि दर्शक, श्रोता तृप्त हो जाते हैं। असरदार संवाद किसी भी फिल्म को कामयाब इस तरह बनाती है कि सालोंसाल प्रस्तुत संवाद जन–मानस के व्यवहार में उपयोग में लाए जाते है। ‘शोले’, ‘दीवार’, ‘शान’, ‘जंजीर’ आदि फिल्म के संवाद आज भी प्रयोग में लाये जाते हैं। इसलिये संवाद आवश्यक तत्त्व हो जाता है।

1.5 पटकथा का द्वंद्व –

जैसे किसी कहानी, उपन्यास में शुरुआत से लेकर मध्य तक पाठक को आगे क्या होता है? कि उत्सुकता चैन से बैठ्ने नही देती और मात्र इस उत्सुकता के कारण वह कहानी या उपन्यास पढ लेता है। ठिक इसी तऱह पटकथा में शुरुवात, मध्य और अंत को लेकर काफी विचार विमर्श किया जाता है। दर्शक को बांध के रख अंत में समाधान प्रस्तुत करना कौशल का काम होता है। अंत के आधार पर दर्शक को वैचारिक चक्र में डाल देना, मानसिक स्तर पर शांति प्रदान करना, सवाल उठाकर सोचने पर मजबूर कर देना या ‘मन को बैचेन कर देना’ एक सफल पटकथाकार के लिये बाएं हाथ का खेल होता है। और दर्शक को पूर्ण समाधान प्राप्त कर देनेवाली पटकथा एक सफल पटकथा कहलाती है। पटकथा में संघर्ष उत्पन्न करना और नायक द्वारा उसका समाधान प्रस्तुत करना ही पटकथा का द्वंद्व होता है। जिससे पटकथा में जान आ जाती है और फिल्म कामयाब हो जाती है। फिल्मवाले पटकथा को तीन बिंदुओं पर परखते हैं वो है –

1.5.1 प्रस्तावना, संघर्ष और समाधान

इसीको अंग्रेजी में प्रपोजिशन, स्ट्रगल और रिजॉल्यूशन कहा जाता है। पटकथा लेखक अगर खुद भी लेखक होता है तो किसी अन्य के कहानी में ये तीनों तत्त्व मिलाकर वह बेहतरीन तरीके से प्रस्तुत कहानी का विस्तार करता है और अगर वह प्रतिभावान नहीं है तो एक अच्छी कहानी को भी खराब कर सकता है।इसलिये फिल्म की नींव पटकथा के लिये सच्चे साहित्यकार की सख्त जरुरत होती है।क्योंकि एक

प्रतिभावान साहित्यकार के पटकथा में उपर्युक्त तीनों तत्त्व अनायास ही शामिल रहते हैं उसके लिये खिंचतान कर इन तत्त्वों को लाने की जरुरत नही पडती। विशेष बात यह भी है कि कहानी में ही अगर द्वंद्व नहीं है तो पटकथा में भी वह नहीं आ सकती और लाया जाए भी तो वह कृत्रिम हो जाएगा।

1.6 पटकथा के प्रकार –

वैसे देखा जाएं तो पटकथा के प्रकारों के संदर्भ में कही भी लिखित दस्तावेज प्राप्त नहीं होता। लेकिन पटकथाओं का अध्ययन करते समय कुछ तत्त्व ऐसे निकल आते हैं कि जिसके आधार पर पटकथा के प्रकार इस तरह से किए जा सकते हैं –

रचना के आधार पर पटकथा के प्रकार

1.6.1 क्रमबद्ध तरीका

दुनियाभर के फिल्मी जगत में जब फिल्में बनती हैं तो पटकथा तकरीबन एक सी ही नजर आती है। लेकिन काम करनेवाले फिल्मी युनिट के तज्ञ जब उसमें अपने सुविधानुसार बदलाव करते हैं तो वही बदलाव धीरे–धीरे मान्य होते रहते हैं और वही नियम/पद्धतियों में तबदील हो जाते हैं। आम तौर पर फिल्म की पटकथा, एक दृश्य के बाद दुसरा दृश्य इस तरह किसी उपन्यास ही की तरह क्रमबद्ध लिखी जाती है। जिसमें दृश्य–1, दृश्य–2 आदि क्रम हुआ करते हैं और पटकथा की उत्सुकता बनाये रखने के लिये जो आगे जाकर फिल्म में भी बरकरार रहेगी, दृश्यों को बुना जाता है।इस रचना प्रकार को क्रमबद्ध तरीका कहा जाता है।भारत में जो धारावाहिक या फिल्में बनती हैं वे किसी अपवाद को छोड इसी प्रकार में लिखी जाती हैं।

1.6.2 स्थापित तरीका –

यह प्रकार अपनी सुविधा के अनुसार पटकथा को और आसान बनाने के लिये किये गए प्रयोगों कि उपज है। इसमे पन्ने को दो हिस्सो में बांट कर एक हिस्से में दृश्य और दूसरे हिस्से में ध्वनि (VISUL - UDIO) लिखा जाता है। 'दृश्य' शीर्षक दिये हुए पन्ने के हिस्से में दृश्य कौनसा है लिखा जाता है। जिसमें प्रस्तुत दृश्य का पूरा वर्णन स्पष्ट शब्दों में होता है।जिससे फिल्म युनिट के निर्देशक, सह–निर्देशक, अभिनेता–अभिनेत्री, कॅमेरामन आदि सभी अंग के कलाकारों को अनायास ही सूचना मिल जाती है कि क्या करना है? पन्ने के दूसरे हिस्से में आवाज के संदर्भ में सूचना होती है। प्रस्तुत आवाज कलाकारों के संवाद कि भी हो सकती है और प्रस्तुत दृश्य के लिये आवश्यक अन्य ध्वनियां भी! जिससे मात्र ध्वनि पर काम करनेवाले कलाकारों को ही नही अपितु युनिट के सभी कलाकारों के लिये भी सूचना अनायास ही मिल जाती है। पटकथा के इस पद्धति से दृश्य और आवाज को जोड कर शॉट बन जाता है।

हमारे यहाँ यह तरीका विज्ञापन और वृत्तचित्र के लिये अपनाया जाता है। लेकिन विदेश में प्रस्तुत तरीका फिल्म के साथ–साथ तकरीबन सभी क्षेत्र की पटकथा के लिये अपनाया जाता है। विज्ञापन क्षेत्र में इस तरीके के लिये स्टोरी बोर्ड (STORY BOARD) शब्द प्रचलित है।

1.6.3 उदा. पटकथा लेखन का क्रमबद्ध तरीका –

'फिल्म – ख्वाब

दृश्य क्रमांक –**1**

एक्सटीरियर –

चंद्रपुर गाँव का घाट –

भोर का समय –

पात्र – फिल्म की नायिका –

लँडस्केप एवं नदी के साथ उगते हुए सूरज का एक शॉट। कैमेरा नदी की लहरों के साथ आगे बढ़ता है और एक लड़की के बहुत दूर के शॉट पर रुकता है। हम उसे उसके छाया में देखते हैं। वह अपने दोनों हाथों को जोड़कर प्रार्थना की मुद्रा में खड़ी है।

(किरण का परिचय करानेवाला थीम संगीत) वह नदी में आकर्षक गोता लगाती है।''[2]

कट टू

1.6.4 उदा.पटकथा लेखन का स्थापित तरीका –

दृश्य (Visual)	**आवाज /ध्वनि** (Audio)
नायक का घने जंगल में प्रवेश वह सावधानी से डरते हुए चल रहा है ..	जंगल के सन्नाटे की आवाज.. पेड–पत्तों की सरसराहट... किसी पंछी के पंखों का फडफडाना.. आदि डरावनी जंगली आवाजें... नायक – राधा....(आवाज देना..) आवाज की प्रतिध्वनि गुंजना ..

1.7 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न –

1. पटकथा के लिए सबसे ज्यादा जरूरी होता हैं ..... का होना।

   (अ) कहानी (ब) कैमेरा (क) निर्देशक (ड) संवाद

2. महाभारत के पटकथाकार थे ..... ।

   (अ) रामानंद सागर (ब) यश चोपड़ा (क) राही मासूम रजा (ड) सलीम खान

3. पट का अर्थ है ..... ।

   (अ) चित्रपट (ब) संख्या (क) परदा (ड) दर्शक

4. पटकथा किसी भी फिल्म की ..... होती है।

(अ) कहानी (ब) निर्देशक की सहाय्यक

(क) चरम सीमा (ड) नींव

5. फिल्म निर्देशक से पहले ..... की होती है।

(अ) निर्माता (ब) पटकथाकार (क) कॅमेरामन (ड) संवाद लेखक

6. भारत में पटकथा लेखन का स्थापित तरीका ..... के लिए अपनाया जाता है।

(अ) विज्ञापन और वृत्तचित्र (ब) फिल्म

(क) शॉर्ट फिल्म (ड) डॉक्यूमेंटरी

7. विदेश में पटकथा लेखन का स्थापित तरीका ..... के साथ-साथ तकरीबन सभी क्षेत्र की पटकथा के लिये अपनाया जाता है।

(अ) विज्ञापत और वृत्तचित्र (ब) स्टोरी बोर्ड

(क) शॉर्ट फिल्म (ड) डॉक्यूमेंटरी

8. विज्ञापन क्षेत्र में स्थापित तरीके के लिए ..... शब्द प्रचलित है।

(अ) विज्ञापन और वृत्तचित्र (ब) स्टोरी बोर्ड

(क) शॉर्ट फिल्म (ड) डॉक्यूमेंटरी

9. रचना के आधार पर पटकथा के ..... प्रकार होते हैं।

(अ) चार (ब) तीन (क) सात (ड) दो

10. फिल्मवाले ..... को प्रस्तावना, संघर्ष और समाधान इन तीन बिंदूओं पर परखते हैं।

(अ) विज्ञापन और वृत्तचित्र (ब) स्टोरी बोर्ड

(क) शॉर्ट फिल्म (ड) पटकथा

11. 'पटकथा' का धरोहर तत्त्व ..... है।

(अ) कहानी (ब) पटकथाकार (क) कॅमेरामन (ड) संवाद लेखक

12. मन्नू भण्डारी के कहानी पर बनी हिन्दी फिल्म का नाम है.....।

(क) कहानी (ब) रजनीगंधा (क) कालिया (ड) शोले

13. पटकथा शब्द 'कथा' और ..... इन शब्दों के संयोग से बना हुआ है।

(अ) चित्रपटा (ब) पट (क) परदा (ड) दर्श

14. बासु चटर्जी निर्देशित फिल्म का नाम ..... है।

(अ) कहानी (ब) रजनीगंधा (क) कालिया (ड) शोले

15. शोले फिल्म के पटकथाकार के नाम ..... है।

(अ) सलीम-जावेद (ब) राम-लक्ष्मण (क) राही मासूम रजा (ड) रमेश सिप्पी

1.8 फिल्मी शब्द, शब्दार्थ

1. Story Board = स्थापित तरीके से लिखी गई पटकथा
2. Aodio = आवाज
3. Screenplay = पटकथा
4. Visual = दृश्य

1.9 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1. (अ) कहानी
2. (क) राही मासूम रजा
3. (क) परदा
4. (ड) नींव
5. (ब) पटकथाकार

६. (अ) विज्ञापन और वृत्तचित्र

७. (ब) फिल्म

८. (ब) स्टोरी बोर्ड

९. (ड) दो

१०. (ड) पटकथा

११. (अ) कहानी

१२. (ब) रजनीगंधा

१३. (ब) पट

१४. (ब) रजनीगंधा

१५. (अ) सलीम-जावेद

1.10 सारांश

पटकथा शब्द 'कथा' और 'पट' इन शब्दों के संयोग से बना हुआ है। पटकथा लेखक मनोहर श्याम जोशी के शब्दों में पटकथा शब्द कथा और पट इन दो शब्दों के मेल से बना हुआ है। कथा का मतलब हैं- कहानी और पट का अर्थ होता है-परदा अर्थात् ऐसी कथा जो परदे पर दिखाई जाए। इसी के आधार पर हम व्याख्या कर सकते हैं कि 'जो कथा केवल फिल्म या धारावाहिक को छोटे या बड़े परदे पर दिखाने के लिए अनेक दृश्यों तथा फिल्माने के दर्जनों सूचनाओं के साथ लिखी गई हो-पटकथा है।

पटकथा से पहले होती है कथा। कथा से मतलब है'कहानी'। एक अच्छे प्रभावकारी पटकथा के लिए सख्त जरूरत होती है एक प्रभावशाली कहानी की। प्रस्तुत कहानी पढ़ते ही पाठक के दिलों-दिमाग पर छा

जाती है।एक कामयाब फिल्म के लिए सबसे पहली जरूरत होती है एक सशक्त कहानी की। कहानी की सशक्तता ही पूरे फिल्म की प्रथम नींव होती है। जैसे इस बात को युं कह सकते हैं कि तबीयत ठीक हो तो ही बॉडी बिल्डिंग संभव है।

पटकथा में लेखक जिन दृश्यों को लिखता है वही दृश्य निर्देशक कैमरा, अभिनेताओं के अभिनय से परिपूर्ण बनाकर,उसमें आवाज आदि मिलाकर, उसका संपादन कर निश्चित समय में बिठाकर पेश करता है। पटकथा को छोड़ कोई दृश्य नहीं फिल्माया जाता है। कहानी को समय के हिसाब से दृश्यों में तब्दील कर बारिकियों के साथ प्रस्तुत करना ही पटकथा लिखना है।

पटकथा के निश्चित तत्त्व कहानी और उपन्यास की तरह कही लिखित रूप में प्राप्त नहीं होते।लेकिन एक सुचारु ढंग के पटकथा के लिए कहानी, दृश्यमय बुनावट और संवाद ये तीन तत्त्व आवश्यक हो जाते हैं।

पटकथा में संघर्ष उत्पन्न करना और नायक द्वारा उसका समाधान प्रस्तुत करना ही पटकथा का द्वंद्व होता है। जिससे पटकथा में जान आ जाती है और फिल्म कामयाब हो जाती है। फिल्मवाले पटकथा को तीन बिंदूओं पर परखते हैं, वो है -प्रस्तावना, संघर्ष और समाधान! रचना पद्धति के आधार पर पटकथा के दो प्रकार किए जा सकते हैं-एक है क्रमबद्ध तरीका और दूसरा है स्थापित तरीका।

1.11 स्वाध्याय

1. कथा के महत्त्व को रेखांकित करते हुए पटकथा को स्पष्ट कीजिए।
2. पटकथा के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।
3. कहानी के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।
4. पटकथा के तत्त्व स्पष्ट कीजिए।
5. रचना के आधार पर पटकथा के प्रकार स्पष्ट कीजिए।

1.12 क्षेत्रीय कार्य

1. किसी नाटक को पटकथा में रूपांतरित कीजिए।
2. किसी लघु कहानी पर पटकथा तैयार कीजिए।

1.13 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

निम्नलिखित पटकथाएं पढिए-

'लगान', 'शोले', 'पुष्पक', 'रजनीगंधा'

1.14 संदर्भ –

1. पटकथा लेखन एक परिचय - लेखक मनोहर श्याम जोशी
2. फिल्म ख्वाब की ऑनलाईन स्क्रीप्ट, पेज नं-1

❑❑❑

इकाई–2
पटकथा लेखन, संवाद लेखन, रूपांतरण, दृश्यिकरण/शूटिंग स्क्रिप्ट

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 विषय विवेचन

2.3.1 पटकथा लेखन

2.3.2 पटकथा लेखन की कथा/विषयवस्तु

2.3.3 पटकथा लेखन स्वरूप

2.4 संवाद लेखन

2.4.1 सामान्य संवाद

2.4.2 विशेष संवाद लेखन

2.4.3 संवाद

2.5 रूपांतरण

2.5.1 कहानी का रूपांतरण

2.5.2 उपन्यास का रूपांतरण

2.5.3 फिल्म का रूपांतरण/रीमेक

2.6 दृश्यिकरण/शूटिंग स्क्रिप्ट

2.6.1 शूटिंग स्क्रिप्ट

2.6.2 पटकथा और शूटिंग स्क्रिप्ट फ़र्क

2.6.3 उदा, लगान फिल्म का दृश्य

2.6.4 प्रस्तुत दृश्य का विश्लेषण

2.7 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

2.8 फिल्मी शब्द, शब्दार्थ

2.9 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

2.10 सारांश

2.11 स्वाध्याय

2.12 क्षेत्रीय कार्य

2.13 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

2.14 संदर्भ

2.1 उद्देश्य –

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप –

1. फिल्म की पटकथा लेखन से परिचित हो जाएंगे।
2. पटकथा के साथ साथ संवाद लेखन से परिचित हो जाएंगे।
3. साहित्य कृतियों का फिल्मों में रूपांतरण प्रक्रिया से परिचित हो जाएंगे।
4. दृश्यिकरण की स्क्रिप्ट को जान पाएंगे।
5. इस क्षेत्र से जुड़े हुए रोजगार के अवसरों से परिचित हो जाएंगे।

2.2 प्रस्तावना –

पटकथा के स्वरूप को देखने के पश्चात प्रत्यक्ष रूप में पटकथा लेखन किस तरह से किया जाता है तथा पटकथा के लिखित स्वरूप को देखने की जिज्ञासा उत्पन्न होना स्वाभाविक बात है। किन तथ्यों के आधार पर पटकथा को पन्नों पर उतारा जाता है और निर्देशक उस दृश्य को चित्रित कैसे करता है? आदि जानकारी की चाहत होना स्वाभाविक है। साथ ही रूपांतरण क्या होता है? क्या रूपांतरण जरूरी है? रूपांतरण से होनेवाला फायदा/नुकसान, किन साहित्य कृतियों का रूपांतरण होता है? आदि जानकारी और साथ ही प्रत्यक्ष शूटिंग स्क्रिप्ट कैसी होती है? वह कौन लिखता है? पटकथा का और उसका संबंध किस हद तक होता है? आदि जानकारी प्रस्तुत पाठों से आप प्राप्त कर सकते हैं।

इस संदर्भ में पूरी जानकारी तो आप जान जाएंगे लेकिन जैसे किसी कार को चलानी हो तो मात्र थेयरी पढ़कर चला नहीं सकते। ठीक इसी तरह यहाँ मैं कितनी भी गहरी जानकारी दे दूँ आप प्रत्यक्ष रूप से जब तक फिल्म क्षेत्र से नहीं जुडते तब तक प्रॅक्टिकल ज्ञान से वंचित ही रहेंगे। लेकिन इस तथ्य के नींव से लेकर चोटी तक का सफर देखकर हम इतना जरूर जान पाएंगे कि आम छात्र के लिए इस क्षेत्र में प्रवेश पाने की कोई गुंजाईश है या नहीं?

यहाँ हम जिस पाठ का अध्ययन करेंगे वह पाठ है 'पटकथा लेखन, संवाद लेखन, किसी साहित्य कृति का फिल्म तथा लघुपट में रूपांतरण और दृश्यिकरण तथा प्रत्यक्ष शूटिंग स्क्रिप्ट कैसी होती है?

पटकथा लेखन है क्या चीज? अगर वह है तो किस तरह की होनी चाहिए और अगर नहीं होती है तो क्या होता है? आदि अनेक शंकाओं का समाधान प्रस्तुत करने की कोशिश करेंगे। इस पाठ को पढ़ने से पहले बस इतना जान लें कि पटकथा लेखन याने किसी बिल्डिंग का इंजीनियर/आर्किट्रेक्चरर द्वारा बनाया गया स्ट्रक्चर, जिसके आधार पर महीनों, सालों तक ईंट, पत्थर जोड़ कर कोई बिल्डिंग बनती है। यह बात और है कि वह बिल्डिंग बनती कैसी है?

2.3 विषय विवेचन –

2.3.1 पटकथा लेखन (Screenplay Writing)

पटकथा स्वरूप से हम इतना तो जान पाएं हैं कि 'जो कथा केवल फिल्म या धारावाहिक को छोटे या बड़े परदे पर दिखाने के लिए अनेक दृश्यों तथा फिल्माने के दर्जनों सूचनाओं के साथ लिखी गई हो पटकथा है। अर्थात ऐसी कथा जो परदे पर दिखाई जाएं। या जो परदे पर दिखाने के लिए ही लिखी जाए 'पटकथा' है।अंग्रेजी में इसे Screenplay कहते हैं।

पटकथा ढाई–तीन घंटे के फिल्म की भी हो सकती है और 5 मिनट के शॉर्ट फिल्म की भी! दो–एक मिनट के विज्ञापन की भी हो सकती है और दो साल चलनेवाली धारावाहिक की भी! लेकिन उसे अगर पटकथा लेखन के तरीके से नहीं लिखा गया तो वह सशक्त पटकथा होने के बावजूद व्यर्थ हो जाती है। फिल्म क्षेत्र के बाजार में उसका मोल शून्य हो जाता है। कोई निर्माता या निर्देशक उसे न सुनता है न देखता है। इसलिए पटकथा लेखन के गुर को जानना आवश्यक हो जाता है।

2.3.2 पटकथा लेखन की कथा/विषयवस्तु –

किसी भी कहानी को जब कोई सामान्य पाठक पढ़ता है तो उसके मन:चक्षुओं के सामने उसकी कल्पना के अनुसार पात्रों का निर्माण मन–मस्तिष्क में होता है। ठीक उसी तरह पटकथा लेखन करते समय पटकथाकार के कल्पना से पात्रों का निर्माण होता है।बस फर्क इतना रहता कि सामान्य पाठक अपनी कल्पना में उगे हुए पात्र अपने तक सीमित रखता है और पटकथाकार उन्हीं पात्रों को पकड़कर कागज पर उतारता है।फिर किसी अभिनेता/अभिनेत्री के माध्यम से निर्देशक उन पात्रों को जिंदा करता है। इस तथ्य को तो हम देख ही चूकें हैं कि एक अच्छे प्रभावकारी पटकथा के लिए सख्त जरूरत होती है एक प्रभावशाली कहानी की।प्रस्तुत कहानी पढ़ते ही पाठक के दिलों–दिमाग पर छा जानी चाहिए। क्योंकि कहानी के स्ट्रक्चर पर ही पटकथा का खिलना, फूलना सफल होना निर्भर रहता है। संक्षेप में कहें तो कहानी का मतलब है एक घर और जैसे इंटेरियर डिजाइनर उस घर को डिजाइन कर उसका विकास करता है। ठीक उसी तरह पटकथाकार प्रस्तुत कहानी को घर के हिसाब से डिजाइन कर रहने लायक या देखने लायक बनाता है। इसलिए एक कामयाब फिल्म के लिए सबसे पहली जरूरत होती है एक सशक्त कहानी की कहानी की सशक्तता ही पूरे फिल्म की प्रथम नींव होती है। जैसे इस बात को युं कह सकते हैं कि तबीयत ठिक हो तो ही बॉडी बिल्डिंग संभव है। क्योंकि हम कहानी ही तो दिखाने जा रहे हैं। अगर उसमें रोचकता, सशक्तता, मूल्य, परिणाम आदि नहीं है तो वह किस काम की? भले ही वह अत्याधुनिक कैमरा से शूट करें या बड़े कलाकारों को लेकर निर्माण करें किसी काम की नहीं है। इसलिए सशक्त कहानी पटकथा या फिल्म की पहली जरूरत है।

2.3.3 पटकथा लेखन

किसी भी फिल्म की कामयाबी में पटकथा लेखन नींव का काम करती है। जिस तरह पक्की नींव बिल्डिंग को मजबूती प्रदान करती है ठीक उसी तरह एक सशक्त पटकथा फिल्म को क्योंकि पटकथा में

लेखक जिन दृश्यों को लिखता है उन्हीं दृश्यों को निर्देशक कैमरामन के कौशल, अभिनेताओं के अभिनय से परिपूर्ण बनाकर, उसमें बैक ग्राउंड म्यूजिक, आवाज आदि मिलाकर, उसका संपादन कर निश्चित समय में बिठाकर पेश करता है। पटकथा को छोड़ कोई दृश्य नहीं फिल्माया जाता है।

संक्षिप्त कथा/कहानी का विकास कर कहानी की शुरुवात, मध्य, अंत तय करते हुए उसमें संघर्ष, द्वंद्व उत्पन्न कर कहानी के समय के हिसाब से उनमें लाए जानेवाले दृश्यों को पटकथा के तरीके से कागज पर उतारना तथा कहानी को समय के हिसाब से दृश्यों में तब्दील कर बारिकियों के साथ प्रस्तुत करना ही पटकथा लिखना है।

आम तौर पर लेखक कहानी या उपन्यास लिखते समय यह बातें जानबूझकर याद नहीं रखता कि रेखांकित पात्र को कब, कैसे, कहाँ, किसके साथ, किन कपड़ों या सुविधा, गैरसुविधाओं के साथ पेश करना है। वह तो लिखने की होड में अपने आप लिखता जाता है और ये बातें अपने आप उसमें आ जाती हैं। लेकिन पटकथा लिखते समय लेखक को इन बातों का मात्र ध्यान ही नहीं रखना पड़ता अपितु जानबूझकर इन चीजों को रखना ही पड़ता है।

इसी को पटकथा लेखन कहते हैं कि प्रस्तुत पात्र कब, कैसे, कहाँ, किसके साथ, किन कपड़ों या सुविधा, गैरसुविधाओं के साथ वहाँ क्रियाकलाप करता है। साथ ही वह क्या, किससे, क्यों, कैसे बोलता है? दिन में, रात में, शाम को, सुबह? क्योंकि लेखक को अन्य साहित्य के विधाओं में कल्पना कर लिखना मात्र होता है। उसकी पात्र या प्रसंग की कल्पना पढ़नेवाला पाठक अपनी दिमाग के अनुसार करता रहता है। लेकिन पटकथा लिखते समय ध्यान रखना पड़ता है कि उस पात्र या प्रसंग को परदे पर दिखाना होता है। इसलिए ध्यान रखते हुए होशो-हवास में सारी बारीकियों को लिखना पड़ता है। क्योंकि पटकथा लेखक जो लिखता है वही अंतिम होता है। उसने पात्र का जो रूप निश्चित किया है या प्रसंग को जिस तरह दृश्यित करने की सूचना लिखी है वही परदे पर दिखाई जाती है।

उदा-फिल्म 'डॉन' में अमिताभ ने दो किरदार (डबल रोल) निभाएं हैं। एक गैंगस्टर 'डॉन' और दूसरा सीधा साधा इंसान 'विजय'का। लेकिन परदे पर जब हम देखते हैं तब हम दोनों को एक होने के बावजूद अलग-अलग महसूस करते हैं। 'डॉन' का रहन-सहन, चलना-बोलना, व्यवहार करना, क्रूरता, पुलिस या किसी के भी गिरफ्त से बच के निकल जाकर अपने चतुर होने का दाखिला करनी के आधार पर देना आदि सब कुछ अचंबित कर देता है और इसी समय उसी अमिताभ को हम विजय जैसे सामान्य इंसान के रूप में देखतें हैं तो उसका रहन-सहन, चलने -बोलने का ढंग, व्यवहार करना, पुलिस से दूर रहना, पान चबाते-थूकते हुए बात करना तथा किसी और के बच्चों के हिफाजत के ऐवज में अपने आप को डी.एस.पी के कहने पर 'डॉन' बनकर आग में झोंकना आदि पटकथा के आधार पर दिखाया गया है। जहां दर्शक दोनों को अलग -अलग महसूस कर विजय के पक्षधर हो जाते हैं। यह सब पटकथाकार के लेखनी का कमाल है कि वो दोनों पात्रों को अलग अलग दिखाने और महसुस कराने में कामयाब रहें हैं।

एक सशक्त पटकथा लेखक फिल्माएं जानेवाले प्रस्तुत दृश्य को कैसे दृश्याए जाना चाहिए की सभी सूचनाओं से पटकथा को युक्त बनाता है। यह बात और है कि पात्र, समय, संवाद, दिन/रात, वक्त आदि तथ्यों को छोड़ पटकथाकार के सभी सूचनाओं का पालन बहुत बार निर्देशक करते हैं, मानते ही हैं ऐसी बात नहीं है। कभी कभी वे इन तथ्यों में भी अंशत: या पूर्ण बदलाव करते हैं। क्योंकि फिल्म मात्र पटकथाकार की ही नहीं अपितु निर्देशक के नजरिए से भी बनती है। लेकिन ऐसा बहुत कम बार होता है। इसका मतलब यह नहीं होता कि वह पटकथाकार की सूचनाओं को नजर अंदाज करता है।बल्कि वह उन्हीं सूचनाओं को आधार बनाकर उनको अपने ढंग, कल्पना तथा उस दृश्य के साथ कोई सूचक दृश्य निर्माण कर उस दृश्य की सुंदरता को, प्रभावात्मकता को निखारता है। मैं तो इस प्रसंग को इस तरह देखता हूँ कि जो बात पटकथाकार के नजरों से छूट जाती है, उसकी पूर्तता निर्देशक की नजर करती है।पटकथाकार को इसमें आपत्ति नहीं होती।

संक्षेप में कहें तो अनेक लोग जब कोई कहानी सिर्फ सुनते या पढ़ते हैं तो उनके मन:चक्षुओं के सामने एक ही कहानी के पात्र अलग अलग कल्पना के जरिए आकार लेते हैं। वे सभी पात्र एक से नहीं हो सकते। लेकिन कोई पटकथाकार उसी कहानी को सुनकर या पढ़कर उसके दिमाग में उसकी कल्पना के आधार पर आकार लेनेवाले पात्र को पटकथा में उतारता है। वह तय करता है कि उस पात्र के कपड़े, व्यक्तित्त्व, उसके कार्यकलाप, संवाद, भाषा आदि क्या होने चाहिए। तब जाकर वह पात्र जब किसी अभिनेता के माध्यम से हमारे सामने प्रस्तुत होता है तो हम उसी पात्र को हमारे दिमाग में उगे हुए पात्र को हटाकर पक्का बिठाते हैं।

उदा. सोच लीजिए शोले के गब्बरसिंग का पात्र कहते हैं कि पहले डैनी डेंजगोप्पा को सामने रखकर लिखा गया था। लेकिन डैनी जी तब उपलब्ध नहीं हो सके और इत्तिफ़ाक से वह पात्र अमजदजी को मिला।और फिल्म में धर्मेन्द्र, संजीवकुमार, अमिताभ जैसे सुपरस्टारों के होने के बावजूद अमजदजी ने उस पात्र में इस तरह जान भर ली कि आज हम अमजदजी के अतिरिक्त गब्बर के लिए किसी और को सोच भी नहीं सकते। इसका सारा श्रेय पटकथाकार सलीम-जावेद को जाता है कि उन्होंने इस तरह के सशक्त पात्र का निर्माण किया जो आज भी रामगढ़ में होगा का एहसास दिलाता है। साथ ही रामगढ़ जैसे पहाड़ी इलाका कि जहाँ डाकुओं का होना स्वाभाविक माना जाएगा। इस फिल्म की एक और विशेषता यह है कि इस फिल्म के लिए रामगढ़ नाम के छोटेसे ग्राम का निर्माण कला निर्देशक ने किया था। जो रामगढ़ हम शोले में देखते हैं वह गाँव का सेट है गाँव नहीं। (सुनते हैं कि आज उस सेट का रूपांतर गाँव में हो गया है।)

मान लीजिए यह अगर उपन्यास होता तो हर पाठक के दिमाग में गब्बर का रूप अलग-अलग होता। गब्बर या अन्य पात्रों का क्रिया-कलाप, रहन-सहन, भाषा, कपड़े आदि सबकुछ पटकथाकार के कल्पना कि उपज है। साथ ही किस दृश्य के बाद कौनसा दृश्य होना चाहिए, फ़्लैश बैक, दर्शकों की उत्सुकता बनाए रखने के लिए संघर्ष का निर्माण आदि सबकुछ पटकथाकार की देन होती है।

कहानी को दृश्यों में बांटते वक्त पटकथाकार उसे एक के बाद एक रखकर शृंखला तैयार करता है। उस शृंखला में फिल्म के पहले दृश्य से लेकर अंतिम दृश्य तक नंबर डाले जाते हैं जिसका पालन निर्देशक,

संपादनकार (Editor) को करना होता है। इसलिए कहना उचित ही होगा कि किसी फिल्म का पहला नायक, विश्वकर्मा अगर किसी को माना जाए तो वह कहानी लेखक तथा पटकथाकार ही होता है।

जो फिल्में कहानी के जरूरत के मुताबिक पात्रों का चयन कर बनाई गई हैं वे हमेशा कामयाब रही हैं। क्योंकि भारतीय जनमानस का स्वभाव फिल्म में कौन काम कर रहा है कि अपेक्षा कहानी सुनने-देखने की ओर ज्यादा झुकता है। उसका परिणाम भी उनपर सालों-साल रहता है। यह बात और है कि फिल्म में काम करनेवाले कलाकार फिल्म में किरदार निभाने के कारण रातोंरात स्टार बन जाते हैं। जनसामान्य उसी किरदार के चेहरे को याद रखने के कारण किरदार निभानेवाला व्यक्ति स्टार बन जाता है और उस किरदार को लिखनेवाला पटकथा/कहानीकार अज्ञात! लेकिन फिर भी आज की तारीख में फिल्म इंडस्ट्री में पटकथाकार का महत्त्व कायम है। यह तो आप इकाई-1 में देखही चुके हैं फिर भी-

किसी दृश्य को फिल्माने से पहले प्रस्तुत दृश्य को पटकथा में क्रमबद्ध या स्थापित तरीके से लिखा जाता है।

उदा.पटकथा लेखन का स्थापित तरीका -

दृश्य (Visual)	**आवाज /ध्वनि** (Audio)
नायक का घने जंगल में प्रवेश वह सावधानी से डरते हुए चल रहा है ..	जंगल के सन्नाटे की आवाज.. पेड-पत्तों की सरसराहट... किसी पंछी के पंखो का फडफडाना.. नायक - राधा....(आवाज देना..) आवाज की प्रतिध्वनि गुंजना ..

2.4 संवाद लेखन

संवाद का मतलब है आपसी वार्तालाप! अंग्रेजी में इसे 'डायलॉग' कहा जाता है। संवाद दो व्यक्तियों के बीच भी हो सकता है और एक व्यक्ति का अनेक व्यक्तियों से भी किसी व्यक्ति का खुद से भी संवाद होता है जिसे 'स्वगत कथन' कहा जाता है। फिल्म और नाटक में पात्र के मन में चलनेवाले विचारों को स्वगत कथन के आधार पर दर्शकों तक पहुंचाया जाता है। फिल्म में कार्यकलाप करनेवाले पात्रों के बीच होनेवाले वार्तालाप को लिखना संवाद लेखन कहा जाता है। मूकपट के बाद बोलपट का विकास हुआ। फिल्मों में वार्तालाप आने के बाद पटकथा में संवाद का होना निहायत जरुरी हो गया। पटकथा का विकास पात्रों पर चित्रित किये गये दृश्यों से होता है। लेकिन इन दृश्यों में कहानी को आगे बढाने के लिये पात्रों के बीच संवाद का होना निहायत जरुरी हो जाता है। संवाद लेखन दो तरीके से किया जाता है।

2.4.1 सामान्य संवाद

जब पटकथाकार फिल्म के दृश्य के अनुसार तथा दृश्य में भाग लेनेवाले पात्रों के अनुसार जीवन के रोजमर्रा के संवाद लिखता है जो कहानी को आगे बढ़ाते हैं तब वे सामान्य संवाद होते हैं। वे संवाद कहानी

के मांग के अनुसार पटकथाकर आसानी से लिख लेता है या वे कल्पक पटकथाकार के दिमाग में अपने आप उत्पन्न हो जाते हैं।

संवाद का उद्देश्य कहानी को सरल ढंग से आगे ले जाना होता है। सामान्य संवाद कहानी जैसे जैसे आगे बढ़ती रहती है वैसे संवाद भी अनायास ही जुडते चले आते हैं। प्रतिभा संपन्न लेखक के लिए ऐसे संवाद लिखना कोई विशेष बात नहीं होती।

2.4.2 विशेष संवाद लेखन

पटकथा निर्माण के वक्त बहुत बार पटकथाकार के द्वारा लिखे गये संवाद ही फिल्म के लिये काफी होते हैं। लेकिन किसी निर्देशक, निर्माता को अगर अपनी फिल्म को और अधिक असरदार बनानी है तो वह संवाद लिखनेवाले विशेष साहित्यकार या लेखक की नियुक्ति कर किसी पटकथाकार द्वारा लिखी गई पटकथा उसे सौंप देता है। प्रस्तुत लेखक उस पटकथा को पढकर, अध्ययन कर अपने अनुभव के आधार पर असरदार शब्दों का उपयोग कर कम से कम शब्दों में ज्यादा आशय समेटकर शेरो-शायरी, यमक, अतिशयोक्ति, रूपक, आदि अलंकारों के आधार पर इस तरह संवादों को लिखता है कि दर्शक,श्रोता तृप्त हो जाते हैं। सिनेमा हॉल दर्शकों के तालियाँ, वाह-वाह से गूंज उठता है।

इसे आप पहले से बनी हुई दाल को तड़का देना भी कह सकते हैं। लेकिन ये तड़का संयम के साथ देना जरूरी हो जाता है नहीं तो दाल जल जाने का खतरा भी होता है। खासकर ऐसे विशेष संवाद फिल्म में काम करनेवाले प्रसिद्ध कलाकार हों तो उनके लिए या उनके मांग के अनुसार लिखवाए जाते हैं।

जो भी हो असरदार संवाद किसी भी फिल्म को कामयाब बनाने में इस तरह तड़का देने का काम करती हैं कि सालोंसाल प्रस्तुत संवाद जन-मानस के व्यवहार में उपयोग में लाए जाते है। प्रसिद्ध अभिनेता द्वारा कहे गए संवाद खास कर युवा दर्शकों को इस तरह लुभाती है कि वे अपने रोजमर्रा के जीवन में उसका उपयोग कर अपना काम चलाते हैं। फिल्म में संवादों का महत्त्व इतना ज्यादा है कि मात्र संवाद देखने के लिए आनेवाले अलग दर्शक भी होते हैं। सशक्त संवाद जनमानस के मन पर हमेशा राज करते हैं। ऐसे विशेष संवाद लिखनेवाले लेखक का तजुर्बा बहुत ही बड़ा और दर्दनाक होने के साथ साथ एक शब्द या वाक्य में पूरे दृश्य को या आगे के सारे संवादों को निष्प्रभ करने की ताकत होती है। उन संवादों में जीवन का फलसफा भी झलकता है।

उदा. राजेश खन्ना का - 'ये पब्लिक है सब जानती है।' फिल्म - 'रोटी'

अमिताभ का - 'मै आज भी फेंके हुए पैसे नहीं उठाता।' फिल्म- 'दीवार'

शशि कपूर का - 'मेरे पास माँ है' फिल्म- 'दीवार'

अमजद खान का - 'कितने आदमी थे।' फिल्म - 'शोले'

सलमान खान का – 'मैंने एक बार कमेंटमेंट कर दी तो मै अपने आप की भी नहीं सुनता', फिल्म– 'वांटेड' आदि संवाद लोकप्रिय हैं।

हिन्दी फिल्म इंडस्ट्री में सलीम खान, जावेद अख्तर, कादरखान, गुलजार संवाद के बेताज बादशहा माने जाते हैं।

'शोले', 'दीवार', 'शान', 'जंजीर' आदि फिल्म के संवाद आज भी प्रयोग में लाये जाते है। इसलिये संवाद आवश्यक तत्त्व हो जाता है।

2.5 रूपांतरण

'रूपांतरण' शब्द का अर्थ – रूपांतरण शब्द 'रूप' और 'अंतरण' इन दो शब्दों के संधि से बना हुआ है। इसके लिए अनुकूलन और समायोजन शब्द भी प्रचलित हैं। अंग्रेजी में इसे adaptation कहते हैं। रूपांतरण का मतलब है किसी कहानी, लघु कहानी, नाटक, उपन्यास, एकांकी, महाकाव्य, खंडकाव्य आदि साहित्य के अनेक विधाओं में प्रकाशित रचना को फिल्म के पटकथा में परिवर्तित करना। साथ ही किसी अन्य देश, राष्ट्र, समूह, जातियाँ, भाषाओं में बनी और कामयाब होनेवाले फिल्मों को अपनी भाषा, अपने उस भाषाओं के अभिनेताओं और देश–काल–वातावरण में ढालकर फिर से बनाना। लेकिन फिल्मों के रूपांतरण को रीमेक भी कहा जाता है।

2.5.1 कहानी का रूपांतरण –

कहानी किसी एक घटना, मानवीय मूल्य या किसी एक परिणाम को लेकर चलती है। कहानी की व्याप्ति भी एक बैठक में पढ़ ली जाए इतने कम समय की होती है। किसी कहानी पर ढाई–तीन घंटे की फिल्म बनाना मुश्किल काम है। क्योंकि पटकथाकार जब उस पर फिल्म की पटकथा लिखता है तब उसे प्रस्तुत कहानी के मात्र मूल बिंब, तत्त्व, मूल्य या साधारण ढांचा लेकर पूरी की पूरी पटकथा अपने कल्पना से लिखनी पड़ती है। ऐसे समय में कहानी का मूल तत्त्वही अलग होने की संभावना ज्यादा रहती है। क्योंकि कहानी के दायरे को कब तक और कहाँ तक खिंच पाएगा? इसलिए कहानी का फिल्म में रूपांतरण ज्यादा नहीं होता। कहानी और कहानी से भी छोटी लघु कहानी पर लघुपट आराम से बन सकता है।

सत्यजित राय ने प्रेमचंद की कहानी 'सदगति' पर टेलीफ़िल्म बनाई थी। फणीश्वरनाथ रेणु के 'मारे गए गुलफाम' पर 'तीसरी कसम' नाम की फिल्म बनी थी। लेकिन इस बात को भी जान लें कि टेलीफ़िल्म और आज के शॉर्ट फिल्म में बहुत अंतर है। इसलिए किसी प्रसिद्ध कहानी को फिल्म में रूपांतरण करने की प्रक्रिया बहुत कम नजर आती है।

2.5.2 उपन्यास का रूपांतरण

भारत ही नहीं अपितु विश्व के फिल्म इंडस्ट्री में उपन्यास का रूपांतरण फिल्म में करने की प्रक्रिया शुरू से होती आई है। उपन्यास लिखते समय त्तत्वनिष्ठ लेखक कभी यह नहीं सोचता कि आगे जाकर इस पर कोई फिल्म बनेगी। तभी वह उस उपन्यास को पूरा न्याय दे सकता है। किसी कल्पना, वास्तव घटना या

किसी के जीवनी से प्रभावित होकर उपन्यास लिखें जाते हैं या अन्य अनेक कारणों से भी उपन्यास लिखे जाते हैं। प्रस्तुत उपन्यास की प्रसिद्धी को देखकर जब उसका फिल्म में रूपांतरण किया जाता है तब पटकथाकार के सामने यह सवाल उठ खड़ा होता है कि उपन्यास के किन प्रसंगों को दृश्य में परिवर्तन करें और किसे छोड़ें? क्योंकि उपन्यास में चित्रित सभी प्रसंग और वातावरण को दृश्यों में ढालना नामुमकिन होता है। ऐसे समय में उपन्यास का ढांचा, उद्देश्य को कहीं भी न बिगाड़ते हुए फिल्म के पटकथा में रूपांतरण करना पटकथाकार के लिए तलवार के धार पर चलना होता है।

कहानी रूपांतरण में कहानी खिंच नहीं सकते और उपन्यास रूपांतरण में उपन्यास की कथा/प्रसंगों को घटा नहीं सकते ऐसी समस्या निर्माण हो जाती है। ऐसे समय में अगर कोई मँजा हुआ पटकथाकार या खुद लेखक अगर पटकथा लिखता है तो वही प्रस्तुत रूपांतरण को न्याय दे सकता है। भारत के हिन्दी फिल्म इंडस्ट्री में अनेक उपन्यासों का रूपांतरण हुआ है। लेकिन जिसमें खुद लेखक शामिल नही वह फिल्में ऐसी बनी कि जिससे न दर्शक खुश हुआ न मूल लेखक।

प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान', 'निर्मला', 'गबन' इन उपन्यासों का, चंद्रधर शर्मा गुलेरी के 'उसने कहा था' कहानी का, भगवती चरण वर्मा के 'चित्रलेखा' का, सुबोध घोष का उपन्यास 'सुजाता', आर के नारायण का उपन्यास 'गाईड', विमल मित्र का उपन्यास 'साहब, बीवी और गुलाम' और हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के अनेक उपन्यासों का फिल्म में रूपांतरण किया गया है।

आधुनिक काल में चेतन भगत के उपन्यासों पर 'थ्री इडियट्स', 'टू स्टेटस', 'हाफ गर्ल फ्रेंड' और 'काई पो छे' जैसी कामयाब फिल्में भी बनी है। मराठी के अनेक उपन्यासों पर भी काफी फिल्में बनी हुई है। जैसे देवदत्त पाटील के 'बानू' उपन्यास पर 'जख्मी वाघीण', आण्णा भाऊ साठे के प्रसिद्ध उपन्यास 'फकिरा' आदि.

2.5.3 फिल्म का रूपांतरण/रीमेक –

भारत की फिल्म इंडस्ट्री हिन्दी के साथ-साथ अनेक भाषाओं के फिल्मों के निर्माण से बनी हुई है। भारत बहुभाषिक देश होने के कारण यहाँ के हर राज्य की अपनी-अपनी अलग सशक्त फिल्म इंडस्ट्री है। प्रस्तुत राज्य के भाषा में बनी फिल्मों को चाव से देखने के साथ साथ यहाँ की जनता हिन्दी और अंग्रेजी फिल्में उतने ही चाव से देखती रहती है। कहना उचित होगा कि अन्य राज्यों के फिल्मों के साथ साथ हर राज्य में हिन्दी फिल्में देखना दर्शक ज्यादा पसंद करते हैं। इसलिए अन्य राज्यों की सशक्त फिल्मों के बावजूद हिन्दी फिल्म इंडस्ट्री इन सबका प्रतिनिधित्त्व करते हुए परिलक्षित होती है। पहले पहल हिन्दी फिल्म इंडस्ट्री ही भारत का प्रमुख चेहरा थी। बावजूद इसके की भारत में पहली फिल्म महाराष्ट्र के मराठी इंसान दादासाहब फाल्के ने बनाई थी। लेकिन हिन्दी राष्ट्र भाषा होने के साथ साथ अन्य राज्यों में सबसे बड़ी संपर्क भाषा होने के कारण अनायास ही हिन्दी में बनी फिल्मों को बहुत बड़ा बाजार उपलब्ध हुआ। फलत: आज भारत की फिल्में यानि हिंदी फिल्में ऐसा चित्र निर्माण हो गया है।

नब्बे की दशक में दूरदर्शन का घर घर पहुंचना और दूरदर्शन के साथ साथ अन्य चैनल्स के शुरू हो जाने के पश्चात दर्शकों के ज्ञान के चक्षु खुलने लगे की हिन्दी की कौनसी प्रसिद्ध फिल्म किस प्रादेशिक राज्य भाषा के फिल्म का रीमेक है! ज्यादातर हिन्दी की प्रसिद्ध फिल्में दक्षिण के राज्यों के फिल्मों के रीमेक, रूपांतरण ही है। जैसे अनिल कपूर अभिनित 'ईश्वर', विनोद खन्ना अभिनित 'दयावान'। ये दोनों फिल्मे कमल हसन अभिनित दक्षिण के फिल्मों के रीमेक हैं। ऐसे कई प्रसिद्ध फिल्में हैं जो किसी न किसी भाषा में बने हुए फिल्मों के रीमेक हैं।

हिन्दी की पुरानी फिल्म 'प्यार किए जा' का अंशत: बदलाव के साथ रूपांतरण कर मराठी के महेश कोठारे ने मराठी में 'धूम धड़ाका' बनाया जो दर्शकों ने इतनी पसंद की कि दो तीन दशक तक महेश कोठारे के इसी तरह की फिल्में आराम से चलती रही।

फिल्मों का रूपांतरण/रीमेक आज के दौर में कम होता हुआ नजर आता है। क्योंकि किसी भाषा का निर्माता आज के दौर में फिल्म की सिर्फ भाषा बदलकर एक ही समय में अनेक भाषाओं में फिल्म प्रस्तुत करता हुआ परिलक्षित होता है। यहाँ अनुवादक के लिए नया रोजगार उपलब्ध हुआ है।

2.6 दृश्यिकरण/शूटिंग स्क्रिप्ट

2.6.1 शूटिंग स्क्रिप्ट

एक अच्छी पटकथा हाथ में आने के बाद हर दृश्य को पढ़कर निर्देशक के दिमाग में चक्र घूमने लगता है और हर दृश्य को किस तरह चित्रित करना है का ताना बाना उसके दिमाग में आकार लेने लगता है। यही कल्पनाएं जब कागज पर उतरती है तब 'शूटिंग स्क्रिप्ट' का जन्म होता है।पटकथा लेखक द्वारा लिखे गए दृश्यों को प्रत्यक्ष रूप में चित्रित कर वे परदे पर किस तरह दिखेंगे की सोच को बारीकियों के साथ लिखना 'शूटिंग स्क्रिप्ट' कह सकते हैं।

इसमें कभी-कभी कोई निर्देशक कॅमेरामन से विचार विनिमय कर कैमरा एँगल्स, लाँग-शॉट, क्लोज-अप, शोल्डर-शॉट आदि के बारे में भी लिखित रूप में दस्तावेज बनाता है। कल्पना से प्रत्यक्ष फिल्म निर्माण तक का सफर होता है शूटिंग स्क्रिप्ट्। इसे आप निर्देशक तथा कॅमेरामन के नजरों से बनाया गया किसी पटकथा का दूसरा रूप या मोडिफ़ाई की गई पटकथा भी कह सकते हैं। शूटिंग स्क्रिप्ट के कारण फिल्म बनने से पहले लिखित फिल्म हम पढ़ते हैं और अपनी कल्पना से उसे देख भी सकते हैं। इससे समय और रुपयों की बचत होने के साथ साथ हो सकनेवाली गलतियाँ, अनावश्यक शॉट्स आदि महत्त्वपूर्ण तथ्यों से भी छुटकारा मिल जाता है। क्रमबद्ध शूटिंग स्क्रिप्ट लिखना एक सच्चे निर्देशक की पहचान है। वह शूटिंग के अन्य तांत्रिक बाजुओं को देखते हुए अन्य विभाग जैसे कॅमेरामन, साउंड, लाइट्स, प्रमुख व्यक्तिरेखाओं (अभिनेताओं/अभिनेत्री) से भी विचार-विनिमय कर शूटिंग स्क्रिप्ट लिखता है। यह बात और है कि प्रत्यक्ष शूटिंग के स्थान पर किसी दृश्य में लिखित शूटिंग स्क्रिप्ट मे लिखे गए तपसील में बदलाव भी हो सकता है। लेकिन यह अपवाद के रूप में ही संभव है। कलात्मक, तत्त्वनिष्ठ निर्देशक कभी अपने दिमाग में उगे हुए दृश्य

चित्रित करने के कल्पना के साथ किसी मजबूरी के कारण (प्रोड्यूसर के या किसी के कहने पर) समझौता नहीं करता।

2.6.2 पटकथा और शूटिंग स्क्रिप्ट फ़र्क –

पटकथा और शूटिंग स्क्रिप्ट में फर्क यह रहता है कि पटकथा क्रमबद्ध होती है।वह एक दृश्य के बाद दूसरा दृश्य जैसे एक कड़ी में दूसरी कड़ी अटकाकर एक सीरियलसी लिखी जाती है ताकि कोई पढ़ भी लें तो फिल्म कि कहानी उसके समझ में आ जाती है। लेकिन शूटिंग स्क्रिप्ट में अगर किसी विशिष्ट स्थान पर ही पटकथा में लिखे गए दृश्यों के अनुसार अनेक दृश्य होते हैं तो निर्देशक पटकथा में लिखे गए उन सारे दृश्यों को क्रमवार की चिंता न करते हुए उसी दिन, रात, दो–चार दिनों में या जितने भी दिन–रात, समय लगे चित्रित कर समय, श्रम, पैसा बचाता है।इन दृश्यों को बाद में 'एडिटिंग' (संपादन) में पटकथा के अनुसार रक्खा जाता है। अनेक बार किसी स्थान की उपलब्धता, अभिनेता, अभिनेत्रियों की व्यस्तता, समय की पाबंदी आदि के कारण पटकथा में लिखित उस स्थान, अभिनेता, अभिनेत्रियों के सभी या कुछ दृश्यों का चित्रिकरण किया जाता है। यह सब या इन दृश्यों को शूटिंग स्क्रिप्ट में लिखा जाता है।

उदा–1. किसी महल को किराए पर लिया जाता है तो महल के अंदर, बरामदा, छत, आँगन, बाथरूम आदि में होनेवाले सारे दृश्यों को लगातार चित्रित किया जाता है।

2. ट्रेन में, हवाई जहाज में, समंदर, पहाड़, भीड़, रेल, बस में, हाईवे पर होनेवाले दृश्यों को इकट्ठा कर एक ही बार चित्रित किया जाता है।

3. मशहूर अभिनेता, अभिनेत्रियों के डेट्स मिलने की मुश्किल ज्यादा होती है ऐसे समय में निर्देशक उस कलाकार से संबंधित सभी दृश्यों का चित्रण प्रस्तुत कलाकार के डेट्स मिलते उसके जीतने भी दृश्य फिल्म में हैं वे सभी दृश्यित कर पूरा कर लेता है। संक्षेप में कह सकते हैं कि पटकथा क्रमबद्ध होती है और शूटिंग स्क्रिप्ट में कोई क्रमबद्धता नहीं होती।

पटकथा में दृश्य का स्थान, समय, दिन–रात, भाग लेनेवाले व्यतिरेखाएं, दृश्य क्रम आदि होता है। लेकिन शूटिंग स्क्रिप्ट में पात्रों के उठने बैठने से लेकर उनके हर क्रिया–कलाप का, कैमरा एंगल से लेकर क्लोजअप, लाँग शॉट, शोल्डर शॉट आदि सभी बारीकियों का जिक्र रहता है जिसका पालन प्रस्तुत दृश्य में भाग लेनेवाले सभी को करना होता है।

2.6.3 उदा– लगान फिल्म के प्रस्तुत दृश्य से आप समझ जाएंगे –

Scene 13

Bhuvan Yashodamai - The making of a bat

Village :Bhuvans House

Ext / Night

Yashodamai sits at the entrance of the house

Bhuvan Watches her While feeding the Cattle

Bhuvan

का सोच रही है माँ

Yashodamai

आज जो भया, वाई के बारे में बेटा

Bhuvan

माँ तेरी कसम, मैने जो किया ....ठीक किया! मन कटता है मेरा जब हम राजा को लगान भरते हैं ..और वह फिरंगियों की गंदी हथेली पर धर देता है! तू बोल माँ, धरती की छाती काट के बीज कौन बोएं है? हम बोएं! फिर सिंचे कौन है? हम ही! तो फिर लगान उनकी गांठ काहे बांध दे? गोरा साहब कि बातों में अगले दो साल भी लगान माफ करने की बात थी! मै का गुंगा हो जाता, माँ? तू बोल, गुंगा हो जाता?

See keeps staring at him, tears in her eyes. bhuvan sits before her

Bhuvan

का सोच रही है?

Yashodamai walks up to him and runs her hands through his hair

Yashodamai

यही रे कि बिल्कुल अपने बापू जैसे बोलता है, वे भी ऐसे ही जुझारू थे, खरी बोलते थे।

She wipes her tears

Yashodamai

अच्छा अब जा..सो जा बोझ मती रख माथे पे.हे राम !

CUT TO"[2]

(Film Lagan By - ashutosh Govarikar -amir Khan, Online Screenplay, Scene 13, page- 31)

2.6.4 प्रस्तुत दृश्य का विश्लेषण –

यहाँ प्रसिद्ध फिल्म लगान का वह दृश्य प्रस्तुत है जब अंग्रेज शासक रसूल के साथ भूवन सबके विरोध के बावजूद क्रिकेट मैच का बीड़ा उठाता है। बावजूद इसके कि वह क्रिकेट का ए.बी.सी.डी भी नहीं जानता। मात्र इस आशा से कि तीन साल का लगान माफ होगा। लेकिन उसकी बात को कोई नहीं समझता। जब कोई व्यक्ति प्रवाह के विरुद्ध निकल पड़ता है तो धारा के साथ बहनेवाले उसका विरोध करते ही हैं। यह उस

व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह विरोध होने पर भाग खड़ा होता है या डट कर खड़ा होता है? डटकर खड़ा रहा तो उसके हिम्मत की दाद दी जाती है और धीरे धीरे एक एक कर सभी उसके साथी बन जाते हैं। फिर तांता बन जाता है। लेकिन ऐसा व्यक्ति भी अपने मन में यह डर लिए होता है कि वह सही कर रहा है या गलत? और ऐसे वक्त में उसे जरूरत होती है उन लोगों के साथ कि जो बिल्कुल उसके अपने, जिगर के पास वाले हो। उनके साथ, धीरज बंधनेवाले शब्द सुनकर उसकी हिम्मत भी बढ़ती है और सही होने के उसका जज्बा भी पुख्ता होता है। प्रस्तुत दृश्य इसी बात को रेखांकित करता है।

भूवन दिन भर के तानों से परेशान होकर रात को अपने माँ के सामने बैठा है और माँ उसकी बात को चिंता के साथ सुन रही है। यहाँ पटकथाकार ने जान बूझकर रात का समय चुना है। क्योंकि कोई भी व्यक्ति किसी भी गंभीर बात को ज्यादातर शाम या रात को ही अपने प्रियजनों या घरवालों के साथ डिसकस करता है। और यहाँ तो झोपड़ियों में रहनेवाले ग्रामीण इलाके के गरीब किसान हैं।

- Ext / Night (बाहर/रात्र)
- स्थान लिखा है-Village :Bhuvans House

  (एक ग्राम और भूवन के घर के सामने)
- दृश्य में भाग लेनेवाले कलाकार हैं - Bhuvan, Yashodamai
- वे क्या कर रहे हैं - The making of a bat
- यशोदामाई कहाँ बैठी है यह भी लिखा गया है। Yashodamai sits at the entrance of the house (वह झोंपड़ी के दहलीज/चौकट पर बैठी है।)
- Bhuvan Watches her While feeding the Cattle
- (भूवन देख रहा है कि वह चिंता में है। नॉर्मल नहीं है।)

इसके बाद संवादों के आधार पर तथा अभिनेताओं के अभिनय और कॅमेरा के तकनीक का समन्वय कर दृश्य को चित्रित किया जाता है।

See keeps staring at him, tears in her eyes. bhuvan sits before her बीच बीच में

पात्रों के ऐसे कार्यकलापों की सूचना भी पटकथाकार लिखता है। जिन्हें निर्देशक भी गंभीरता से लेकर शूटिंग स्क्रीप्ट में लिखता है।

इसके अतिरिक्त भी कई सूचनाएँ लिखी जा सकती है। लिखते हैं।

2.7 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न -

1. जब तक फिल्म क्षेत्र से नहीं जुडते तब तक .... से वंचित ही रहेंगे।

   (अ) कहानी ज्ञान (ब) कैमेरा ज्ञान (क) प्रॅक्टिकल ज्ञान

2. भारत ही नहीं अपितु विश्व के फिल्म इंडस्ट्री में ..... का रूपांतरण फिल्म में करने की प्रक्रिया शुरू से होती आई है।

(अ) कहानी (ब) उपन्यास (क) नाटक

3. 'मै आज भी फेंके हुए पैसे नहीं उठाता।..... फिल्म का संवाद है।

(अ) दीवार (ब) लावारिस (क) अंधा कानून

4. असरदार संवाद किसी भी फिल्म को कामयाब बनाने में ...... का काम करती हैं।

(अ) प्रसिद्ध बनाने (ब) असरदार बनाने (क) तड़का देने

5. किसी व्यक्ति का खुद से भी संवाद होता है जिसे .. ..कहा जाता है।

(अ) स्वगत कथन (ब) सामान्य संवाद (क) विशेष संवाद

6. 'शोले' के गब्बरसिंग का पात्र कहते हैं कि पहले ...... को सामने रखकर लिखा गया था।

(अ) डैनी डेंजगोप्पा (ब) अमरीश पूरी (क) विनोद खन्ना

7. सत्यजित राय ने ..... की कहानी 'सद्‌गति' पर टेलीफ़िल्म बनाई थी।

(अ) मोहन राकेश (ब) भीष्म साहनी (क) प्रेमचंद

8. फिल्म मात्र पटकथाकार की ही नहीं अपितु ... के नजरिए से भी बनती है।

(अ) निर्माता (ब) निर्देशक (क) कॅमेरामन

9. ....को छोड़ कोई दृश्य नहीं फिल्माया जाता है।

(अ) निर्माता (ब) पटकथाकार (क) पटकथा

10. जो परदे पर दिखाने के लिए ही लिखी जाए ... है।

(अ) फिल्म (ब) नाटक (क) पटकथा

2.8 फिल्मी शब्द, शब्दार्थ

1. EXT = बाहर
2. Shooting Script = प्रत्यक्ष दृश्यिकरण के लिए लिखी गई स्क्रिप्ट
3. Screenplay Writing = पटकथा लेखन
4. INT = अंदर
5. Adoption = रूपांतरण

2.9 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

1. (क) प्रॅक्टिकल ज्ञान
2. (ब) उपन्यास
3. (अ) दीवार
4. (क) तड़का देने
5. (अ) स्वगत कथन
6. (अ) डैनी डेंजगोप्पा
7. (क) प्रेमचंद
8. (ब) निर्देशक
9. (क) पटकथा
10. (क) पटकथा

2.10 सारांश

पटकथा के लिखित स्वरूप को देखने की जिज्ञासा उत्पन्न होना स्वाभाविक बात है। किन तथ्यों के आधार पर पटकथा को पन्नों पर उतारा जाता है और निर्देशक उस दृश्य को चित्रित कैसे करता है? आदि जानकारी की चाहत होना स्वाभाविक है।लेकिन जब तक फिल्म क्षेत्र से नहीं जुडते तब तक प्रॅक्टिकल ज्ञान से वंचित ही रहेंगे। पटकथा लेखन याने किसी बिल्डिंग का इंजीनियर/आर्किट्रेक्चरर द्वारा बनाया गया स्ट्रक्चर, जिसके आधार पर महीनों, सालों तक ईंट, पत्थर जोड़ कर कोई बिल्डिंग बनती है।

जो कथा केवल फिल्म या धारावाहिक को छोटे या बड़े परदे पर दिखाने के लिए ही अनेक दृश्यों तथा फिल्माने के दर्जनों सूचनाओं के साथ लिखी गई हो पटकथा है। अर्थात ऐसी कथा जो परदे पर दिखाई जाए। या जो परदे पर दिखाने के लिए ही लिखी जाए 'पटकथा' है। अंग्रेजी में इसे Screenplay कहते हैं।

संक्षिप्त कथा/कहानी का विकास कर कहानी की शुरुवात, मध्य, अंत तय करते हुए उसमें संघर्ष, द्वंद्व उत्पन्न कर कहानी के समय के हिसाब से उनमें लाए जानेवाले दृश्यों को पटकथा के तरीके से कागज पर उतारना तथा कहानी को समय के हिसाब से दृश्यों में तब्दील कर बारिकियों के साथ प्रस्तुत करना ही पटकथा लिखना है।

संवाद लेखन दो तरीके से किया जाता है। सामान्य संवाद और विशेष संवाद। जब पटकथाकार फिल्म के दृश्य के अनुसार तथा दृश्य में भाग लेनेवाले पात्रों के अनुसार जीवन के रोजमर्रा के संवाद लिखता है जो कहानी को आगे बढ़ाते हैं तब वे सामान्य संवाद होते हैं। लेकिन किसी निर्माता, निर्देशक के कहने पर कोई लेखक उस पटकथा को पढकर, अध्ययन कर अपने अनुभव के आधार पर असरदार शब्दों का उपयोग कर कम से कम शब्दों में ज्यादा आशय समेटकर शेरो-शायरी, यमक, अतिशयोक्ति, रूपक, आदि अलंकारों के आधार पर असेदार संवादों को लिखता है तो वे विशेष संवाद होते हैं जिससे दर्शक, श्रोता तृप्त हो जाते हैं। जिन्हें सुनकर सिनेमा हॉल दर्शकों के तालियाँ, वाह-वाह से गूंज उठता है। असरदार संवाद किसी भी फिल्म को कामयाब बनाने में इस तरह तड़का देने का काम करती हैं कि सालोंसाल प्रस्तुत संवाद जन-मानस के व्यवहार में उपयोग में लाए जाते है।

रूपांतरण का मतलब है किसी कहानी, लघु कहानी, नाटक, उपन्यास, एकांकी, महाकाव्य, खंडकाव्य आदि साहित्य के अनेक विधाओं में प्रकाशित रचना को फिल्म के पटकथा में परिवर्तित करना। साथ ही

किसी अन्य देश, राष्ट्र, समूह, जातियाँ, भाषाओं में बनी और कामयाब होनेवाले फिल्मों को अपनी भाषा, अपने उस भाषाओं के अभिनेताओं और देश-काल-वातावरण में ढालकर फिर से बनाना। लेकिन फिल्मों के रूपांतरण को रीमेक भी कहा जाता है। भारत ही नहीं अपितु विश्व के फिल्म इंडस्ट्री में उपन्यास का रूपांतरण फिल्म में करने की प्रक्रिया शुरू से प्रचलित है।

शूटिंग स्क्रिप्ट-एक अच्छी पटकथा हाथ में आने के बाद हर दृश्य को पढ़कर निर्देशक के दिमाग में चक्र घूमने लगता है और हर दृश्य को किस तरह चित्रित करना है का ताना बाना उसके दिमाग में आकार लेने लगता है। यही कल्पनाएं जब कागज पर उतरती है तब 'शूटिंग स्क्रिप्ट' का जन्म होता है। पटकथा लेखक द्वारा लिखे गए दृश्यों को प्रत्यक्ष रूप में चित्रित कर वे परदे पर किस तरह दिखेंगे की सोच को बारीकियों के साथ लिखना 'शूटिंग स्क्रिप्ट' कह सकते हैं। संक्षेप में कह सकते हैं कि पटकथा क्रमबद्ध होती है और शूटिंग स्क्रिप्ट में कोई क्रमबद्धता नहीं होती। निर्देशक अपने काम की सुविधा के लिए शूटिंग स्क्रिप्ट लिखता है।

2.11 स्वाध्याय

1. संवाद के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।
2. सामान्य संवाद और विशेष संवाद क्या है? स्पष्ट कीजिए।
3. फिल्म के परिप्रेक्ष्य में पटकथा लेखन के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।
4. शूटिंग स्क्रिप्ट कैसी होती है? विस्तृतता के साथ स्पष्ट कीजिए।
5. रूपांतरण को स्पष्ट कीजिए।
6. पटकथा और स्क्रीन प्ले के फरक को स्पष्ट कीजिए।

2.12 क्षेत्रीय कार्य –

1. किसी पटकथा का स्क्रीन प्ले लिखिए।
2. किसी कहानी पर पटकथा तैयार कीजिए।
3. किसी पटकथा के संवाद लिखिए।

2.13 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

निम्नलिखित स्क्रीन प्ले तथा पटकथाएं पढिए-

'लगान', 'शोले', 'पुष्पक', 'रजनीगंधा'

2.14 संदर्भ

1. पटकथा लेखन एक परिचय – मनोहर श्याम जोशी
2. Film Lagan By - Ashutosh Govarikar - Amir Khan, Online Screenplay, Scene 13, page- 31

❑❑❑

इकाई–1
लघुपट निर्माण

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवेचन

1.3.1 लघुपट किसे कहते हैं?

1.4 लघुपट निर्माण की प्रक्रिया

1.4.1 एक कहानी

1.4.2 स्क्रिप्ट / पटकथा

1.4.3 स्टोरीबोर्ड

1.4.4 स्थानों का चयन

1.4.5 कलाकारों का चयन

1.4.6 निर्माण टीम

1.4.7 लघुपट निर्माण उपकरण

1.4.8 दृश्यों का पूर्वाभ्यास

1.4.9 पात्रों की वेशभूषा

1.4.10 दृश्य शूटिंग

1.4.11 एडिटिंग

1.5 कथा का फिल्मांकन

1.5.1 कथा फिल्मांकन के अध्ययन के विविध आयाम

1.5.1.1 कथावस्तु

1.5.1.2 पात्र एवं चरित्र चित्रण

1.5.1.3 संवाद योजना

1.5.1.4 देशकाल और वातावरण

1.5.1.5 गीत–संगीत योजना

1.5.1.6 दृश्य योजना

1.5.1.7 प्रकाश योजना

1.5.1.8 ध्वनि योजना

1.5.1.9 फिल्मांकन और संपादन

1.6 कहानी का दृश्य विभाजन

1.7 कथा का संपादन

1.8 कैमरा और उसका महत्व

1.8.1 एक्सट्रीम क्लोज शॉट

1.8.2 क्लोज शॉट

1.8.3 मिड शॉट

1.8.4 मिड लाँग शॉट

1.8.5 लाँग शॉट

1.8.6 एक्सट्रीम लाँग शॉट

1.8.7 मास्टर शॉट

1.8.8 टू शॉट

1.8.9 ओव्हर द शोल्डर शॉट

1.8.10 हेड अँड शोल्डर शॉट

1.8.11 पॉइंट ऑफ व्हीव

1.8.12 मिरर शॉट

1.8.13 पॅन शॉट

1.8.14 टिल्ट शॉट

1.8.15 ट्रॉली शॉट

1.8.16 एरियल शॉट

1.8.17 हाई एंगल शॉट

1.8.18 लो एंगल शॉट

1.8.19 डच एंगल शॉट

1.9 पारिभाषिक शब्द

1.10 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.11 सारांश

1.12 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.13 क्षेत्रीय कार्य

1.14 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के पश्चात आप जान सकेंगे कि-

- लघुपट किसे कहते हैं?
- लघुपट की कथा का फिल्मांकन कैसे किया जाता है?
- लघुपट की कहानी का दृश्य विभाजन कैसे होता है?
- लघुपट में कैमरे का महत्व क्या होता है?
- लघुपट में कैमरा का प्रयोग कितने प्रकारों से किया जाता है?

1.2 प्रस्तावना

तकनीक ने हमारी दुनीया को पूरी तरह से बदल दिया है। इस क्रांतिकारी तकनीक में सिनेमा की तकनीक भी आती है। आज से लगभग 470 वर्ष पूर्व पूर्वी-जर्मनी का एक युवा गणितज्ञ, गणित के किसी प्रश्न को हल कर रहा था। वह कुर्सी पर बैठा था । उसके सामने मेज पर एक लैम्प जल रहा था। सोचते सोचते उसकी दृष्टि दीवार पर पड़ी। उसे वहाँ अपनी टोपी की छाया दिखाई दी। उस छाया को देखकर उसे घुड़सवार मनुष्य का आभास हुआ। वह दृश्य देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। जब उसने तेजी से अपना सिर हिलाना शुरू किया तो ऐसा लगने लगा की घुड़सवार तेजी से दौड़ रहा है। इस दृश्य से ही सिनेमा बनाने के विचार का जन्म हुआ। इस विद्वान का नाम था अथानासियस किर्चर। सन् 1645 ई. में उसने एक लालटेन बनाई, जिसे उसने जादुई लालटेन नाम दिया। रेखांकित चित्रों को इस लालटेन के सामने रख कर वह उनकी छाया दीवार पर दिखाता था। यही लघुपट या सिनेमा का प्रारम्भिक रूप था।

1.3 विषय विवेचन

इस इकाई के अंतर्गत हम लघुपट किसे कहते हैं? यह देखेंगे। लघुपट निर्माण की प्रक्रिया कैसे होती है, यह सीखते हुए हम लघुपट निर्माण के लिए आवश्यक तत्व कौनसे हैं इसका अध्ययन करेंगे। कथा का फिल्मांकन किस तरह होता है तथा फिल्मांकन में कौन से आयाम आते हैं इसका अध्ययन किया जाएगा।

1.3.1 लघुपट किसे कहते हैं?

लघुपट एक मोशन पिक्चर होता है, जो एक फीचर फिल्म से छोटा होता है। भारत में एक घंटे से अधिक समय वाली फिल्म को 'फीचर फिल्म' माना जाता है और उससे कम समय की फिल्म को 'लघुपट' माना जाता है। अकादमी ऑफ मोशन पिक्चर आर्टस और साइंसेज ने लघुपट किसे कहा जाए? इस पर विचार करते हुए कहा है कि, '1 घंटे या 40 मिनट से कम समय की फिल्म को लघुपट कहा जाता है। १ घंटे से कम कुछ मिनट की फिल्म लघुपट है।' लघुपट में स्थानीय विषयों से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर के विषय प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किए जाते हैं। कोई विषय कम से कम समय में दर्शकों के सामने प्रभावी ढंग से

प्रस्तुत करने का एक सक्षम माध्यम लघुपट है। सामाजिक, राजकीय, आर्थिक, धार्मिक विषयोंपर बने लघुपट राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय लघुपट महोत्सव द्वारा भारतीय संकल्पनाओं पर आधारित विचार विश्व तक पहुंचने का काम करते हैं। कोई विषय, घटना या प्रसंग को लेकर एक अच्छी पटकथा लिखकर कलात्मक ढंग से उसका प्रस्तुतीकरण करके लघुपट निर्माण किया जाता है। लघुपट के माध्यम से सामाजिक विषयों को बड़े ही प्रभावी तरीके से प्रस्तुत किया जाता है। यही कारण है की लघुपटों को संस्कारपट भी कहा जा सकता है।

सिनेमा के इतिहास को देखने पर यह पता चलता है कि, शुरुआत में बनी हुई फिल्में बहुत छोटी थी। कभी-कभी 1 मिनट या उससे भी कम समय की बनती थी। सन् 1910 ई. के बाद यह फिल्में थोड़ी लंबी अर्थात 10 मिनट से अधिक लंबे समय की होने लगी। विश्वभर में फिल्मों के प्रस्तुतीकरण की शुरुवात 1894 ई. से हो गई थी। सन् 1915 ई. के बाद कॉमेडी लघुपटों का निर्माण बड़ी संख्या में होने लगा। सन् 1920 ई. के बाद टिकट लगाकर कॉमेडी लघुपट प्रदर्शित होने लगे। चार्ली चैपलिन के लघुपट इस समय मुख्य तौर पर प्रदर्शित हुए। सन् 1930 ई. की महामंदी के बाद सिनेमा वितरण प्रणाली में बदलाव हुआ और लघुपट फीचर फिल्म बनकर प्रदर्शित होने लगे। सन् 1944 ई. के बाद वर्ल्ड डिज्नी प्रोडक्शन, वार्नर ब्रदर्स कार्टून जैसे स्टूडियो ने एनीमेटेड लघुपट निर्माण करना शुरू कर दिया। सन् 1960 ई. के बाद लघुपट स्वतंत्र रूप में निर्माण होने लगे। आज लघुपट आमतौर पर दर्शकों तक पहुंचने के लिए फिल्म महोत्सव पर निर्भर रहती है। आज लघुपट इंटरनेट के माध्यम से भी वितरित किए जाते हैं। कुछ वेबसाइट भी इस प्रकार लघुपट निर्माण को प्रोत्साहन देती हैं। लघुपट नई फिल्म निर्माता, निर्देशक, लेखक के लिए फिल्म क्षेत्र मेंपहला चरण होता है।

लघुपट सामाजिक विषयों को लेकर बनाये जाते हैं यह संकुचित धारणा होने के कारण ही 'सिंघम' या 'सिंबा' जैसी लोकप्रियता लघुपटों को नहीं मिलती। किन्तु आज बड़ी मात्राओं में होनेवाले लघुपट महोत्सवों के कारण दर्शक लघुपटों से जुड़ रहें हैं। संक्षेप में कहें तो जो फिल्म 40 मिनट से कम की हो, लघुपट माना जाता है। हालाँकि, अब यह एक स्वीकृत तथ्य है कि एक लघुपट तभी सर्वश्रेष्ठ माना जाता है जब वह वास्तव में छोटा हो। लघुपट जितना छोटा होता है वह उतना ही अधिक प्रभावी माना जाता है।

1.4 लघुपट निर्माण की प्रक्रिया

जिस प्रकार से कोई बड़े बजेटवाली फिल्म बनाई जाती है उसी प्रकार से लघुपट का निर्माण किया जाता है। लघुपट निर्माण के लिए आवश्यक तत्व निम्न प्रकार से हैं।

1.4.1 एक कहानी

लघुपट निर्माण के लिए सबसे पहले एक विचार की आवश्यकता होती है। उस विचार के अनुसार एक कहानी का चयन करना पड़ता है। इसे ही हम कथावस्तु कह सकते हैं। लघुपट की कथावस्तु का संबंध घटनाओं से होता है। किसी विशिष्ट देशकाल में मानव जीवन में घटित घटनाओं की व्यवस्था को कथावस्तु कह सकते हैं। लघुपट की कहानी उपन्यास की तरह ही सम्मोहक होती है। अच्छी लघु फिल्मों में अच्छी

फिल्मों के समान कहानी कहनेवाले तत्व होते हैं – उकसाने वाली घटना, संघर्ष और समाधान। यह सब किसी फिल्म के समान ही होता है बस छोटे पैमाने में लघुपट के लिया तैयार किया जाता है। आज लघुपटों की कहानी विभिन्न सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक, मनोरंजन आदि अनेक विषयों को लेकर बनाई जाती है।

1.4.2 स्क्रिप्ट / पटकथा

लघुपट निर्माण प्रक्रिया का दूसरा चरण स्क्रिप्ट अर्थात् पटकथा लेखन होता है। लघुपट के लिए कहानी को पटकथा के रूप में बदलना बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। क्योंकि कहानी में ''उसकी मुलाकात उसके बेटे से 10 साल बाद हुई'' यह कह कर बात को छोड़ दे सकते हैं। किंतु लघुपट में 10 साल का समय दृश्यात्मक रूप से दिखाना होता है। इन बातों को ध्यान में रखकर स्क्रिप्ट अर्थात् पटकथा लिखनी पड़ती है।

लघुपट की स्क्रिप्ट लगभग 05 से 15 पेज की होनी आवश्यक होती है। आमतौर पर लेखन का 01 पृष्ठ लघुपट के 01 मिनट के बराबर होता है। इसे अत्यंत सरल रखना आवश्यक होता है। किसी लघुपट की स्क्रिप्ट लिखते समय बहक जाना और बहुत कुछ हासिल करने का प्रयास हो सकता है।ऐसे में स्क्रिप्ट प्रभावी नहीं हो सकती। इससे बचकर लघुपट के लिए कहानी की लंबाई को ध्यान में रखकर स्क्रिप्ट अर्थात पटकथा तैयार करनी पड़ती है।

1.4.3 स्टोरी बोर्ड

लघुपट निर्माण प्रक्रिया का अगला चरण होता है स्टोरी बोर्ड। स्टोरी बोर्ड चित्रों की एक शृंखला होती है। इस शृंखला में चित्रों के माध्यम से यह बताया जाता है कि अगले दृश्य में क्या होगा। इन चित्रों को विस्तृत या कलात्मक होने की आवश्यकता नहीं होती, लेकिन वे इतने स्पष्ट होने चाहिए कि इस बात का अच्छा अंदाज़ा हो जाए कि प्रत्येक दृश्य कैसा दिखेगा और उसमें क्या होगा। फिल्मांकन शुरू करने से पहले एक स्टोरी बोर्ड बनाने से शूटिंग के दौरान काम पर बने रहने में मदद मिलती है। तुरंत चीजों के बारे में सोचने से समय की बचत होती है।यदि चित्रात्मक स्टोरीबोर्ड बनाना मुश्किल लगता हो तो आंकड़ों का या सरल आकृतियों का प्रयोग किया जाता है। स्टोरी बोर्ड से दृश्य अभिनेताओं को समझाना आसान हो जाता है और समय की बचत भी होती है।

1.4.4 स्थानों का चयन

लघुपट निर्माण का अगला चरण प्री–प्रोडक्शन के अंतर्गत आता है।लघुपट की कथा के अनुसार फिल्मांकन के लिए स्थान की तलाश करना इसके अंतर्गत महत्त्वपूर्ण होता है। लघुपट का विषय, स्क्रिप्ट इससे मेल खाने के लिए लघुपट फिल्माने (शूटिंग) से पूर्व स्थानों को ढूंढना आवश्यक होता है। जैसी जरूरत हो वैसे स्थानों की आवश्यकता के अनुसार फिल्मांकन की अनुमति लेना आवश्यक होता है। लघुपट का विषय जिस प्रकार का है, उस प्रकार से घर, गांव, स्कूल आदि सुरक्षित स्थानों की तलाश फिल्मांकन से पूर्व करना आवश्यक होता है। निजी या सार्वजनिक जगह पर लघुपट का फिल्मांकन करने के लिए आवश्यक अनुमति लेनी पड़ती है।

1.4.5 कलाकारों का चयन

लघुपट निर्माण प्रक्रिया में अगला चरण कलाकारों के चयन का होता है। लघुपट के लिए जितना बजट हो उसके अनुसार स्क्रिप्ट के लिए आवश्यक कलाकारों का चयन करना होता है। यह चयन करने के लिए कलाकारों का ऑडिशन आयोजित किया जा सकता है। यदि लघुपट बनाने के लिए ज्यादा बजट न हो तो कई बार परिवार के सदस्य और दोस्तों का चयन करके भी लघुपट बनाया जाता है। लघुपट के लिए कलाकार प्राप्त करने का यह एक आसान तरीका है। किंतु यह बात हमेशा ध्यान में रखने की जरूरत होती है कि लघुपट के लिए ऐसे कलाकार हों जो स्क्रिप्ट में लिखी भूमिका को जिंदा रूप दे सकें। स्क्रिप्ट के अनुसार भूमिका करने के लिए कलाकार सही है या नहीं यह देखने के लिए उनका ऑडिशन भी लेना पड़ता है।

1.4.6 निर्माण टीम

लघुपट निर्माण किसी एक व्यक्ति का काम नहीं होता। लघुपट निर्माण के लिए एक निर्माण टीम बनाना आवश्यक होता है। लघुपट निर्माण में फिल्मांकन के विभिन्न पहलुओं से जुड़े कई अन्य काम करने पड़ते हैं। जैसे छायांकन, निर्माण, प्रकाश व्यवस्था, संपादन/एडिटिंग और ध्वनि आदि। इन पहलुओं से जुड़े लोगों की मदद लघुपट निर्माण प्रक्रिया में लेनी पड़ती है। बजट के अनुसार इस काम में अनुभवी विशेषज्ञ लोगों की टीम बनानी पड़ती है। इन लोगों की सहायता से ही एक लघुपट निर्माण का काम पूर्ण होता है।

1.4.7 लघुपट निर्माण उपकरण

लघुपट निर्माण प्रक्रिया में अगला चरण लघुपट निर्माण उपकरणों से संबंधित होता है। लघुपट बनाने के लिए कैमरा, लाइट/प्रकाश व्यवस्था और ध्वनि रेकॉर्डर व्यवस्था की आवश्यकता होती है। बजट का ध्यान रखकर इनसे संबंधित उपकरणों का चयन करना पड़ता है। लघुपट फिल्माने के लिए व्यावसायिक कॅमेरा के साथ–साथ मोबाईल फोन, डीएसएलआर कॅमेरा आदि का प्रयोग भी किया जा सकता है। आवश्यकता के अनुसार यह उपकरण किराए पर भी लिए जाते हैं। स्क्रिप्ट के अनुसार उपकरणों का चयन करना होता है। फिल्मांकन करते समय सूर्य प्रकाश का प्रयोग करने के साथ ही हल्के लाइट का प्रयोग। ध्वनि रिकॉर्ड के लिए अच्छे माइक आदि उपकरणों की आवश्यकता होती है।

1.4.8 दृश्यों का पूर्वाभ्यास

लघुपट निर्माण में सारे आवश्यक उपकरणों को जुटाने के बाद वास्तव में लघुपट निर्माण का अर्थात शूटिंग का काम शुरू हो जाता है। लघुपट में काम करनेवाले अभिनेताओं के चयन के बाद जब कलाकार शूटिंग सेट पर पहुँच जाते हैं तब उन्हें स्क्रिप्ट अध्ययन के लिए दी जाती है। लघुपट की स्क्रिप्ट को जिन दृश्यों में विभाजित किया जाता है उन दृश्यों के अनुसार काम करनेवाले कलाकारों से दृश्य अभिनय का अभ्यास कराया जाता है। इस अभ्यास से दृश्यों में आवश्यक परिवर्तन करना आसान हो जाता है। इस प्रकार के अभ्यास से दृश्यों को भलीभाँति समझा जाता है।

1.4.9 पात्रों की वेशभूषा

लघुपट की शूटिंग शुरू करने से पहले लघुपट में काम करनेवाले कलाकारों की भूमिका को ध्यान में रखकर वह किस प्रकार के कपड़े पहनेंगे यह सुनिश्चित करना पड़ता है। लघुपट में भूमिका करनेवाले पात्र का चरित्र कैसा है? यह ध्यान में रखकर उसके चरित्र को निखारनेवाले कपड़े कलाकारों के लिए सुनिश्चित करने होते हैं। लघुपट का विषय यदि धार्मिक है तो उस धर्म और संस्कृति के अनुसार कलाकार के लिए वेशभूषा निश्चित करनी होती है। इस प्रकार लघुपट के पात्रों की वेशभूषा महत्वपूर्ण होती है।

1.4.10 दृश्य शूटिंग

लघुपट निर्माण का अगला चरण दृश्य का फिल्मांकन अर्थात् शूटिंग शुरू करना यह होता है। लघुपट का शूटिंग शुरू करने से पूर्व स्टोरी बोर्ड के अनुसार एक शॉर्ट सूची मिलती है। इस सूची के अनुसार दृश्य को परिवेश के अनुसार या लोकेशन के अनुसार फिल्माया जाता है। बाहरी दृश्य में विशिष्ट मौसम, वातावरण आदि शूटिंग करने के लिए योजना बनानी पड़ती है। लघुपट आकार में छोटा होता है इसलिए कभी कभी कहानी दृश्य से कम महत्त्व रखती है। ऐसे में दृश्य को फिल्माने में ऐसे स्थान चुनने पड़ते हैं जो देखने में प्रभावशाली हो। इस प्रकार दृश्य को फिल्माया जाता है।

1.4.11 एडिटिंग

लघुपट का दृश्यों के अनुसार शूटिंग करने के बाद उन सभी दृश्यों को एक साथ एडिटिंग सॉफ्टवेयर में अपलोड करना पड़ता है। इस सॉफ्टवेयर में सभी दृश्यों को एक साथ जोड़ा या काटा जाता है। शूट किए गये दृश्य में अभिनेता के संवाद, ऑडियो ट्रॅक जोड़े जाते हैं। साथ ही संगीत प्रभाव अर्थात् साउंड इफ़ेक्ट भी जोड़ें जाते हैं। साथ ही दृश्यों में फेडस, ट्रांजिशन आदि का प्रयोग करके सभी दृश्यों को सॉफ्टवेयर के जरिए जोड़ा जाता है। इसके पश्चात एडिटिंग पूरी हो जाती है। एडिटिंग खत्म होने के पश्चात प्रदर्शन के लिए लघुपट तैयार हो जाता है।

1.5 कथा का फिल्मांकन

लघुपट के लिए एक कथा आवश्यक होती है। लघुपट की कथा प्रामाणिक और रोचक बनाने के किए देशकाल वातावरण तथा स्थान का ध्यान रखना आवश्यक होता है। संवादों के माध्यम से कहानी के पात्रों के चरित्र सशक्त बनाना भी आवश्यक होता है।

लिखित कथावस्तु को दर्शकों के सामने लघुपट के रूप में प्रस्तुत करने हेतु विभिन्न प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है। इन प्रक्रियाओं के निर्वाहन हेतु भिन्न-भिन्न तकनीकों और कौशल की आवश्यकता होती है। फिल्मांकन से पूर्व लघुपट की कथा को पटकथा के रूप में रूपांतरित करना पड़ता है। पटकथा के रूप में लिखी लघुपट की कथा बाद में एक साहित्यिक कृति के रूप में प्रस्तुत हो जाती है। लघुपट की इस पटकथा के अनुसार पात्रों का चयन, देशकाल एवं वातावरण, स्थान-निर्धारण, दृश्य-योजना, प्रकाश-व्यवस्था, कार्य-व्यापार योजना, शॉट निर्धारण, संपादन आदि प्रक्रियाओं से गुजर कर ही लघुपट का निर्माण पूर्ण होता

है। इसे ही कथा का फिल्मांकन कहा जाता है। दूसरे शब्दों में कहे तो फिल्मांकन का अर्थ है लघुपट निर्माण में जिन समस्त अवयवों का समावेश होता है, उन्हें संगठित और नियंत्रित करके पर्दे पर दिखने योग्य बनाने की तकनीक । लघुपट निर्माण करते समय पटकथा लिखने के बाद लेखक का दायित्त्व या काम समाप्त हो जाता है और आगे की सभी प्रक्रियाओं की व्यवस्था का दायित्व लघुपट निर्देशक के कंधों पर आ जाता है। निर्देशक अन्य सहकर्मियों की सहभागिता और सहयोग से लघुपट निर्माण की सभी तत्त्वों को नियंत्रित करके अपनी कलात्मक क्षमता एवं शिल्पगत विशिष्टता के आधार पर लघुपट को अंतिम रूप तक पहुँचाता है अर्थात पूर्ण करता है। लघुपट की संप्रेषणीयता निर्देशक की लघुपट शिल्प कुशलता पर निर्भर होती है।

1.5.1 कथा फिल्मांकन के अध्ययन के विविध आयाम

लघुपट में कथा और फिल्मांकन के विविध आयामों का अध्ययन निम्नलिखित उप शीर्षकों के अंतर्गत किया जा सकता है।

1.5.1.1 कथावस्तु

किसी भी लघुपट के निर्माण के लिए पहली आवश्यकता कथावस्तु की होती है। यह कार्य एक लेखक द्वारा संपन्न होता है। इसमें लघुपट निर्माण के अंतिम चरण तक निर्देशक द्वारा काँट-छाँट की जाती है। कथावस्तु के अंतर्गत विषय निर्धारण करके पटकथा तैयार की जाती है। कथावस्तु के पर्याय के रूप में जो नाम सर्वाधिक प्रचलित है उसे कथानक कहा जाता है। इसके लिए अंग्रेजी में प्लॉट 'का' शब्द प्रयोग किया जाता है। कथावस्तु का संबंध घटनाओं से होता है। अतः किसी विशिष्ट देशकाल में मानव जीवन में घटित तथा कारण कार्य-क्रम में सुनियोजित घटनाओं की शृंखला कथावस्तु कहलाती है। कथानक में लघुपट निर्माता का अमूर्त उद्देश्य कथानक और क्रिया व्यापार के माध्यम से मूर्त रूप में साकार होता है। और कथानक के द्वारा अमूर्त उद्देश्य दर्शकों के समक्ष ग्राह्य रूप में लघुपट के द्वारा प्रस्तुत होता है।

1.5.1.2 पात्र एवं चरित्र चित्रण

लघुपट में पटकथा की मांग के अनुसार पात्रों का चयन किया जाता है। नायक, सहनायक, नायिका, सहायक पात्र, विदूषक/कॉमेडियन, सूत्रधार, वर्ग प्रतिनिधि पात्र आदि के आधार पर मुख्य एवं गौण पात्रों का चरित्र निर्धारित किया जाता है। पात्रों के चरित्र के उद्घाटन के लिए बाह्य व्यक्तित्त्व, स्वगत कथन एवं संवाद का सहारा लिया जाता है। लघुपट में पात्रों का चरित्र मुख्यतः दो रूपों में उद्घाटित होता है। 1. पात्र विशेष के द्वारा स्वयं का उद्घाटन 2. एक पत्र द्वारा किसी अन्य पात्र के चरित्र का उद्घाटन। पात्र स्वयं के चरित्र का उद्घाटन कई प्रकार से करता है। जैसे बाह्य व्यक्तित्त्व के द्वारा, जिसमें उसका शारीरिक गठन, वेशभूषा, उम्र, खान-पान तथा रहन-सहन आदि क्रियाकलाप के माध्यम से जैसे हाव- भावों के द्वारा भाषा-बोली के द्वारा, स्वयं के संबंध में कहे गए कथनों के द्वारा। इसी प्रकार से अन्य पात्रों के चरित्रों का उद्घाटन किया जाता है। इस प्रकार लघुपट में पात्र योजना तथा चरित्र-चित्रण का अपना महत्त्व है। पात्र एक ओर घटनाओं को गति देते हैं तो दूसरी ओर अपने तथा दूसरे पात्रों के चरित्र विकास को स्पष्ट करते हैं। लघुपट का आकार कम होता है इसीलिए पात्रों के चारित्रिक विकास के लिए उनकी संख्या कम होना

निहायत जरूरी होता है। साथ ही कथानक तथा दृश्य में नियोजन आवश्यक होता है। इस प्रकार लघुपट फिल्मांकन में पात्र चरित्र-चित्रण महत्वपूर्ण होता है।

1.5.1.3 संवाद योजना

लघुपट में भाषा तथा संवाद का विशेष महत्व होता है। लघुपट में पात्रों के संवाद की भाषा विषय वस्तु को दर्शकों तक पहुंचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। साहित्य की अन्य विधाओं की तुलना में लघुपट के संवादों की भाषा विशिष्ट होती है। लघुपट निर्माता अपने लघुपट द्वारा जो कुछ कहना चाहता है वह सीधे-सीधे न कहकर अपने पात्रों के द्वारा कहता है। लघुपट के पात्रों द्वारा बोले जाने वाले संवादों की भाषा कथावस्तु को गति प्रदान करती है। और पात्रों का चारित्रिक विकास करती है। संवादों के माध्यम से ही पात्रों की सूक्ष्म चारित्रिक प्रवृत्तियाँ स्पष्ट होती है। संवादों की भाषा में कथावस्तु जितनी अधिक विस्तारित होगी, पात्रों के चरित्र चित्रण की क्षमता होगी और भाव तीव्रता से पहुंच जाएंगे ऐसे संवाद उतने ही श्रेष्ठ समझ जाते हैं। सर्वश्राव्य संवाद का ही लघुपट में महत्त्व है। इसी के माध्यम से कथावस्तु को गति प्राप्त होती है। पात्रों का चरित्र उभर कर आता है। पात्रों की मानसिक स्थितियाँ और अंतर्द्वंद्व को व्यक्त करने के लिए लघुपट में स्वगत कथन का प्रयोग भी एक निश्चित सीमा तक किया जाता है। जन सामान्य लोगों में प्रचलित भाषाओं के शब्दों का प्रयोग संवाद में किया जाता है। संवाद योजना के अंतर्गत भाषिक योजना, शब्द योजना, कथन के विविध प्रकार, मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ, हास्य-व्यंग, अधूरे वाक्य आदि की व्यवस्था की जाती है। संवाद योजना में विषयानुकूलता, पात्रानुकूलता, भावानुरूपता, संक्षिप्तता तथा आदि का ध्यान रखा जाता है।

1.5.1.4 देशकाल और वातावरण

लघुपट के फिल्मांकन में देशकाल वातावरण का विशेष महत्त्व होता है। देशकाल और वातावरण के चित्रण के माध्यम से ही कथावस्तु और चरित्र चित्रण को सजीवता प्रदान की जा सकती है। लघुपट में चित्रित किसी भी घटना का स्थान-सापेक्ष, कला-सापेक्ष और परिवेश-सापेक्ष होना उसकी विश्वसनीयता में वृद्धि करता है। पटकथा में देशकाल एवं वातावरण निरूपण के लिए लघुपट के तथ्य, विषय, परिवेश के अनुरूप वेशभूषा, रहन-सहन, खान-पान, पारस्परिक व्यवहार, रीति-रिवाज, विश्वास एवं मान्यताएँ, उत्सव और त्यौहार तथा व्यवसाय आदि की स्थापना की जाती है। लघुपट जिन समाजों, देश और व्यक्ति समूह के बारे में होते हैं उनकी परीक्षा और समीक्षा भी लघुपट में देशकाल वातावरण के द्वारा की जाती है।

1.5.1.5 गीत-संगीत योजना

गीत, संगीत और नृत्य तीन अलग स्वतंत्र इकाइयां है किंतु यह जब एक होकर आती हैं तो कथानक विस्तार, भाव विस्तार तेजी से होता है। लघुपट में कई बार गीतों के माध्यम से विषय की अभिव्यक्ति दी जाती है। दृश्य प्रभावी बनाने के लिए संगीत का प्रयोग किया जाता है। कथानक में रोचकता, वातावरण निरूपण, कथानक को गति देने के लिए लघुपट में गीत संगीत की योजना की जाती है। इस योजना के अंतर्गत शीर्षक गीत, भावगीत, रागात्मकता, काल्पनिकता आत्माभिव्यंजन, भावगत एकरूपता आदि तत्वों को स्पष्ट करने के लिए लघुपट में गीत संगीत योजना पर ध्यान दिया जाता है।

1.5.1.6 दृश्य योजना

लघुपट में दिखाए जानेवाले दृश्य नाटक के समान एक ही मंच पर घटित नहीं होते। एक दृश्य किसी बंद कमरे में हो रहे वार्तालाप का हो सकता है, तो दूसरा दृश्य किसी खुले मैदान का, पर्वत, पहाड़ का हो सकता है। यह भी संभव है कि अगला दृश्य सड़क पर दौड़ते किसी लड़के का भी हो सकता है। इन सभी दृश्यों के फिल्मांकन के लिए स्थान निर्धारण करना अत्यंत आवश्यक होता है। यह स्थान निर्धारण आंतरिक,बाह्य और गतिज रूप से होता है। कथानक की जरूरत के अनुसार सेट की सजावट की जाती है ।

1.5.1.7 प्रकाश योजना

लघुपट एक दृश्य-श्राव्य माध्यम है। इसलिए यह अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि उसका दृश्य स्पष्ट हो। कैमरा की बहुत सी सीमाएं होती है किंतु इन सीमाओं को कृत्रिम प्रकाश व्यवस्था के माध्यम से दूर किया जाता है। शूटिंग करते समय सूर्य के प्राकृतिक प्रकाश को नियंत्रित करने के लिए प्रकाश परावर्तकों का प्रयोग किया जाता है। इनडोअर शूटिंग में कृत्रिम प्रकाश व्यवस्था का प्रयोग किया जाता है। इनडोअर शूटिंग में तीन मुख्य लाइट्स का प्रयोग किया जाता है। की लाइट, फील लाइट और बैक लाइट। की लाइट पात्र या चरित्र पर सीधी पड़ती है और उसे दृश्यमान बनाती है। की लाइट के प्रयोग में ध्यान रखना पड़ता है। की लाइट आवश्यकता से कम क्षमता में होने पर विषय वस्तु स्पष्ट नहीं उभरती। की लाइट से उत्पन्न अवांछित छाया को हटाने के लिए फील लाइट का प्रयोग किया जाता है। फिल लाइट का की लाइट की विपरीत दिशा में प्रयोग किया जाता है। प्रकाश योजना के अंतर्गत तीव्र प्रकाश, मध्यम प्रकाश, गतिज प्रकाश, मध्यम प्रकाश की रंग चेतना, ब्लैक आउट और व्हाइट आउट आदि का प्रयोग किया जाता है।

1.5.1.8 ध्वनि योजना

लघुपट के फिल्मांकन में ध्वनि योजना का विशेष योगदान रहता है। पार्श्व ध्वनि, संगीत ध्वनि, आलाप, समूह ध्वनि आदि के माध्यम से वातावरण स्पष्ट करने में ध्वनि उपयोगी होती है। ध्वनि के साथ ही मौन के माध्यम से भी दृश्य को गंभीर और प्रभावपूर्ण बनाने में सहायता मिलती है। ध्वनि योजना में लघुपट निर्देशक को इस बात का विशेष ध्यान रखना पड़ता है कि ध्वनि फिल्मांकन में पूरक के रूप में ही प्रयुक्त हो और संप्रेषणीयता में बाधा उत्पन्न ना करें।

1.5.1.9 फिल्मांकन और संपादन

फिल्मांकन एवं संपादन लघुपट की सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। लघुपट के लिखित कथानक को दृश्य श्राव्य कृति में रूपांतरित करने का काम फिल्मांकन और संपादन के द्वारा पूरा होता है। संपादन से पूर्व संपूर्ण फिल्मांकित सामग्री कच्चा माल होती है। जिसे निर्देशक और संपादक अर्थात् एडिटर मिलकर व्यवस्थित स्वरूप प्रदान करते हैं। अतः फिल्मांकन और संपादन के अंतर्गत लिखित पटकथा के अनुरूप विभिन्न शॉट्स के माध्यम से संपूर्ण कथानक का फिल्मांकन किया जाता है तथा निर्देशक और संपादक संयुक्त रूप से

फिल्मांकित शॉट्स में काँट-छाँट करते हुए उन्हें एक व्यवस्थित क्रम में जोड़कर और ध्वनि प्रभावों से संयुक्त कर अंतिम रूप प्रदान करते हैं। निर्देशक अत्यंत कुशलता पूर्वक फ्रेम दर फ्रेम लघुपट को आकर्षक बनता है।

इन सारे चरणों से गुजर कर लघुपट की कथा का फिल्मांकन पूर्ण होता है।

1.6 कहानी का दृश्य विभाजन

लघुपट निर्माण के लिए कहानी लिखी जाने के पश्चात् उस कहानी को दृश्य रूप में लिखने की आवश्यकता होती है। क्योंकि उसी के आधार पर पूर्ण दृश्य को, घटनाओं को फिल्माया जाता है। इसके लिए सर्वप्रथम यह निश्चित किया जाता है कि यह कहानी लघुपट द्वारा किस प्रकार से कही जाएगी। कहानी को दृश्य में विभाजित करने के कई तरीके अपनाए जाते हैं। कहानी को दृश्य रूप में विभाजित करने का पहला तरीका यह है कि कहानी सीधे तरीके से प्रारंभ कर के कही जाती है और आगे बढ़ते हुए अंत में खत्म हो जाती है। यह तरीका सर्वोत्तम माना जाता है। दूसरा तरीका फ्लैश्बैक का है। कहानी दृश्य विभाजन की इस शैली में कहानी या तो बीच से आरंभ होती है, या लगभग अंत से। मध्य से आरंभ होने का तात्पर्य यह होता है कि, कहानी जिस बिंदु से आरंभ होती है वहां से आधी कहानी अतीत की ओर जाती है और शेष आधी कहानी उस बिंदु से आगे की ओर जाती है। जबकि लगभग अंत से आरंभ होने वाली कहानी अतीत की ओर ही चली जाती है। और उसमें प्रस्थान बिंदु के बाद घटनाओं की संख्या और लंबाई बहुत अधिक नहीं होती। ऐसी शैली में कहानी अतीत में कितनी देर और किस प्रकार चलेगी यह कहानी पर निर्भर करता है। दृश्य विभाजन में फ्लैशबैक शैली का प्रयोग विशेष उद्देश्य से विशेष परिस्थितियों में किया जाता है फ्लैशबैक के बारे में गुलजार जी ने कहा है ''फ्लैशबैक ज्यादा नाटकीय लगती है जो फालतू समय है, उसे आप छोटे कर लेते हैं। एक लड़की थी..फिर मैं बस में मिला और फिर एक-एक कदम के साथ कहानी आगे बढ़े, इससे अच्छा है कि आज से शुरू करें और फ्लैशबैक में पूरी बात कह फिर से वापस आ जाएं। फ्लैशबैक में कहानी ज्यादा छोटी और स्पष्ट हो जाती है। समय को छोटा किया जा सकता है। बड़े आराम से बड़ी आसानी से उसे किया जा सकता है।[1] ''तीसरी तकनीक में जिनके द्वारा कहानी कही जाती है इनमें प्रमुख है- दो पात्रों की बातचीत के माध्यम से सपने के माध्यम से, सूत्रधार द्वारा।

इसके अलावा कहानी को आगे बढ़ाने के दो अन्य तरीके हैं। पहले दृश्य द्वारा तथा दूसरा संवादों द्वारा। लघुपट में बात कहने के लिए दृश्य का निर्माण किया जाता है। यहां सिर्फ घटनाएं नहीं होती। पात्रों की मानसिक स्थितियों, उनके मन का अंतर्द्वंद्व व उनकी भावनाएं आदि सभी दृश्य में दिखाई जाती है। लघुपट दृकश्राव्य माध्यम होने के कारण यहां अधिकांश बातें दृश्य के माध्यम से कही जाती है जो कि इस विधा की बहुत बड़ी शक्ति है। साहित्य में एक भाव कई शब्दों के लिखने के बाद स्पष्ट होता है। किंतु लघुपट में वही भाव मात्र एक दृश्य से दर्शाया जा सकता है। जिसे चंद सेकंद में देखा जा सकता है और दर्शक अधिक आसानी से उसे समझ सकता है। इस प्रकार लघुपट की कहानी का दृश्य विभाजन किया जाता है।

1.7 कथा का संपादन

लघुपट निर्माण में कहानी का दृश्यांकन अर्थात् शूटिंग हो जाने के बाद संपादन अत्यंत महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। लघुपट के लिए लिखित कथानक को दृश्य-श्राव्य कृति का रूप फिल्मांकन और संपादन के द्वारा प्रदान किया जाता है। कहानी संपादन के बारे में सिने आलोचक विष्णु खरे ने कहा है- ''कथानक सिनेमा का साहित्य होता है। और जबकि हम छपे हुए साहित्य को अपने दिमागी पर्दे पर देखते हैं।सिनेमा अपने साहित्य को हमारी आंखों के सामने पर्दे पर मूर्तित कर देता है। उसमें शेष सारी कलाएं समाहित कर देता है।''[2]

संपादन से पूर्व संपूर्ण दृश्यांकित अर्थात् शूटिंग की हुई सामग्री अव्यवस्थित कच्चा माल होती है। जिसे निर्देशक और संपादक मिलकर संपादन की मेज पर व्यवस्थित रूप प्रदान करते हैं। लघुपट की कहानी का दृश्यांकन और संपादन के अंतर्गत लिखित पटकथा के अनुरूप समग्र क्रिया-व्यापार को नियंत्रित करते हुए विभिन्न शॉट्स के माध्यम से संपूर्ण कथानक का दृश्यांकन किया जाता है। निर्देशक और संपादक संयुक्त रूप से दृश्यंकित अर्थात् शूट किए हुए शॉट्स में काँट-छाँट करते हुए उन्हें एक व्यवस्थित क्रम में जोड़ देते हैं। उसमें ध्वनि तथा पार्श्व प्रभावों से संयुक्त करके अंतिम रूप देते हैं। दृश्याकंन और संपादन की प्रक्रिया के अंतर्गत दृश्य-योजना, प्रकाश-योजना, ध्वनि-योजना, कार्य-व्यापार योजना, और शॉट-योजना आदि विभिन्न चरण आते हैं। निर्देशक अत्यंत कुशलतापूर्वक इन तत्त्वों को नियंत्रित करता है और फ्रेम दर फ्रेम प्रभावपूर्ण संपादन करता है।

संपादन के अंतर्गत आनेवाले कार्य-व्यापार योजना में लघुपट निर्देशक यह ध्यान रखता है कि किसी भी दृश्य को अच्छे से अच्छे ढंग से कैसे अभिव्यक्त किया जा सकता है। लघुपट के घटनाक्रम की कार्य-व्यापार योजना में विभिन्न दृश्यों को विभिन्न तकनीक और फॉर्मुलाज के द्वारा फिल्माया जा सकता है। रूपक निर्माण के माध्यम से किसी दृश्य को सीधे प्रस्तुत न करते हुए उसके लक्षण अर्थ को प्रतिक रूप में प्रस्तुत किया जाता है जिसे 'रूपक' कहते हैं। रूपक शब्द का अर्थ सदृश्य मूलक प्रतिकृति है। विभिन्न मनोभावों और क्रिया विधानों को जब पर्दे पर सीधा दिखाना संभव अथवा प्रभावी न हो तब उन दृश्यों को सदृश्य मूलक प्रति के माध्यम से स्पष्ट किया जाता है। जैसे चुंबन और यौन-संबंध के दृश्य को फूलों के अथवा पक्षियों के मिलन के रूपक में दर्शाया जाता है।

कथानक की घटनाओं को सजीव रूप प्रदान करने के लिए लघुपट निर्देश कार्य व्यापार संरचना द्वारा पात्रों की प्रत्येक क्रियाकलाप को संचालित तथा निर्धारित करता है। पात्रों की प्रत्येक हरकत, गति, भाव संप्रेषण, मनःस्थिति आदि को पात्रों के कार्य व्यापार के द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। कार्य व्यापार के द्वारा पात्रों के व्यक्तित्व तथा स्वभाव को भी उभारा जाता है। कार्य व्यापार को अनेक तत्त्व गतिशील बनाते हैं। जिन में रूपक निर्माण बिम्ब-सृष्टि, फ्लैशबैक, फ्लैश फॉरवर्ड, मोंटेज, कट आदि का योग रहता है। इस प्रकार लघुपट निर्देशक संपादक से मिलकर शूटिंग के बाद संपादन का काम पूर्ण करता है।

1.8 कैमरा और उसका महत्त्व

लघुपट एक दृश्य श्राव्य कृति होती है। जिसमें दो मूल तत्त्व होते हैं। पहला श्राव्य और दूसरा दृश्य। लघुपट लिखित या रिकॉर्ड कहानी को या विषय को मुख्य रूप से चित्रों, फिल्म के हिस्सों अर्थात् दृश्यों के माध्यम से संप्रेषित करता है जो श्राव्य घटक द्वारा बना होता है। लघुपट बनाते समय श्राव्य भाषा की समझ होना आवश्यक होता है। इसी प्रकार दृश्य भाषा की भी अपनी पूरी प्रणाली होती है जो आमतौर पर वाक्य रचना, और अभिनय पर निर्भर होती है । शॉट्स और कैमरे की गति महत्त्वपूर्ण तत्व है। शब्द लिखित भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है। अक्षरों का संग्रहण करने से एक शब्द बनता है, जिसमें कुछ अर्थ और भाव होते हैं। इसी तरह शॉट दृश्य भाषा की सबसे छोटी सार्थक इकाई होती है। यह फ्रेम का एक संग्रहण होता है। असल में फ्रेम एक स्थिर और अचल छवि होती है। जिसे कैमरा द्वारा रिकॉर्ड किया जाता है। कई फ्रेमों और छवियों को मिलाकर एक शॉट बनता है। लघुपट निर्माण में कैमरा के द्वारा निरंतर रिकॉर्डिंग करके शॉट के माध्यम से कहानी सुनाई जाती है। उचित शॉट का प्रयोग करके दर्शकों को लघुपट से जोड़ा जाता है।

लघुपट में शॉट योजना का विशिष्ट महत्व है। लघुपट कैमरा की भाषा में अपनी कहानी सुनाता है। लघुपट में हम पात्रों को जिस प्रकार हलचल करते हुए देखते हैं, वह वास्तव में अचल चित्र होते हैं। जिन्हें सेकंद के 24 वें भाग में बदल कर उनके चल होने का भ्रम उत्पन्न किया जाता है। शूटिंग के दौरान पात्र हलचल करते हैं और कैमरा तीव्र गति से उनके चित्र खींचता है। प्रत्येक चित्र में एक फ्रेम निर्धारित रहती है। निर्देशक के लिए फ्रेम का आकार और संचालन अत्यंत आवश्यक हो जाता है। क्योंकि यही फ्रेम बाद में स्क्रीन पर तैयार होती है। फ्रेम और कैमरा संचालन को निर्धारित करने को ही शॉट योजना कहा जाता है। कैमरा एक बार में जितनी रिकॉर्डिंग करता है उसे एक शॉट कहते हैं। लघुपट को प्रभावी बनाने के लिए शॉट लेने की बहुत सी विधियां निर्धारित की गई है। लघुपट निर्माण में कैमरे का महत्त्व निम्न प्रकार के शॉट लेने के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है। अंत में लघुपट निर्माण में कॅमेरा का प्रयोग करके कौन से शॉट लिए जाते हैं यह सीखेंगे।

1.8.1 एक्सट्रीम क्लोज शॉट

एक्सट्रीम क्लोज शॉट में कैमरा से वस्तु अथवा पात्र को अत्यंत नजदीक से फोकस करके फिल्माया जाता है।पात्र के शरीर के किसी हिस्से को, चेहरे को, आँख, होंठ आदि का चित्रण इस प्रकार के शॉट में लिया जाता है। भावनाओं को व्यवस्थित दिखाने के लिए यह शॉट लिया जाता है।

एक्सट्रीम क्लोज शॉट का उदाहरण

1.8.2 क्लोज शॉट

क्लोज शॉट में पात्र के पूरे चेहरे को पूर्ण फ्रेम में फिल्माया जाता है। लघुपट में काम करनेवाले पात्र के मनोभाओं को निकटता से दिखाने के लिए इस शॉट का प्रयोग किया जाता है।

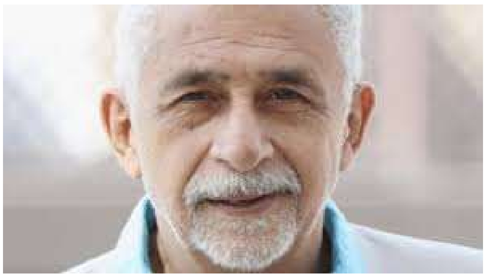

क्लोज शॉट का उदाहरण

1.8.3 मिड शॉट

शूटिंग करते समय पात्र के सिर से लेकर शरीर के मध्य हिस्से तक का भाग मिड शॉट के अंतर्गत फिल्माया जाता है। जब हम सामान्य वार्तालाप करते हैं तब हम सामने वाले व्यक्ति के केवल चहरे से लेकर कंधों तक के भाग पर ध्यान देंगे।यही कैमरा का मनोविज्ञान ध्यान में रखकर लघुपट निर्माण करते समय मिड शॉट का प्रयोग किया जाता है।

मिड शॉट का उदाहरण

1.8.4 मिड लाँग शॉट

मिड लाँग शॉट शूट करते समय लघुपट में काम करनेवाले पात्रों के सिर से लेकर पैरों तक के भाग का फिल्मांकन किया जाता है। शूटिंग करते समय लघुपट में तीन-चार पात्रों के वार्तालाप को फिल्माने की लिए भी मिड लाँग शॉट का प्रयोग किया जाता है।

मिड लाँग शॉट का उदाहरण

1.8.5 लाँग शॉट

लघुपट के किसी दृश्य में काम करनेवाले पात्रों को पूरी तरह से फिल्माने के लिए लाँग शॉट का प्रयोग किया जाता है। लाँग शॉट में पात्रों को परिवेश के साथ सिर से लेकर पैरों तक फिल्माया जाता है।

लाँग शॉट का उदाहरण

1.8.6 एक्सट्रीम लाँग शॉट

लघुपट में पात्रों की दूरी और परिवेश को दिखाने के लिए एक्सट्रीम लाँग शॉट का प्रयोग किया जाता है। दृश्य के पूरे परिवेश को दिखने के लिए यह महतपूर्ण शॉट होता है। मेला, समारोह, त्यौहार, भीड़, बाजार जैसे दृश्यों को एक्सट्रीम लाँग शॉट के माध्यम से फिल्माया जाता है।

एक्सट्रीम लाँग शॉट का उदाहरण

1.8.7 मास्टर शॉट

मास्टर शॉट एक ग्रुप शॉट होता है। लघुपट के किसी दृश्य में उपस्थित सभी पात्रों को एक्सट्रीम लाँग शॉट में फिल्माया जाता है। किसी के क्लोज शॉट्स या मिड शॉट्स को एक संपूर्ण दृश्य में दिखाने के लिए उसके पूर्व, मध्य या अंत में मास्टर शॉट लिया जाता है।

मास्टर शॉट का उदाहरण

1.8.8 टू शॉट

लघुपट को फिल्माते समय दो पात्रों को दृश्य में दिखने के लिए टू शॉट का प्रयोग किया जाता है। लघुपट में इस शॉट का अधिक प्रयोग किया जाता है। इस शॉट के माध्यम से पात्र दर्शकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

टू शॉट का उदाहरण

1.8.9 ओव्हर द शोल्डर शॉट

ओव्हर द शोल्डर शॉट में एक पात्र के कंधे पर से सामने के दूसरे पात्र को फिल्माया जाता है।

ओव्हर द शोल्डर शॉट का उदाहरण

1.8.10 हेड अँड शोल्डर शॉट

यह एक मिड क्लोज शॉट के अंतर्गत आनेवाला शॉट होता है। इस शॉट में पात्र के सिर से लेकर कंधे तक के भाग को फिल्माया जाता है।

हेड अँड शोल्डर शॉट उदाहरण

1.8.11 पॉइंट ऑफ व्हीव

जब किसी दृश्य को उसी दृश्य के एक या अनेक पात्रों को दर्शाने के लिए पॉइंट ऑफ व्हीव शॉट का प्रयोग किया जाता है।

पॉइंट ऑफ व्हीव शॉट का उदाहरण

1.8.12 मिरर शॉट

लघुपट में प्रभाव निर्माण करने के लिए आईने में प्रतिबिंब दिखाकर मिरर शॉट शूट किया जाता है।

मिरर शॉट का उदाहरण

1.8.13 पॅन शॉट

पॅनोरमा शॉट को ही संक्षिप्त रूप में पॅन शॉट कहा जाता है। इसमे कॅमेरा को दायें या बायें घुमाकर पॅनोरमा शॉट शूट किया जाता है।

पॅन शॉट उदाहरण

1.8.14 टिल्ट शॉट

टिल्ट शॉट लेते समय कॅमेरा ऊपर से नीचे या नीचे से ऊपर घुमाया जाता है।

टिल्ट शॉट का उदाहरण

1.8.8 ट्रॉली शॉट

जब कॅमेरा को ट्रॉली या डोली/डॉली में रखकर उसे घुमाकर दृश्य को शूट किया जाता है तब उस शॉट को ट्रॉली शॉट कहा जाता है। इसे जब आगे पीछे घुमाया जाता है तब पात्र को दूर या नजदीक से शूट करने में कोई दिक्कत नहीं होती।

ट्रॉली शॉट का उदाहरण

1.8.9 एरियल शॉट

जब कॅमेरा को हेलिकॉप्टर या क्रेन में रखकर उस कॅमेरा के माध्यम से शॉट लिया जाता है तब उसे एरियल शॉट कहा जाता है।

एरियल शॉट का उदाहरण

1.8.10 हाई एंगल शॉट

हाई एंगल शॉट में कॅमेरा को एक ऊंचाई पर रखा जाता है। ऊपर से नीचे की ओर शॉट को फिल्माया जाता है। इस शॉट का प्रयोग करने पर पात्र कम ऊंचाई का दिखाई देता है। लघुपट में जब किसी पात्र को तुच्छ भाव से दर्शाना होता है तब इस शॉट का प्रयोग किया जाता है।

हाई एंगल शॉट का उदाहरण

1.8.11 लो एंगल शॉट

लघुपट में जब पात्र को प्रभावी दिखाना होता है तब लो एंगल शॉट का प्रयोग किया जाता है। इस शॉट में कॅमेरा नीचे से ऊपर की ओर प्रयोग में लेकर दृश्य को फिल्माया जाता है।

लो एंगल शॉट का उदाहरण

1.8.12 डच एंगल शॉट

इस शॉट में शूटिंग करते समय पात्र को ४५ डिग्री के कोण में शूट किया जाता है। इस शॉट में पात्र को तिरछा शूट किया जाता है।इस शॉट को ऑबलिक शॉट भी कहा जाता है।

डच एंगल शॉट का उदाहरण

इस प्रकार कॅमेरा का प्रयोग कर के विभिन्न शॉट द्वारा लघुपट के विषय को दर्शकों तक अत्यंत प्रभावी माध्यम से पहुंचाया जाता है।

1.9 पारिभाषिक शब्द

1. **स्क्रिप्ट –** पटकथा / फिल्माने के लिए लिखी कहानी
2. **स्टोरीबोर्ड** – चित्रों की शृंखला
3. **प्लॉट** – कथानक
4. **की लाइट** – पात्रों पर पड़नेवाली रोशनी
5. **शॉट** – कॅमेरा से फिल्माया गया दृश्य

1.10 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

अ) रिक्त स्थानों की पूर्ति पर्यायवाची कीजिए।

i) 1 घंटे या 40 मिनट से कम समय की फिल्म को .... कहा जाता है।

(अ) विज्ञापन (ब) डॉक्यूमेंटरी (क) लघुपट (ड) कमर्शियल फिल्म

ii) किसी विषय को कम से कम समय में दर्शकों के सामने प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने का सक्षम माध्यम........ है।

(अ) पटकथा (ब) लघुपट (क) नाटक (ड) फिल्म

iii) ....के माध्यम से सामाजिक विषयों को बड़े ही प्रभावी तरीके से प्रस्तुत किया जाता है।

(अ) लेखक (ब) समाजसेवक (क) नाटक (ड) लघुपट

iv) ....को संस्कारपट भी कहा जा सकता है।

(अ) लघुपट (ब) सिनेमा (क) नाटक (ड) परिवार

v) विश्वभर में फिल्मों के प्रस्तुतीकरण की शुरुवात ....से हो गई थी।

(अ) 1924 (ब) 1857 (क) 1894 (ड) 1910

vi) सन् 1920 ई. के बाद टिकट लगाकर ....के कॉमेडी लघुपट प्रदर्शित हुये।

(अ) वर्ल्ड डिज्नी (ब) वार्नर ब्रदर्स (क) चार्ली चैपलिन (ड) मिकी माउस

vii) लघुपट आमतौर पर दर्शकों तक पहुंचने के लिए ....पर निर्भर रहते है।

(अ) डिस्ट्रीब्यूटर (ब) फिल्म महोत्सव (क) निर्देशक (ड) सिनेमा घर

viii) लघुपट........... के लिए फिल्म क्षेत्र में पहला चरण होता है।

(अ) नये फिल्म निर्माता (ब) कलाकार (क) लेखक के लिए (ड) सिनेमा

ix) लघुपट निर्माण के लिए सबसे पहले एक ....की आवश्यकता होती है।

(अ) विचार (ब) गीत (क) हिरो (ड) निर्देशक

x) आमतौर पर लेखन का 01 पृष्ठ लघुपट के ......मिनट के बराबर होता है।

(अ) 02 (ब) 05 (क) 10 (ड) 01

xi) स्टोरी बोर्ड ....शृंखला होती है।

(अ) चित्रों (ब) कहानी (क) संवाद (ड) पृष्ठों

xii) स्टोरी बोर्ड से अभिनेताओं को.......... समझाना आसान हो जाता है।

(अ) विषय (ब) कहानी (क) दृश्य (ड) संवाद

xiii) कथा का केंद्रबिंदु ....होता है।

(अ) कथानक (ब) हीरो (क) कैमरा (ड) लेखक

xiv) ....के माध्यम से कथावस्तु को गति प्राप्त होती है।

(अ) संगीत (ब) कैमरा (क) संवादों (ड) गीतों

xv) ....लाइट, पात्र या चरित्र पर सीधी पड़ती है।

(अ) की लाइट (ब) फील लाइट (क) बैक लाइट (ड) वॉर्म लाइट

xvi) लघुपट में बात कहने के लिए ....का निर्माण किया जाता है।

(अ) बिम्ब (ब) दृश्य (क) पटकथा (ड) चित्र

xvii) .... दृश्य भाषा की सबसे छोटी सार्थक इकाई होती है

(अ) शॉट (ब) सिनेमा (क) लघुपट (ड) गीत

xviii)कई फ्रेमों और छवियों को मिलाकर एक ....बनता है।

(अ) अल्बम (ब) शॉट (क) सिनेमा (ड) नाटक

xix) कैमरा एक बार में जितनी रिकॉर्डिंग करता है उसे एक.....कहते हैं।

(अ) मेमरी (ब) रील (क) शॉट (ड) फिल्म

ब) उचित मिलान कीजिए।

अनु. क्र.	अ	अनु. क्र.	ब
1	एक्सट्रीम क्लोज शॉट	अ	नीचे से ऊपर की ओर दृश्य को फिल्माना
2	मिड शॉट	ब	कॅमेरा को हेलिकॉप्टर या क्रेन में रखकर फिल्माना
3	मास्टर शॉट	क	एक पात्र के कंधे पर से सामने के दूसरे पात्र को फिल्माना
4	टू शॉट	ड	कॅमेरा ऊपर से नीचे या नीचे से ऊपर घुमाकर फिल्माना
5	ओव्हर द शोल्डर शॉट	इ	दो पात्रों को दृश्य में फिल्माना
6	टिल्ट शॉट	य	ग्रुप शॉट
7	एरियल शॉट	र	सिर से लेकर शरीर के हिस्से को फिल्माना
8	लो एंगल शॉट	ल	पात्र के शरीर के हिस्से को, चेहरे को, आँख, होंठ आदि को फिल्माना

1.11 सारांश

- लघुपट एक मोशन पिक्चर होती है जो एक फीचर फिल्म से छोटी होती है।
- भारत में एक घंटे से अधिक समय वाली फिल्म को फीचर फिल्म माना जाता है और उससे कम समय की फिल्म को लघुपट माना जाता है।
- 1 घंटे से कम समय की कुछ मिनट की फिल्म लघुपट है।
- लघुपट में स्थानीय विषयों से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर के विषय प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किए जाते हैं।
- लघुपट के माध्यम से सामाजिक विषयों को बड़े ही प्रभावी तरीके से प्रस्तुत किया जाता है।
- लघुपटों को संस्कारपट भी कहा जा सकता है।
- जिस प्रकार से कोई बड़े बजेटवाली फिल्म बनाई जाती है उसी प्रकार से लघुपट का निर्माण किया जाता है।
- लघुपट निर्माण के लिए सबसे पहले एक विचार की आवश्यकता होती है। उस विचार के अनुसार कहानी का चयन करना पड़ता है।
- लघुपट के लिए कहानी को पटकथा के रूप में बदलना बहुत महत्वपूर्ण होता है।

- लघुपट के लिए कहानी की लंबाई को ध्यान में रखकर स्क्रिप्ट अर्थात पटकथा तैयार करनी पड़ती है।
- स्टोरी बोर्ड चित्रों की एक शृंखला होती है। इस शृंखला में चित्रों के द्वारा यह बताया जाता है कि अगले दृश्य में क्या होगा।
- लघुपट का विषय, स्क्रिप्ट इससे मेल खाने के लिए लघुपट फिल्माने (शूटिंग) से पूर्व स्थान को ढूंढना आवश्यक होता है।
- लघुपट स्क्रिप्ट को जिन दृश्यों में विभाजित किया जाता है उन दृश्यों के अनुसार काम करनेवाले कलाकारों से दृश्य अभिनय का अभ्यास कराया जाता है।
- लघुपट के पात्रों की वेशभूषा महत्वपूर्ण होती है।
- लघुपट आकार में छोटा होता है इसलिए कभी कभी कहानी दृश्य से कम महत्व रखती है। ऐसे में दृश्य को फिल्माने में ऐसे स्थान चुनने पड़ते हैं जो देखने में प्रभावशाली हों।
- शूटिंग करते समय सूर्य के प्राकृतिक प्रकाश को नियंत्रित करने के लिए प्रकाश परावर्तकों का प्रयोग किया जाता है।
- इनडोअर शूटिंग में तीन मुख्य लाइट्स का प्रयोग किया जाता है। की लाइट, फील लाइट और बैक लाइट।
- की लाइट पात्र या चरित्र पर सीधी पड़ती है और उसे दृश्यमान बनाती है। की लाइट से उत्पन्न अवांछित छाया को हटाने के लिए फील लाइट का प्रयोग किया जाता है। फिल लाइट का की लाइट की विपरीत दिशा में प्रयोग किया जाता है।
- लघुपट के फिल्मांकन में ध्वनि योजना का विशेष योगदान रहता है। पार्श्व ध्वनि, संगीत ध्वनि, आलाप, समूह ध्वनि आदि ध्वनि उपयोगी होती है।
- लघुपट के लिखित कथानक को दृश्य-श्रव्य कृति में रूपांतरित करने का काम फिल्मांकन और संपादन के द्वारा पूरा होता है।
- कहानी को दृश्य में विभाजित करने के कई तरीके अपनाए जाते हैं।
- कहानी को दृश्य रूप में विभाजित करने का पहला तरीका यह है कि कहानी सीधे तरीके से प्रारंभ कर के काही जाती है और अंत में खत्म हो जाती है। यह तरीका सर्वोत्तम माना जाता है।
- दूसरा तरीका फ्लैश्बैक का है।
- लघुपट में लिखित कथानक को दृश्य-श्रव्य कृति का रूप फिल्मांकन और संपादन के द्वारा प्रदान किया जाता है।

- संपादन से पूर्व संपूर्ण दृश्यंकित अर्थात शूटिंग की हुई सामग्री अव्यवस्थित कच्चा माल होती है। जिसे निर्देशक और संपादक मिलकर व्यवस्थित रूप प्रदान करते हैं।
- लघुपट निर्माण में कैमरा के द्वारा निरंतर रिकॉर्डिंग करके शॉट के माध्यम से कहानी सुनाई जाती है।
- शूटिंग के दौरान पात्र हलचल करते हैं और कैमरा तीव्र गति से उनके चित्र खींचता है।
- फ्रेम और कैमरा संचालन को निर्धारित करने को ही शॉट योजना कहा जाता है। कैमरा एक बार में जितनी रिकॉर्डिंग करता है उसे एक शॉट कहते हैं।
- लघुपट को प्रभावी बनाने के लिए कैमरा से विभिन्न शॉट लिए जाते हैं।

1.12 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

अ) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

i) क – लघुपट

ii) ब – लघुपट

iii) ड – लघुपट

iv) अ – लघुपट

v) क – 1894

vi) क – चार्ली चैप्लिन

vii) ब– फिल्म महोत्सव

viii) अ – नये फिल्म निर्माता

ix) अ – विचार

x) ड – 01

xi) अ – चित्रों

xii) क – दृश्य

xiii) अ – कथानक

xiv) क – संवादों

xv) अ – की लाइट

xvi) ब – दृश्य

xvii) क – शॉट

xviii) ब – शॉट

xix) क– शॉट

ब) उचित मिलान कीजिए।

1) एक्स्ट्रीम क्लोज शॉट– (ल) पात्र के शरीर के हिस्से को, चेहरे को, आँख, होंठ आदि को फिल्माना

2) मिड शॉट – (र) दो पात्रों को दृश्य में फिल्माना

3) मास्टर शॉट– (य) ग्रुप शॉट

4) टू शॉट – (इ) दो पात्रों को दृश्य में फिल्माना

5) ओव्हर द शोल्डर शॉट – (क) एक पात्र के कंधे पर से सामने के दूसरे पात्र को फिल्माना

6) टिल्ट शॉट - (ड) कॅमेरा ऊपर से नीचे या नीचे से ऊपर घुमाकर फिल्माना

7) एरियल शॉट - (ब) कॅमेरा को हेलिकॉप्टर या क्रेन में रखकर फिल्माना

8) लो एंगल शॉट - (अ) नीचे से ऊपर की ओर दृश्य को फिल्माना

1.13 क्षेत्रीय कार्य

1) ''पावसाचा निबंध'' नागराज मंजूले का लघुपट देखें।

2) शैलेश मटियानी की कहानी पर नागराज मंजूले द्वारा बनाया गया लघुपट ''तार'' देखें।

3) यूट्यूब पर उपलब्ध हिंदी लघुपटों का अध्ययन कीजिए।

1.14 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1) https://www.wikihow.com/Make-a-Short-Film ब्लॉग पढ़ें।

2) https://www.wikihow.com/Make-a-Short-Film ब्लॉग पढ़ें।

संदर्भ ग्रंथ

१. सिनेमा की सोच - अजय ब्रह्मात्मज - वाणी प्रकाशन

२. सिनेमा पढने के तरीके - विष्णु खरे - नीलकंठ प्रकाशन

३. आइडिया से परदे तक रामकुमार सिंह, सत्यांशु सिंह - राजकमल प्रकाशन कैसे सोचता है फिल्म का लेखक

❑❑❑

इकाई–2
पटकथा लघुपट

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना : पटकथा लघुपट साहित्य और संस्कृति

2.3 विषय विवेचन

   2.3.1 साहित्य का स्वरूप

   2.3.2 साहित्य की परिभाषा

   2.3.3 साहित्य के तत्त्व

2.4 संस्कृति का स्वरूप

   2.4.1 संस्कृति की परिभाषाएँ

   2.4.2 संस्कृति के तत्त्व

2.5 पटकथा : साहित्य और संस्कृति

2.6 लघुपट : साहित्य और संस्कृति

2.7 साहित्य और/सौंदर्य बोध पटकथा का

2.8 साहित्य और लघुपट सौंदर्य बोध

2.9 पटकथा और लघुपट शिल्प एवं अन्य पक्ष

2.10 साहित्य विधाओं का दृश्य माध्यमों में रुपांतरण

2.11 पारिभाषिक शब्द

2.12 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

2.13 सारांश

2.14 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

2.15 क्षेत्रीय कार्य

2.16 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

2.17 संदर्भ ग्रंथ

2.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के पश्चात आप जान सकेंगे कि :

- साहित्य और संस्कृति किसे कहते हैं?
- लघुपट का साहित्य और संस्कृति से क्या संबंध है?
- लघुपट के सौंदर्यबोध को समझ सकेंगे।
- लघुपट के शिल्प को समझ सकेंगे।
- साहित्य विधाओं के दृश्य माध्यमों में रूपांतरण को समझ सकेंगे।

2.2 प्रस्तावना : पटकथा लघुपट साहित्य और संस्कृति –

सन् 1913 ई. यह साल साहित्य और सिनेमा दोनों क्षेत्रों के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इस साल में साहित्य के क्षेत्र का उच्च 'नोबेल पुरस्कार' रवींद्रनाथ टैगोर को मिला। तो वहीं, दादा साहब फाल्के ने भी इसी वर्ष 'राजा हरिश्चंद्र' फिल्म बनाकर सिनेमा की शुरुवात की। 'नोबेल पुरस्कार' मिलने के कारण देश का नाम विदेशों में पहुँचने के साथ ही देश का साहित्य और संस्कृति का परिचय भी विदेशों को हुआ। साहित्य समाज का अभिन्न अंग है। समाज में जो कुछ घटित होता है उसे ही शब्द रूप में हम साहित्य में देखते हैं। समाज में घटित होनेवाली यही घटनाएं जब कम समय में दृश रूप में हमारे सामने प्रस्तुत की जाती है। तो वह माध्यम लघुपट होता है। इस प्रकार लघुपट, साहित्य और संस्कृति का आपसी संबंध है।

2.3 विषय विवेचन

साहित्य और लघुपट दोनों कला के ही दो अलग-अलग रूप हैं। साहित्य में शब्दों का महत्व होता है, तो लघुपट दृश्य-श्राव्य माध्यम है। साहित्यकार को साहित्य लिखते समय कागज और कलम की आवश्यकता होती है। लेकिन लघुपट निर्माण करते समय लघुपट निर्माता को लघुपट के कला पक्ष के साथ-साथ तकनीकी पक्ष का ज्ञान भी अवश्यक होता है। लघुपट निर्माण को एक लंबी प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। संक्षेप में कहें तो साहित्य और लघुपट कला और मनोरंजन जगत के दो महत्वपूर्ण माध्यम है। साहित्यकार और लघुपट दिग्दर्शक समाज में ही जन्म लेते हैं। समाज में ही पलते हैं और समाज की परिस्थितियों से प्रभावित होकर, व्यथित होकर अपना – अपना सृजन करते रहते हैं। साहित्यकार और लघुपट दिग्दर्शक दोनों का धर्म है सामाजिक, सांस्कृतिक हितों की रक्षा करना। साहित्य और लघुपट दोनों में ही जीवन उपयोगी उपदेश देने की शक्ति होती है।

2.3.1 साहित्य का स्वरूप

साहित्य संस्कृत भाषा का शब्द है। साहित्य शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'सहित' शब्द से हुई है। सहित+यत् के योग से साहित्य शब्द बना है। इसका अर्थ है शब्द और अर्थ का साथ होना। इस प्रकार शब्द और अर्थ जहाँ साथ होते हैं वह साहित्य है ऐसा हम कह सकते हैं। आधुनिक युग में साहित्य शब्द अंग्रेजी के लिटरेचर शब्द की भाँति प्रयुक्त होता है। यह शब्द व्यापक अर्थ में समस्त लिखित एवं मौखिक रचनाओं के अर्थ में प्रयुक्त होता है। पाश्चात्य विद्वान डी क्विंसी लिखते हैं, कि ''जहाँ ज्ञान के साहित्य का लक्ष्य सीखना होता है, वहाँ भावना के साहित्य का लक्ष्य भावनाओं को जागृत करना होता है। एक में तथ्य और उपदेशों की प्रधानता होती है जबकि दूसरे में कला और सौंदर्य की अभिव्यक्ति होती है।''[1] इस प्रकार भावना का साहित्य ही गद्य और पद्य में लिखा गया है। भाव भावनाओं का साहित्य सभी प्रकार की कलापूर्ण रचनाओं, कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, नाटक आदि से संबंधित है।

2.3.2 साहित्य की परिभाषा

अनेक विद्वानों ने साहित्य की परिभाषा की है जो निम्नलिखित है-

भामह – ''शब्दार्थों सहितौ काव्यम्''

अर्थात शब्द और अर्थ का संयोग काव्य है। इस परिभाषा में काव्य के अतिरिक्त शास्त्र, इतिहास, वार्तालाप आदि सभी का समावेश किया गया है। यह साहित्य की अत्यंत व्यापक परिभाषा है।

आचार्य विश्वनाथ – ''वाक्य रसात्मकं काव्यमं'' अर्थात् रस युक्त वाक्य ही काव्य कहलाता है।

पंडितराज जगन्नाथ – ''रमणीयार्थप्रतिपादक : शब्दः काव्यम्''

अर्थात रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करनेवाला शब्द काव्य कहलाता है।

दण्डी– ''काव्य शोभा करान धर्मान अलंकारान प्रचक्षते''

अर्थात काव्य को शोभा प्रदान करनेवाले धर्म अलंकार हुए।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल – ''कविता जीवन और जगत् की अभिव्यक्ति है।''

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी– ''अन्तःकरण की वृत्तियों के चित्र का नाम कविता है।''

जयशंकर प्रसाद– ''काव्य आत्मा की संकल्पात्मक अनुभूति है।'' इन परिभाषाओं के साथ ही कुछ पाश्चात्य विद्वानों द्वारा की गयी परिभाषाओं का अनुवाद निम्नलिखित है।

कॉलरीज– सर्वोत्तम शब्द अपने सर्वोत्तम क्रम में कविता होती है।

वड्र्सवर्थ– ''कविता प्रबल अनुभूतियों का सहज उद्रेक है।''

मैथु आरनॉल्ड – ''कविता मूलरूप में जीवन की आलोचना है।''

इस प्रकार संस्कृत, हिंदी तथा अंग्रेजी विद्वानों ने साहित्य की परिभाषाएँ दी है। ये परिभाषाएँ परिपूर्ण नहीं है क्योंकि इन परिभाषाओं में केवल काव्य की चर्चा की गयी है। साहित्य का स्वरूप इनसे स्पष्ट नहीं होता। ये परिभाषाएँ साहित्य के प्रति विभिन्न दृष्टिकोणों एवं पक्षों को दर्शाती हैं, इस कारण हमें साहित्य के तत्वों को समझना आवश्यक हो जाता है।

2.3.3 साहित्य के तत्त्व

विद्वानों द्वारा साहित्य के निम्नलिखित चार तत्त्व बताए गये हैं – 1) भाव 2) कल्पना 3) बुद्धि 4) शैली

1) भाव

'भाव' साहित्य का अत्यंत महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। यह साहित्य का सर्व प्रमुख तत्त्व माना गया है। 'भाव' तत्व ही साहित्य में सर्वाधिक प्रभाव उत्पन्न करता है, इसीलिए भाव को साहित्य की 'आत्मा' भी कहा गया है। भाव पाठक और श्रोता का संस्कार करता है। शब्द, अर्थ और कल्पना भाव को साकार रूप देते हैं। साहित्य के कम शब्दों में गहरा भाव व्यक्त किया जाता है। बिहारी के दोहों में व्यक्त भावों को देखकर ही कहा जाता है, ''सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर। देखन में छोटे लगै, घाव करें गंभीर।'' साहित्य का सर्व प्रमुख लक्षण रागात्मकता है,और इसका चित्रण भावों के चित्रण द्वारा ही होता है। साहित्य में सूक्ष्म भाव-भावनाओं का अधिक महत्व होता है। साहित्य का प्रमुख लक्ष्य पाठकों के हृदय को भावनाओं से भर देना होता है। इस लक्ष्य की पूर्ति भावों के चित्रण द्वारा ही संपन्न होती है।

2) कल्पना

'कल्पना' साहित्य का दूसरा तत्त्व है। कल्पना शक्ति के बल पर ही साहित्य में भावनाओं का चित्रण किया जाता है। रूप-सृष्टि करनेवाली शक्ति कल्पना है। जीवन के विविध दृश्यों को कल्पना के बल पर ही प्रस्तुत किया जाता है। कल्पना के बल पर ही कवि या साहित्यकार दूसरों के सुख-दुख का चित्रण ऐसे करता है कि वह अपनी अनुभूति लगने लगती है। साहित्यकार अप्रत्यक्ष घटना को प्रत्यक्ष रूप में, अतीत की घटना को वर्तमान में, और सूक्ष्म भावों को स्थूल रूप में प्रस्तुत कर देता है। यह कार्य केवल कल्पना-शक्ति के बल पर ही होता है। एक साधारण सी घटना में कल्पना के द्वारा ऐसा रंग भर दिया जा सकता है कि वह हमारे हृदय को आकर्षित कर लें। साहित्य में सौंदर्य और चमत्कार कल्पना के द्वारा ही होता है। गणपतिचन्द्र गुप्त साहित्यिक निबंध में कहते हैं- ''न जाने हमारे कितने कवियों ने नारी की सूक्ष्म छवि के अंकन में अपनी अद्भुत कल्पना का परिचय दिया है। सुंदरियों के सामान्य रूप-वैभव को उन्होंने चंद्र की ज्योत्स्ना, दामिनी की चमक, रजनी की शीतलता, ओस की तरलता, पुष्प की प्रफुल्लता आदि से समन्वित करके अलौकिकता प्रदान कर दी है। यही नहीं संसार के असंख्य निर्जीव पदार्थों और प्रकृति के अगणित चेतना विहीन रूपों को भी कवि की कल्पना ने सजीवता और चेतना प्रदान कर दी है। धरती की गोद में कल-कल प्रवाहिनी सरिता को कालिदास की कल्पना ने एक ऐसी मद- विव्हला रमणी का रूप प्रदान कर दिया जिसके अगाध जल रूपी नितम्बों से लहरों के रूप में उद्वेलित वस्त्र बार-बार खिसका जा रहा था।

भृतहरी की कल्पना नारी के उरोज द्वय में एक ऐसी दुर्गम घाटी की रचना कर लेती है, जहाँ समररूपी तस्कर विराजमान है और जो मनरूपी पथिकों का सर्वस्व लूट लेता है। और आगे चलकर केशव, बिहारी, पद्माकर, भारतेंदु, प्रसाद, पंत, महादेवी की कल्पना जो चमत्कार दिखाती है उसका तो कहना ही क्या! वस्तुतः प्रत्येक युग और प्रत्येक भाषा का साहित्य कल्पना–शक्ति की अपूर्व क्षमता, अद्भुत वैभव और अलौकिक चमत्कार की कहानियों से भरा पड़ा है।''[2] भाव को साहित्य जगत का सम्राट और कल्पना को उसकी दासी कहा जा सकता है। साहित्य में भावनाओं के चित्रण और विकास के लिए कल्पना महत्त्वपूर्ण होती है।

3) बुद्धि तत्त्व –

बुद्धि साहित्य का तीसरा तत्त्व है। तथ्य, विचार और सिद्धांत इससे बुद्धि का संबंध है। साहित्य में किसी न किसी मात्रा में तथ्यों, विचारों और सिद्धांतों का भी समावेश होता है। साहित्य में भाव, कल्पना आदि का संयोजन और उचित शब्दों का प्रयोग बुद्धि तत्त्व पर निर्भर होता है। औचित्य के बिना विश्वसनीयता और प्रभाव नष्ट हो जाते है। साहित्य में उचित रूप में घटनाओं का चित्रण किया जाता है। साहित्य में कम–अधिक मात्रा में सर्वत्र बुद्धि तत्त्व का प्रयोग अनिवार्य रहता है। साहित्य में विचारों का चित्रण एक सीमा तक होना चाहिए। रचना के भाव सौंदर्य में जब तक बुद्धि तत्व बाधक न हो तब तक बुद्धि तत्व को साहित्य में उचित माना जाता है।

4) शैली तत्त्व

'शैली' तत्त्व साहित्य का चौथा तत्त्व है। साहित्यकार जिस रूप में जिस ढंग से अपने भावों को व्यक्त करता है वही शैली कहलाती है। शैली के अंतर्गत भाषा, शब्द चयन, अलंकारों का प्रयोग, छंदों का प्रयोग, काव्य रूप आदि का समावेश होता है। जैसे बिना शरीर के प्राण नहीं टिक सकता वैसे ही बिना भाषा आदि के साहित्य का निर्माण नहीं हो सकता। साहित्य का भाव पक्ष उत्कृष्ट हो तो साधारण शैली से भी काम चल सकता है। लेकिन सर्वोत्कृष्ट साहित्य वही है जिसका भाव पक्ष और शैली पक्ष दोनों ही उत्कृष्ट हो। पाश्चात्य विद्वानों ने शैली का संबंध साहित्यकार के व्यक्तित्त्व से माना है। साहित्य शैली के कारण ही विविध रूपों और विविध नाम से जाना जाता है। साहित्य की आत्मा का तो पूर्ण साक्षात्कार तभी संभव है जब हमारे हृदय में भावनाओं और अनुभूतियों का प्रकाश हो। हमारे मस्तिष्क में गंभीर अध्ययन की ज्योति हो और हमारे व्यक्तित्त्व में साधन का बाल हो।

साहित्य के पद्य और गद्य ये दो मुख्य भेद हैं। पद्य के अंतर्गत महाकाव्य, खंडकाव्य, गीत, कविता, पद, ग़ज़ल आदि पद्य के भेद होते हैं। गद्य के अंतर्गत उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, आलोचना, जीवनी, संस्मरण, साक्षात्कार, रिपोर्ताज आदि भेद होते हैं।

2.4 संस्कृति का स्वरूप

'संस्कृति' इस शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द 'कल्चुरा' से हुई है। जिसका तात्पर्य है 'प्रवृत्ति'। संस्कृति का आसान शब्दों में अर्थ लोगों के जीवन का रहन–सहन है। संस्कृति हमारी अस्मिता और

अस्तित्व का अभिन्न अंग है। संस्कृति समजानुसार भिन्न-भिन्न हो सकती है। संस्कृति क्या है? उदाहरण देखिए - जब हम अपने किसी मित्र या रिश्तेदार से मिलते हैं तब हम हाथ जोड़कर 'नमस्कार' करते हैं। यह हमारी भारतीय संस्कृति है। पश्चिमात्य देशों में यही अभिवादन करना हाथ मिलाकर, गले लगाकर, या चुंबन लेकर किया जाता है। संस्कृति समस्त मानव जीवन की गतिविधियों को समाहित करती है। संस्कृति में मानव जीवन के सभी व्यवहारों का समावेश होता है। प्रत्येक समाज में कोई न कोई संस्कृति होती है। प्रत्येक संस्कृति अपने आप में अलग और विशेष होती है। संस्कृति की परिभाषाएँ निम्न प्रकार से की गई है-

2.4.1 संस्कृति की परिभाषाएँ-

''संस्कृति मानव द्वारा समाज के एक सदस्य के रूप में अर्जित ज्ञान, विश्वासों, आस्थाओं, कला-कौशलों, आचार-विचारों, कानूनों, रीति-रिवाजों तथा अन्य क्षमताओं का एक समग्र-जटिल स्वरुप है।'' इस परिभाषा से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि, संस्कृति में सीखने और सिखाने दोनों की क्षमताएँ होती है। दूसरे शब्दों में एक समूह का हर व्यक्ति क्षमताएँ सिखलाता और सीखता है। सीखने और सिखाने की प्रक्रिया प्रत्येक संस्कृति से दूसरे संस्कृति, एक समूह से दूसरे समूह, एक स्थान से दूसरे स्थान में भिन्न-भिन्न होती हैं।

समाज विज्ञानी टायलर संस्कृति की परिभाषा देते हुए कहते हैं- ''संस्कृति वह सभ्यता, वह जटिल तंत्र है जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता, कानून, रीती-रिवाज और समाज के सदस्य के रूप में किसी व्यक्ति द्वारा अर्जित की गई दूसरी क्षमताएँ शामिल होती है।''

इस परिभाषा में कुछ बाते महत्त्वपूर्ण है जैसे - जटिल तंत्र, अर्जित क्षमता और समाज के सदस्य के रूप में सहभागिता। जटिल तंत्र के अंतर्गत मूर्त अमूर्त दोनों बाते आती है। वस्त्र पहनने का तरीका, भोजन करने की आदते, विवाह, जन्म-मृत्यु आदि समय किए जानेवाले संस्कार आदि का समावेश होता है। दूसरी बात की संस्कृति अर्जित की जाती है। संस्कृति मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचती है। इस प्रक्रिया का प्रमुख साधन भाषा और प्रतीक होते हैं।

तीसरी महत्त्वपूर्ण बात इस परिभाषा अनुसार यह है कि, संस्कृति अर्जित करने के लिए समाज का घटक बनना जरूरी हो जाता है। एक काल्पनिक पात्र मोगली के बारे में हम जानते हैं कि, मनुष्य समाज से बिछड़ने के बाद उसका लालन-पालन भेड़िये तथा अन्य जंगली जानवरों द्वारा किए जाने के कारण वह भेड़ियों के समान शिकार करना तथा बंदरों के समान पेड़ों पर चढ़ना सिख जाता है। इस प्रकार संस्कृति सीखने के लिए समाज का सदस्य होना आवश्यक होता है। समाज से अलग होकर संस्कृति का अर्जन असंभव होता है।

मैलिनोस्की संस्कृति की परिभाषा देते हुए कहते हैं -''संस्कृति जैविक एवं व्युत्पन्न अवस्थाओं को पूरा करने का सहायक यथार्थ है। यह उपभोक्ता वस्तुओं के रूप में प्रत्यय, (अवधारणा) शिल्प, विश्वास और प्रथाओं में निहित सामग्री है जो स्वाभाविक विशेषताओं को विभिन्न सामाजिक समूहों की समकालीन पूर्णता में प्राप्त होती है।''

क्लूखोन और कैली कहते हैं– ''सामान्यता वर्णनात्मक अवधारणा के रूप में संस्कृति का तात्पर्य है, मानव रचना का संचित खजाना जैसे कि पुस्तकें, चित्रकारी, भवन आदि। हमारे वातावरण और व्यक्ति दोनों को समायोजित करने के तरीकों से जुड़ा हुआ ज्ञान, जैसे की भाषा, रीति–रिवाज और शिष्टाचार, आचरण, धर्म और नैतिकता की प्रणालियाँ जो युगों से बनती आई है।''

संस्कृति परिभाषा देते हुए आगे क्लूखोन कहते हैं– ''संस्कृति में मुख्य रूप से प्रतीकों द्वारा सोचने, महसूस करने और प्रतिक्रिया करने, अधिग्रहित और संचारित करने के तरीके शामिल हैं, मानव समूहों की विशिष्ट उपलब्धियों का निर्माण, कलाकृतियों में उनके अवतार सहित, संस्कृति के आवश्यक मूल में पारंपरिक (यानी ऐतिहासिक रूप से व्युत्पन्न और चयनित) विचार और विशेष रूप से उनके संलग्न मूल्य शामिल है।

उपरोक्त सभी परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि संस्कृति मनुष्य से और समाज से संबंधित होती है। बिना संस्कृति के किसी मनुष्य या समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। अब संस्कृति के तत्त्वों को देखते हैं।

2.4.2 संस्कृति के तत्त्व– संस्कृति के अंतर्गत निम्नलिखित तत्त्व आते हैं।

1) भाषा

भाषा संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। जिस भाषा में हम शेजमर्रा के जीवन में लोगों से संपर्क करते हैं, जिस भाषा का हम प्रयोग करते हैं, उस भाषा में हमारी संस्कृति झलकती है। भाषा के माध्यम से मनुष्य की प्रजातियों की पहचान भी होती है। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में सांस्कृतिक परंपराएँ भाषा के माध्यम से ही पहुँचती है। अरब देशों में आज भी यातायात के लिए लोग ऊंट पर निर्भर रहते हैं। इस कारण वहाँ की भाषा में ऊँट से संबंधित 3000 शब्द पाए जाते हैं। भाषा एवं संस्कृति एक दूसरे के साथ अंदर से जुड़े हुए होते हैं।

2) विश्वास

विश्वास भी संस्कृति का एक तत्त्व होता है। सच्चाई के बारे में वह कथन अथवा विचार जिन्हें लोग स्वीकार करते हैं विश्वास कहा जाता है। भारत में बड़ी संख्या में लोग ईश्वर पर विश्वास करते हैं। इसी कारण विवाह तथा अन्य महत्वपूर्ण अवसरों के लिए शुभ–मुहूर्त निकलवाते हैं। इतना ही नहीं ज्यादातर परिवारों में लड़का और लड़की की कुंडलियाँ मिले बिना शादी भी नहीं की जाती।

विश्वास सदा ऐसे स्थिर नहीं रहते समय के साथ बदल भी जाते हैं। विश्वास संस्कृति का मूल्य है। जब हम एक संस्कृति में जीते हैं तो हमारा विश्वास कुछ और होता है परंतु जब हम दूसरी संस्कृतियों के संपर्क में आते हैं तो उनके अनुसार हमारे विश्वास भी बदल जाते हैं। जैसे गाँव में रहनेवाले लोग ग्रामीण संस्कृति में जीते हैं, ग्रामीण भाषा का प्रयोग करते हैं। काफी हद तक अंधविश्वासी भी होते हैं, परंतु जब वे शहर में रहने आते हैं तब उनके अंधविश्वास धुँधले पड जाते हैं, उनकी भाषा का स्वरूप बदल जाता है।

3) मान्यताएँ–

मान्यताएं समाज द्वारा स्वीकृत नियम होते हैं। जो समाज के सदस्यों के व्यवहार को नियंत्रित करते हैं। सामाजिक नियम किसी समुदाय विशेष द्वारा विकसित किए जाते हैं और उसे समुदाय के सदस्यों के व्यवहार के स्तर को तय करते हैं। वे समाज के सदस्यों के व्यवहार को दिशा देते हैं। मान्यताएं कार्य की विशिष्ट मार्गदर्शिकाएं हैं वे विभिन्न स्थितियों में मनुष्य के व्यवहार के नियमों को तय करती है। हर समाज की विभिन्न अवसरों पर किस प्रकार की पोशाख पहने इसकी कुछ मान्यताएं होती है। जैसे उत्सव में जाने के लिए हम अलग तरह के कपड़े पहनते हैं, किसी की मृत्यु हो जाने पर शोक प्रकट करने के लिए अलग तरह के कपड़े पहनते हैं। काम पर जाने के लिए अलग तरह के तथा अस्पताल जाने के लिए अलग तरह। हर समाज में मान्यताएं अलग– अलग होती हैं।

मान्यताएं दो प्रकार की होती है। औपचारिक मान्यताएं तथा अनौपचारिक मान्यताएं। औपचारिक मान्यताएं लिखित होती है। उनका उल्लंघन करने पर दंड भी किया जा सकता है। अनौपचारिक मान्यताएं लिखित नहीं होती परंतु वह समाज द्वारा स्वीकृत होती है। इनका पालन न करने पर दंड नहीं होता। अनौपचारिक मान्यताएं वह मान्यताएं हैं जिनमें लोगों से उम्मीद की जाती है कि वह उन्हें माने । जैसे सबके सामने प्यार नहीं करना चाहिए यह अनौपचारिक मान्यता है। लागू करने की अनिवार्यताओं के आधार अनौपचारिक मान्यताओं के और दो प्रकार किए जा सकते हैं। पहले प्रकार में वे मान्यताएं आती हैं जो अनौपचारिक होती है। यह हमारे कार्यों को दिशा देती है। इन्हें सामान्य मान्यताएं भी कहा जा सकता है। उदाहरणार्थ जब बड़े बोल रहे हो तो बीच में बच्चों को नहीं बोलना चाहिए। दूसरे प्रकार में वे मान्यताएं आती है जिन्हें अधिक शक्ति से लागू किया जाता है। क्योंकि उनसे समाज अथवा समुदाय के हित जुड़े हुए होते हैं। इन्हें अनिवार्य मान्यताएं कहा जा सकता है। किसी देश के कानून इन अनिवार्य मान्यताओं के आधार पर बनाए जाते हैं। इनमें मानव कल्याण निहित होता है। अनिवार्य मान्यताएं सामान्य मान्यताओं व कानून के बीच के स्तर की होती हैं।

5) सांस्कृतिक मूल्य

सांस्कृतिक मूल्य मनुष्य के अंतर्मन से जुड़े हुए होते हैं। ये मनुष्य का दिशानिर्देश करते हैं कि क्या सही है और क्या गलत है। सांस्कृतिक मूल्य समाज में रहनेवाले लोगों के बीच एक समझौता होता है कि समाज में क्या ठीक है क्या नहीं। सांस्कृतिक मूल्य समाज के लिए ऐसे मानक पैदा करते हैं कि जिनसे यह स्पष्ट हो सकें की समाज जीवन को क्या सुंदर बना सकता है और क्या उनके नैतिक स्तर को गिरा सकता है। समाज के लोग जिस तरह का व्यवहार करते हैं व्यवहार के उस तरीके को मूल्य कहा जाता है। समाज के नैतिक लक्ष्य को प्राप्त कराने में सांस्कृतिक मूल्य सहायता करते हैं। जब राष्ट्रगान बजता है तब उसके सन्मान में लोग खड़े हो जाते हैं यह सांस्कृतिक मूल्य है।

6) प्रतिबंध एवं स्वीकृति

जो व्यवहार समाज के लिए घातक होते हैं ऐसे व्यवहारों को समाज कभी भी स्वीकृति नहीं देता। जरूरत पड़ने पर ऐसे घातक व्यवहार करनेवालों को समाज द्वारा दंडित भी किया जाता है। जो समाज के लिए अच्छा काम करते हैं उन्हें समाज द्वारा पुरस्कृत भी किया जाता है। जो लोग समाज की मान्यताओं के विरुद्ध व्यवहार करते हैं ऐसे लोगों को जेल भी भेजा जाता है। स्कैफेर तथा लम्म कहते हैं, कि ''किसी संस्कृति की मान्यताएं तथा उनमें किन कार्यों के लिए लोगों को पुरस्कृत किया जाता है और किन के लिए दंडित, यह बताते हैं कि किसी संस्कृति के मूल्य और उसकी प्राथमिकताएं क्या है।'' सबसे अधिक महत्त्व के सांस्कृतिक मूल्यों का निरीक्षण इस दृष्टि से अधिक गंभीरता से किया जाता है कि वह पुरस्कार के योग्य है। या प्रतिबंधों की। जबकि कम महत्व के मामलों को हल्के से लिया जाता है अथवा उन पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता।

इस प्रकार संस्कृति के तत्व होते हैं। हमरे देश की संस्कृति की भी अलग पहचान जो निम्नलिखित तत्वों पर आधारित है। भारतीय संस्कृति में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को चार प्रमुख पुरुषार्थ माना गया हैं। इसमें धर्म को प्रथम पुरुषार्थ माना गया। भारतीय संस्कृति में धर्मपूर्वक अर्जित किए गए अर्थ को ही अधिक उचित माना गया है। जो आजीविका होती है या भरण-पोषण का आधार होता है उसे अर्थ कहा गया है। अर्थ के बारे में शुक्राचार्य ने कहा है कि जिस प्रकार शस्त्र और अस्त्र के बिना शूरता सिद्ध नहीं होती, जिस प्रकार स्त्री के बिना गृहस्थी जीवन पूर्ण नहीं हो सकता उसी प्रकार अर्थ के बिना धर्म और मोक्ष नहीं मिल सकता।

विषय और इंद्रियों के संपर्क से उत्पन्न होनेवाले मानसिक आनंद को 'काम' कहा गया है। भारतीय संस्कृति में धर्म और अर्थ के विरुद्ध काम प्राप्ति को अनुचित माना गया है। भारतीय संस्कृति में अंतिम पुरुषार्थ मोक्ष है। जिस अवस्था को पाकर मनुष्य जन्म-मरण के चक्र से, समस्त बंधनों से और दुखों से मुक्त हो जाता है उसे मोक्ष कहा जाता है।

2.5 पटकथा : साहित्य और संस्कृति

हमने इस पाठ्यक्रम में पहले सत्र में पटकथा के स्वरूप और पटकथा क्या है इसका विस्तार से अध्ययन किया है। अब यहाँ हम पटकथा का साहित्य और संस्कृति के साथ क्या संबंध है इसका अध्ययन करेंगे। इस इकाई में हमने संस्कृति के स्वरूप और तत्त्वों का अध्ययन किया है। इस अध्ययन में हमने देखा कि संस्कृति का संबंध समाज से होता है। समाज व्यक्ति समूह से बनता है। साहित्य का निर्माण भी समाज में होता है।

व्यक्ति सामाजिक प्राणी है। समाज जब प्रगति करता है तो उसमें जीवन मूल्यों की स्थापना होने लगती है। ये जीवन मूल्य संस्कृति का अंग बन जाते हैं। विकसित समाज परस्पर सहयोग के बंधनों में बंध जाता है। समाज में जब व्यक्ति अपने हित से हटकर दूसरों के हित की बात सोचने लगता है तब व्यक्ति 'स्वार्थ' से उपर उठकर 'परमार्थ' के बारे में सोचने लगता है। मनुष्य अपने परिवार के लोगों के बारे में जो भावनाएं

रखता है, वहीं वह समाज के बारे में भी रखने लगता है। ऐसा मनुष्य संवेदनाओं की अनुभूति से जब भर जाता है तब उन्हें व्यक्त करना चाहता है। यही विचार व्यक्त करते हुए सुमित्रानंदन पंत ने लिखा है– ''वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान, निकल कर आँखों से चुपचाप बही होगी कविता अनजान। व्यक्ति इस प्रकार जब भावनाओं से भर जाता है तब उसके ह्रदय से कविता अर्थात साहित्य जन्म लेता है। ऐसा साहित्य समाज को आपस में जोड़े रखता है। साहित्य के व्यापक लक्ष्य को स्पष्ट करते हुए मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है– ''निज हेतु बरसता नहीं व्योम से पानी, हम हों समष्टि के लिए व्यष्टि बलिदानी।'' अर्थात जिस प्रकार आकाश से बारिश का पानी अपने लिए नहीं बरसता उसी प्रकार हमें भी व्यक्तिगत हित से हटकर समष्टिगत हितों के लिए जीना चाहिए। समाज में जब साहित्य का स्तर ऊंचा होने लगता है तब समाज में ऊंचे जीवन मूल्य बढ़ने लगते हैं। व्यक्ति के विचार व्यापक हो जाते हैं, इससे व्यक्ति के ह्रदय में व्यापकता भर जाती है। वास्तविकता यह है कि समाज जब उच्च विचारों से भर जाता है तब उस समाज के साहित्य में भी श्रेष्ठ विचारों की अभिव्यक्ति दिखाई देती है। संस्कृति भी तब व्यापक हो जाती है, साहित्य जब–जब उच्च चिंतन से पूर्ण होता है तब–तब संस्कृति भी विकसित हो जाती है।

साहित्य और समाज के सम्बन्धों का उल्लेख करते हुए मैनेजर पाण्डेय का कहना है कि – "समाज से साहित्य का सम्बन्ध मान लेना एक बात है और उस सम्बन्ध के स्वरूप को ठीक से जानना–पहचानना दूसरी बात। जरूरी नहीं कि जो मानते हों वे जानते भी हों। साथ ही मानने और जानने से अधिक उस सम्बन्ध की विश्वसनीय व्याख्या करना। यहीं दृष्टि और पद्धति का प्रश्न सामने आना महत्वपूर्ण है।"[3] साहित्य और समाज का गहरा संबंध है। हिन्दी साहित्य के इतिहास पर दृष्टि डालें तो हम पाते हैं कि नाटक, निबन्ध कविता जैसी अनेक विधाओं का विकास सामाजिक कारणों से ही हुआ है। नवजागरण युग का साहित्य पर जो प्रभाव पड़ा उस के कारण साहित्य और समाज का मजबूत रिश्ता निर्माण हो गया। साहित्य लेखक समाज का घटक होता है। उसका व्यक्तित्त्व समाज की छाया ही प्रकट करता है और इसी कारण साहित्य को समाज का 'आईना' भी कहा जाता है।

प्रो. मैनेजर पाण्डेय के अनुसार, ''संस्कृति मनुष्य की रचना है। वह मनुष्य की मनुष्यता और समाजिकता की अभिव्यक्ति है उसके रूप से मनुष्य का श्रम और सृजन मूर्तिमान होता है। ये दोनों सगुण और साकार रूप में व्यक्त होते हैं, आमतौर पर संस्कृति को कला और धर्म से जोड़कर देखा जाता है। लेकिन व्यापक रूप में मानव समाज के सभी प्रतीकात्मक और प्रबुद्ध क्रिया कलापों को संस्कृति समझा जाता है।'' संस्कृति किसी भी समाज की मान्य परंपरा होती है। साहित्य और संस्कृति का संबंध प्रो. मैनेजर पाण्डेय के इन विचारों से और भी अधिक स्पष्ट होता है। वे कहते हैं–''हिन्दी में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की साहित्यिक सिद्धांत संबंधी मान्यताओं में उनका सांस्कृतिक दृष्टिकोण मौजूद है। उनकी लोकमंगल की धारणा का सांस्कृतिक संदर्भ है और ह्रदय की मुक्तावस्था का भी। मुक्तिबोध आलोचना को 'सभ्यता समीक्षा' कहते थे। रामचंद्र शुक्ल और मुक्तिबोध की आलोचना को संस्कृति के समाजशास्त्र के अंतर्गत विवेचित करते हुए

उनकी आलेचना का समाजशास्त्र निर्मित किया जा सकता है।"[4] इस तरह साहित्य और संस्कृति का गहरा संबंध होता है।

पटकथा लिखते समय एक लेखक के रूप में साहित्य, संस्कृति और समाज का संबंध भी होता है। पटकथा लिखने का पहला चरण कहानी से शुरू होता है। पटकथा लिखते समय कहानी का चयन कई बार साहित्यिक कहानी को आधार बनाकर किया जाता है। जैसे कि 'गोदान', 'सूरज का सातवाँ घोडा' जैसे कई साहित्यिक कृतियों को पटकथा का रूप दिया गया है। ये पटकथाएं लिखते समय सांस्कृतिक संदर्भों को ध्यान में लेना अत्यंत आवश्यक होता है। जैसे कि यदि कोई हिंदी सिनेमा की पटकथा लिखते समय कहानी में मराठी भाषिक परिवार दिखाना हो तो मराठी भाषिक संस्कृति का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। ऐसे में संवाद लिखते समय थोड़े मराठी के प्रचलित शब्दों का चयन करना पड़ता है। मराठी परम्पराएं, त्यौहार आदि का ध्यान रखना पड़ता है। तभी वह पटकथा एक सफल कलाकृति दे सकती है।

पटकथा निर्माण करते समय कहानी का संस्कृतिक संदर्भ ध्यान में लेना अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। किसी ऐतिहासिक घटना पर आधारित कहानी लेकर पटकथा लिखनी हो तो कहानी के पात्रों का सांस्कृतिक अध्ययन करना पड़ता है। उस समय के देश काल-वातावरण को ध्यान में लेकर दृश्यों की रचना करनी पडती है। जैसा की हमने इस इकाई में पढ़ा है कि हर समाज, हर देश, प्रदेश की अपनी एक संस्कृति होती है और उसका अनुसरण वह समाज करता है। इस कारण पटकथा लिखते समय संस्कृति का ज्ञान अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। इस प्रकार पटकथा, साहित्य और संस्कृति का नजदीकी संबंध होता है।

2.6 लघुपट : साहित्य और संस्कृति

ऊपर हमने साहित्य और संस्कृति के संबंध पर विस्तार से चर्चा की है। अब लघुपट के साहित्य और संस्कृति के संबंध को देखेंगे। लघुपट,साहित्य और संस्कृति का अत्यंत नजदीकी संबंध है। लघुपट और साहित्य कला के अंतर्गत आते हैं। मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ कला के रूपों का भी विकास होता गया है। साहित्य, संगीत, नृत्य, चित्रकला आदि कलाओं के समान ही लघुपट आज एक महत्वपूर्ण ऐसा कला मध्य बनकर समाज के साथ गहरी स्तरों पर जुड़ गया है। लघुपट बुनियादी रूप से समाज से अलग नहीं है। लघुपट चाहे मनोरंजन के लिए हो, व्यवसाय के लिए, या सामाजिक विषय को लेकर बनाया गया हो उसमें कला की अभिव्यक्ति के साथ सांस्कृतिक अभिव्यक्ति अवश्य ही होती है। लघुपट सामाजिक विषय, समस्या को लेकर बनाये जाते हैं इस कारण कला के उत्कर्ष की अभिव्यक्ति के लिए उसमें समाज के किसी न किसी रूप का चित्रण होता ही है। लघुपट सामाजिक यथार्थ को अत्यंत खूबसूरती से प्रस्तुत करता है। लघुपट समाज को गहराई से प्रभावित करता है और खुद भी प्रभावित होता है। आज लघुपट सामाजिक समस्याओं और संवेदनाओं को बेहतर ढंग से व्यक्त करने का सक्षम माध्यम बन गया है। जहाँ तक लघुपट के साहित्य के साथ के संबंध की बात आती है, लघुपट निर्माण की प्रक्रिया साहित्य से ही आरंभ होती है। लघुपट न केवल संवेदनाओं को व्यक्त करते हैं बल्कि हमारी संस्कृति और सभ्यता को भी प्रस्तुत करते हैं। लघुपट साहित्य, सामाजिक और सांस्कृतिक आंदोलन का प्रतिनिधित्त्व करते हैं। लघुपट और साहित्य का

संबंध अत्यंत निकट का है। लघुपट के लिए दर्शक की आवश्यकता होती है तो साहित्य के लिए पाठक। सांस्कृतिक संदर्भ में समाज के जिन विषयों पर लोग खुलकर बात नहीं कर पाते वे विषय लघुपट के विषय बन जाते हैं। जैसे मराठी सिनेमा के निर्देशक नागराज मंजूले ने सामाजिक विषमता का विषय लेकर मराठी में 'पिस्तुल्या', 'पावसाचा निबंध' जैसे बहुत अच्छे लघुपट निर्माण किए हैं। कई साहित्यिक कृतियों को लघुपट का विषय भी बनाया गया है। शैलेश मटियानी की कहानी 'पोस्टमन' पर 'तार' नाम का अच्छा लघुपट, यूट्यूब पर देख सकते हैं। साहित्य का समाज और संस्कृति से गहरा संबंध है इसीलिए लघुपट में भी सामाजिकता के साथ- साथ शिक्षा को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि कोई भी व्यक्ति किसी लघुपट से प्रभावित होकर अपनी सोच को बेहतर बना सकता है। इस प्रकार लघुपट साहित्य और संस्कृति का आपसी संबंध स्पष्ट हो जाता है।

2.7 साहित्य और पटकथा का सौंदर्यबोध

सौन्दर्यबोध के संदर्भ में अज्ञेय जी ने कहा है- ''सौंदर्य बोध मूलतः बुद्धि व्यापार है। सौंदर्य क्या है, हम नहीं जानते, सौंदर्य की परिभाषा भी नहीं किंतु सौंदर्य क्या है, यह न बता पाकर भी सुंदर क्या है, यह हम जानते हैं, पहचानते हैं, बता सकते हैं की क्या सुंदर होता है। और सुंदर क्या है, यह बता सकने का अर्थ यह है कि हम कुछ ऐसे गुणों को पृथक कर सकते हैं जिनके कारण सुंदर सुंदर है। यहाँ आग्रह पूर्वक यही दुहराना यथेष्ट है कि सौंदर्यबोध बुद्धि का व्यापार है। बुद्धि के द्वारा ही हम उन तत्त्वों को पहचानते हैं, मानव का अनुभव ही उन तत्त्वों की कसौटी है।''[5] कला मूल्य हमें अनुभव से प्राप्त होते हैं। अनुभव बुद्धि पर निर्भर होते है। बुद्धि से अनुभव प्राप्त किया जाता है, इस अनुभव से जिसे सुंदर कहा जाता है वह आनंद होता है। इस आनंद में कल्याणकारी गुण भी होता है। जिसमें कल्याणकारी भावना न हो उसे सुंदर नहीं माना जा सकता। सौन्दर्य की धारणा भौतिक सुखों से परे होती है। कोई व्यक्ति बहती हुई नदी, समंदर के किनारे डूबता सूरज या कोई अच्छा संगीत सुनकर रुक सकता है। इससे उसे कोई भौतिक सुख नहीं मिलता किंतु वह रुकता है। इसी प्रकार महान साहित्यकार जीने के लिए नहीं लिखते बल्कि लिखने के लिए जीते है। जो व्यक्ति अपना काम पूरी लगन से करता है तो उसके काम में सौन्दर्य होता है।'' जैसे की कहा गया ही है कि सौन्दर्य अपने अपने बुद्धि और अनुभव पर आधारित है तो साहित्य का सौन्दर्य भी इस कसौटी से परखा जा सकता है। साहित्य और पटकथा का सौन्दर्य बोध व्यक्ति अनुसार भिन्न हो सकता है। किसी व्यक्ति को कहानी पढ़कर 'आनंद' की अनुभूति होती है तो किसी व्यक्ति को कविता पढ़कर 'आनंद' की प्राप्ति होती है। किसी को बच्चों के खेलने कूदने का शोर आनंद भी दे सकता है तो किसीको पीड़ा देनेवाला लग सकता है। इस प्रकार सौन्दर्य व्यक्तिनिष्ट भावना है। किंतु फिर भी अच्छे संवाद, अच्छे दृश्य लिखकर जो पटकथा एक सफल फिल्म या लघुपट का रूप ले लेती तो उसे सुंदर पटकथा कह सकते हैं।

2.8 साहित्य और लघुपट सौंदर्यबोध

ऊपर हमने साहित्य और पटकथा का सौन्दर्यबोध इस विषय पर चर्चा करते हुए सौन्दर्य का अर्थ विस्तार से जाना है। साहित्य का सौन्दर्यबोध अर्थात् साहित्य पढ़कर प्राप्त होनेवाला 'आनंद' यह आनंद

व्यक्ति सापेक्ष होता है। अर्थात कोई कहानी किसी एक व्यक्ति को अच्छी लग सकती है तो किसी अन्य व्यक्ति के लिए वही कविता नीरस भी हो सकती हैं। जिस व्यक्ति की अनुभूति कविता में व्यक्त अनुभूति के समान होगी उस व्यक्ति को वह कविता 'आनंद' देगी। इसी प्रकार लघुपट में प्रस्तुत विषय जिस व्यक्ति, समाज की अनुभूति से मिलता-जुलता होगा वह लघुपट अच्छा माना जा सकता है। ग्रामीण समाज की किसी समस्या पर बना हुआ लघुपट ग्रामीण प्रवेश से आये व्यक्ति को जिस प्रकार का आनंद दे सकता है, वैसा आनंद शहरी परिवेश में पले-बढ़े व्यक्ति को नहीं मिल सकता। नागराज मंजूले द्वारा बनाया गया लघुपट 'पावसाचा निबंध' या 'पिस्तुल्या' पूरी तरह से ग्रामीण समज के परिवेश पर आधारित लघुपट हैं। इनका विषय, मर्म केवल ग्रामीण परिवेश का व्यक्ति ही समझ सकता है। किंतु फिर भी कला में समाज से संबंधित मूल्य जब प्रस्तुत होते है तब वह कलाकृति सुंदर मानी जाती है। इसी आधार पर लघुपट में बड़ी ही सुंदरता से समाज का चित्रण किया जाता है। लघुपट के पात्र परिवेश अनुसार होते हैं। पात्रों की भाषा, संवाद, खान-पान सभी साधारण होता है। इस कारण लघुपट लोकप्रिय हो जाते हैं।

2.9 पटकथा और लघुपट शिल्प एवं अन्य पक्ष

इसी पाठ्यक्रम के अंतर्गत प्रथम सत्र के लिए हमने पटकथा के स्वरूप एवं शिल्प का विस्तार से अध्ययन किया है। पटकथा निर्माण में आवश्यक सभी तत्व पटकथा के शिल्प के अंतर्गत आते हैं। अब यहाँ हम केवल लघुपट के शिल्प एवं अन्य पक्षों का अध्ययन करेंगे।

कथा-पटकथा -

कोई भी लघुपट निर्माण करने से पूर्व एक कहानी की जरूरत होती है। लघुपट के लिए कहानी अर्थात विषय का चयन सबसे महत्वपूर्ण होता है। लघुपट निर्माता विषय को चुनकर, निर्देशक के साथ विचार-विनिमय करता है। इसके बाद विषय और कहानी के अनुसार पटकथा लेखक तथा संवाद लेखकों से मिलकर कहानी के आधार पर पटकथा लिखी जाती है। कहानी तथा पटकथा के आधार पर ही लघुपट के कलाकार, फिल्मांकन के लोकेशन, गीत-संगीत आदि निर्धारित किए जाते हैं। लघुपट की कहानी में आवश्यक परिवर्तन करके पटकथा लिखी जाती है। अलग-अलग दृश्यों की तथा लोकेशन की जानकारी पटकथा में दी जाती है। पटकथा में मुख्य कलाकार तथा अन्य कलाकार, सेट निर्माण, ध्वनि संयोजन, आदि के बारे में भी जानकारी दि जाती है। इस प्रकार लघुपट निर्माण करते समय प्रथमविषय निर्धारण करके उसकी पटकथा का निर्माण किया जाता है।

संवाद-

लघुपट में संवाद महत्त्वपूर्ण होते हैं। लघुपट के दृश्यों में कलाकारों द्वारा बोले जाने वाले वाक्य कहलाते हैं। लघुपट के लिए संवादों की रचना करनेवाला व्यक्ति संवाद लेखक होता है। लघुपट की कथा का विषय ध्यान में रखकर ही संवाद लेखक को उस कथा के अनुरूप भाषा का प्रयोग करके संवादों को लिखना होता है। लघुपट के पात्रों का परिवेश, चरित्र आदि बातों को भी ध्यान में रखकर संवाद लिखे जाते हैं। लघुपट के लिए पटकथा पूरी होने के बाद ही संवाद लिखे जाते हैं।

स्क्रीन प्ले

लघुपट फिल्माते समय कुछ दृश्यों में संवाद न होते हुए भी वे दृश्य अपनी कहानी स्वयं दर्शकों कों से कहती है। यही स्क्रीन प्ले कहलाता हैं। किसी बात को दृश्य के माध्यम से दर्शकों के सामने रखने से दर्शक अपने आप उस प्रसंग को समझ जाते हैं। इस दृश्य के माध्यम से क्या कहने की कोशिश निर्देशक द्वारा की गई है यह समझ जाता है। स्क्रीन प्ले में शब्दों की जरूरत नहीं होती वे दृश्य स्वयं अपनी कहानी कहते हैं।

गीत–

लघुपट में आवश्यकता हो तो विषयानुसार, प्रसंगनुसार गीत का प्रयोग भी किया जा सकता है। विषय का प्रभाव बढ़ाने के लिए ही गीत का प्रयोग भी लघुपट में किया जाता है।

संगीत–

लघुपट में संगीत की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। किसी गहन सामाजिक विषय को लेकर लघुपट का निर्माण किया जाता है। लघुपट में कहानी दृश्यों द्वारा समझाई जाती है। दृश्य में संगीत का प्रयोग करने से दृश्य अधिक प्रभावी हो जाता है। संगीत के प्रयोग से दृश्य में दिखाई गई भावनाएँ अधिक व्यापकता के साथ प्रेषित होती हैं। इसीलिए दृश्य के अनुसार लघुपट में संगीत का प्रयोग किया जाता है।

अभिनय–

किसी लघुपट को सफल बनाने में अभिनय की भूमिका बड़ी महत्त्वपूर्ण होती है। लघुपट में कहानी के अनुसार पात्रों का अर्थात कलाकारों का चयन किया जाता है। लघुपट के मुख्य पात्र तथा अन्य सहयोगी पात्र इनके अभिनय पर लघुपट की सफलता निर्भर होती है। लघुपट में कलाकारों द्वारा वाचिक, आंगिक, सात्विक तथा आहार्य प्रकार का अभिनय करके लघुपट का विषय अधिक प्रभावी ढंग से दर्शकों तक पहुँचाया जाता है।

नृत्य–

कई बार लघुपट को प्रभावी बनाने के लिए विषय की माँग हो तो नृत्य का प्रयोग भी किया जाता है। नृत्य द्वारा मानवीय अभिव्यक्ति का रसमय प्रदर्शन किया जाता है। कई बार सुख और दुख जैसी भावनाएँ भी नृत्य द्वारा दिखाई जाती है। विषय और प्रसंग के अनुसार शास्त्रीय या लोकनृत्य का प्रयोग लघुपट में किया जाता है।

लघुपट का तकनीकी पक्ष

लघुपट निर्माण बहुत हद तक एक तकनीक पर निर्भर होता है। इसके तकनीकी पक्ष को हम निम्न प्रकार से समझ सकते हैं।

लघुपट निर्माता–

लघुपट निर्माण प्रक्रिया में लघुपट निर्माता अर्थात् प्रोड्यूसर की भूमिका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होती है। लघुपट के लिए कहानी के चुनाव से लेकर लघुपट प्रदर्शित करने तक की जिम्मेदारी निर्माता की होती है। लघुपट के लिए सर्वथा निर्माता जिम्मेदार होता है। इस जिम्मेदारी को देखकर लघुपट निर्माता के लिए 'प्रोड्यूसर इज द ओनर ऑफ द शिप' ऐसा कहा जा सकता है। लघुपट निर्माण की लागत से लेकर सभी चीजों के लिए निर्माता ही जिम्मेदार होता है। इस प्रकार से लघुपट निर्माण के लिए निर्माता की आवश्यकता होती है।

लघुपट निर्देश–

लघुपट निर्माण में निर्माता के बाद निर्देशक की आवश्यकता होती है। निर्देशक के बिना किसी भी लघुपट के निर्माण की कल्पना नहीं की जा सकती। निर्देशक लघुपट का सर्वेसर्वा होता है। लघुपट के लिए विषय का चयन करना, कहानी का चयन करना आदि सारी जिम्मेदारी निर्देशक की होती है। निर्धारित विषय पर लघुपट बनाने से पहले निर्माता की अनुमति आवश्यक होती है। यह अनुमति लेने का काम भी निर्देशक को करना पड़ता है। निर्माता और कलाकार इनके बीच का माध्यम निर्देशक ही होता है।

कला निर्देशक (आर्ट डायरेक्टर)–

लघुपट निर्माण में कला निर्देशक की आवश्यकता होती है। कहानी, दृश्य के अनुसार लघुपट का शूटिंग इन–डोअर किया जाएगा या आउट डोअर किया जाएगा यह निर्धारित करने का काम कला निर्देशक करता है। किसी सामाजिक विषय पर लघुपट निर्माण करते समय उस विषय, परिवेश और दृश्य के अनुसार सेट निर्माण करना, शूटिंग का लोकेशन निश्चित करना आदि काम कला निर्देशक को करना पड़ता है।

कॅमेरामन–

कॅमेरा तथा कॅमेरामन के बिना लघुपट निर्माण का काम पूर्ण नहीं हो सकता। कॅमेरा से संबंधित सभी काम कॅमेरामन को करने पड़ते हैं। लघुपट के अच्छे फिल्मांकन के लिए एक कुशल कॅमेरामन की आवश्यकता होती है। एक अच्छा कॅमेरामन ही लघुपट के दृश्य निर्देशक की सोच के अनुसार फिल्माकर लघुपट को प्रभावी बनाने में अपनी भूमिका निभाता है।

इन तकनीकी बातों के साथ ही लघुपट निर्माण में उचित लाईट व्यवस्था की आवश्यकता होती है। कथा तथा पात्रों के अनुसार पोशाख और मेकअप की व्यवस्था भी करनी पड़ती है। पात्रों के चरित्र नुसार केश रचना भी प्रभाव बढ़ाती है। कई बार लघुपट की शूटिंग के दरम्यान संवादों को केवल गाईड ट्रॅक के रूप में रेकॉर्ड किए जाते है और शूटिंग होने के बाद स्टूडियो में कलाकारों द्वारा फिर से संवाद रेकॉर्ड किए जाते है। इसी समय साउंड इफेक्ट का प्रयोग भी किया जाता है। यह प्रक्रिया पूरी होने के बाद एडिटिंग की प्रक्रिया की जाती है जिस में कहानी और पटकथा के अनुसार दृश्यों को जोड़कर लघुपट को प्रदर्शित करने के लिए अंतिम रूप दिया जाता है।

2.10 साहित्य विधाओं का दृश्य माध्यमों में रूपांतरण

उपन्यास, कहानी, लघु कथा, कविता आदि साहित्यिक विधाओं को दृश्य-श्रव्य माध्यम में परावर्तित कर देना रूपांतरण कहलाता है। रूपांतरण में साहित्यिक विधाओं को सिनेमा, टेलीविजन की सीरियल, लघुपट आदि रूपों में परावर्तित किया जाता है। रूपांतरण के संबंध में विद्वानों में मतभेद है कि रूपांतरण को मूल रचना के रूप में देखा जाए अथवा नहीं। जब कोई उपन्यास या कहानी रुपांतरित होकर सिनेमा के रूप में आती है तो वह मौलिक जैसी ही होती है। आर. के. नारायण के उपन्यास 'गाइड' और फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी 'मारे गए गुलफाम' पर 'गाइड' और 'तीसरी कसम' नाम से फिल्में बनी थी। कभी-कभी किसी उपन्यास का सिनेमा मे रूपांतरण करते समय उसमें कई दृश्य, पात्र, प्रसंग, संस्कृति आदि की दृष्टि से बदलाव किया जाता है। इसका अच्छा उदाहरण हॉलीवुड की बनी फिल्म 'मोमेंटो' है। यह फिल्म रूपांतरित करके पहले तमिल में बनाई गई और बाद में हिंदी में यही फिल्म 'गजनी' नाम से बनाई गई। मूलतः 'गजनी' 'मोमेंटो' का रूपांतरण होने के बावजूद एक अलग फिल्म लगती है। 'गजनी' में कई ऐसे दृश्य है जो मोमेंटो में नहीं है। जैसे नायक और नायिका का प्रेम, गाने आदि। हिंदी में प्रेमचंद, फणीश्वरनाथ रेणु, कमलेश्वर, मंटो, यशपाल आदि की साहित्य कृतियों को रूपांतरण किया गया है। 'गोदान', 'चित्रलेखा', 'सारा आकाश', 'यही सच है', 'आपका बंटी', 'काली आँधी', 'एक चादर मैली सी' 'देवदास' इन कृतियों पर सिनेमा बनाया गया है। सत्यजीत राय ने प्रेमचंद की कहानी 'सद्गति' को एक टेली फिल्म तथा 'शतरंज के खिलाड़ी' को एक डॉक्यूमेंट्री के रूप में प्रस्तुत किया है। गुलजार ने प्रेमचंद की कई कहानियों को टीव्ही धारावाहिक के रूप में रूपांतरित किया है।

मोहन राकेश, गिरीश कर्नाड, विजय तेंदुलकर, बादल सरकार, ज्ञानदेव अग्निहोत्री, डॉ. शंकर शेष जैसे नाटककारों के नाटकों का भी रूपांतरण सिनेमा के रूप में किया गया है। 'आषाढ़ का एक दिन', 'आधे अधूरे', 'शांतता कोर्ट चालू आहे', 'चरणदास चोर', 'घरौंदा' जैसे बहुचर्चित नाटकों का फिल्मी रूपांतरण किया गया है। केशव प्रसाद मिश्रा द्वारा लिखित उपन्यास 'कोहबर की शर्त' पर 'नदिया के पार', भीष्म साहनी के 'तमस' पर '1947 अर्थ', यशपाल के 'झूठा सच' पर 'खामोश पानी', कृष्णा सोबती के 'जिंदगी नामा' पर 'ट्रेन टू पाकिस्तान', अमृता प्रीतम के 'पिंजर' पर 'ग़दर एक प्रेम कथा', 'कृष्णचंद्र' के 'पेशावर एक्सप्रेस' पर 'वीर जारा', 'धर्मवीर भारती' के 'गुनाहों के देवता' उपन्यास पर 'गुनाहों का देवता', 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' उपन्यास पर 'सूरज का सातवाँ घोड़ा', कमलेश्वर के 'पति-पत्नी और वो' उपन्यास पर 'पति-पत्नी और वो', 'डाक बंगला' उपन्यासों पर उन्ही नामों से फिल्मे बनी है। रमेश बक्षी के '18 सूरज के पौध' उपन्यास पर '27 डाउन', काशीनाथ सिंह के 'काशी का अस्सी' उपन्यास पर 'मोहल्ला अस्सी' ये फिल्में बनी है। साथ ही चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' के 'उसने कहा था' कहानी पर 'उसने कहा था', फिल्म बनी है। मन्नू भंडारी के 'यही सच है' पर 'रजनीगंधा', मंटो के 'टोबा टेक सिंह' कहानी पर 'टोबा टेक सिंह' फिल्म बनी। मोहन राकेश के 'उसकी रोटी' कहानी पर इसी नाम से फिल्म बनी है, मोहन राकेश के 'मलबे का मालिक' कहानी पर 'हिना' फिल्म बनी। मुक्तिबोध के 'सतह से उठता आदमी' पर इसी नाम से फिल्म

बनी है, निर्मल वर्मा के 'माया दर्पण' कहानी पर इसी नाम से फिल्म बनी, उषा प्रियंवदा की कहानी 'फाल्गुन' पर 'अनवर' नामक फिल्म बनी है ।

साहित्यिक विधाओं का रूपांतरण करना एक कठिन कार्य होता है। फिल्म निर्माता के लिए साहित्य को फिल्म में रूपांतरित करना चुनौती पूर्ण कार्य होता है। संवाद, भाषा, संस्कृति, कथानक आदि के अनुसार साहित्य रचना में कुछ परिवर्तन करने के पश्चात् ही उस रचना को फिल्म का रूप दिया जाता है। कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि साहित्यिक विधाएं एक बार छापने के बाद उनमें परिवर्तन की कोई गुंजाइश नहीं होती। चित्र भी एक बार बनने के बाद दोबारा सुधार नहीं किया जा सकता, जबकि दृश्य माध्यमों के निर्माण में अंतिम कुछ नहीं होता।

2.10.1 रूपांतरण और पटकथा का संबंध

रुपांतरण एक प्रकार से अनुवाद की प्रक्रिया होती है। यह भाषाई अनुवाद नहीं बल्कि एक विचार, सोच- समझ, परंपरा का अनुवाद होता है। जब कोई फिल्म निर्माता किसी साहित्यिक रचना को फिल्म बनाने के अनुकूल मानता है, तब वह रचना अनुवाद की प्रक्रिया से गुजरती है। सर्वप्रथम फिल्म निर्माता मूल रचनाकार की सोच, समझ और अपनी सोच समझ के अनुरुप रचना को बना लेता है। फिल्म के चरित्रों को भाषा के व्याकरण के अनुरुप बनाता है। समय और स्थान को भी फिल्म की मांग के अनुसार रुपांतरित करता है। फिल्म निर्माण में सामाजिक और सांस्कृतिक बातों का ध्यान रखता है। रचना के संबंधित समाज की परंपराओं और संस्कृति को रुपांतरित करता है। इस प्रक्रिया में वह बिंब, दृश्य और संवाद का भी अनुवाद करता है। किसी सिनेमा की पटकथा और रूपांतरण में प्रक्रियागत अंतर होता है। पटकथा लेखन रूपांतरण के बाद की प्रक्रिया होती है। किसी रचना को सर्वप्रथम रूपांतरित किया जाता है और बाद में उसके अनुसार पटकथा लिखी जाती है। बाद में उस पटकथा को 'शूटिंग स्क्रिप्ट' का रूप दिया जाता है। 'शूटिंग स्क्रिप्ट' के द्वारा ही किसी पटकथा को दृश्य और संवादों के जरिए फिल्माने योग्य बनाया जाता है। किसी पटकथा में अच्छे दृश्यों को भरने के लिए रूपांतरण की प्रक्रिया का उपयोग किया जाता है। यदि कोई पटकथा अपने सार्थक रूपांतरण द्वारा एक अच्छे दृश्य-श्रव्य माध्यम का रूप लेती है तो वह कृति लोकप्रिय हो जाती है।

2.11 पारिभाषिक शब्द

आर्ट डायरेक्टर - कला निर्देशक

प्रोड्यूसर - निर्माता

शूटिंग स्क्रिप्ट - फिल्मांकन के लिए लिखी गई स्क्रिप्ट

स्क्रीन प्ले - बिना संवाद दृश्य के माध्यम से प्रस्तुती

स्क्रिप्ट - पटकथा / फिल्माने के लिए लिखी गई कहानी

स्टोरी बोर्ड – चित्रों की शृंखला

2.12 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1) .... यह साल साहित्य और सिनेमा दोनों क्षेत्रों के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

अ) 1857 ब) 1913 क) 1947 ड) 2020

2) 1913 में साहित्य के क्षेत्र का 'नोबेल पुरस्कार' .... को मिला।

अ) रामधारी सिंह दिनकर ब) अज्ञेय

क) रवींद्र नाथ टैगोर ड) महादेवी वर्मा

3) 'राजा हरिश्चंद्र' फिल्म बनाकर भारत में .... ने सिनेमा की शुरुवात की।

अ) राज कपूर ब) पृथ्वीराज कपूर क) सत्यजित रे ड) दादा साहब फाल्के

4) साहित्य और लघुपट दोनों .... के ही दो अलग-अलग रूप हैं।

अ) समाज ब) कला क) पैसे कमाने ड) पुस्तक

5) साहित्य में .... का महत्व होता है।

अ) लेखक ब) पुरस्कार क) शब्द ड) पात्र

6) लघुपट एक .... माध्यम है।

अ) साहित्यिक ब) दृश्य-श्रव्य क) समाज ड) यूट्यूब का

7) लघुपट निर्माता का .... है सामाजिक, सांस्कृतिक हितों की रक्षा करना।

अ) धर्म ब) ज्ञान क) समज ड) व्यवसाय

8) साहित्य के .... तत्त्व बताए गये हैं।

अ) 6 ब) 4 क) 3 ड) 5

9) 'संस्कृति' इस शब्द की उत्पत्ति .... भाषा के शब्द 'कल्चुरा' से हुई है।

अ) जर्मन ब) मराठी क) फ्रेंच ड) लैटिन

10) प्रत्येक संस्कृति अपने आप में अलग और .... होती है।

अ) नई ब) कमजोर क) विशेष ड) अपूर्ण

11) .... संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है।

अ) भाषा ब) सिनेमा क) पटकथा ड) लेखक

12) .... का समाज और संस्कृति से गहरा संबंध है।

अ) कॅमेरा ब) साहित्य क) स्क्रिप्ट ड) लाईट

13) अज्ञेय जी ने कहा है ''सौंदर्य बोध मूलतः .... व्यापार है।''

अ) नया ब) बड़ा क) काला ड) बुद्धि

14) कला मूल्य हमें .... से प्राप्त होते है।

अ) पैसे ब) अनुभव क) दूसरों ड) परिवार

15) लघुपट में बड़ी ही सुंदरता से .... का चित्रण किया जाता है।

अ) कहानी ब) नायिका क) समाज ड) पटकथा

2.13 सारांश

- सन् 1913 ई. यह साल साहित्य और सिनेमा दोनों क्षेत्रों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- सन् 1913 ई. में साहित्य के क्षेत्र का 'नोबेल पुरस्कार' रवींद्र नाथ टैगोर को मिला।
- सन् 1913 ई. में ही दादा साहब फाल्के ने 'राजा हरिश्चंद्र' फिल्म बनाकर सिनेमा की शुरुवात की।
- लघुपट, साहित्य और संस्कृति का आपसी संबंध है।
- साहित्य और लघुपट दोनों कला के ही दो अलग-अलग रूप हैं
- साहित्य में शब्दों का महत्त्व होता है तो लघुपट एक दृश्य-श्राव्य माध्यम है।
- साहित्यकार और लघुपट निर्माता दोनों का धर्म है सामाजिक, सांस्कृतिक हितों की रक्षा करना।
- विद्वानों द्वारा साहित्य के निम्नलिखित चार तत्त्व बताए गये हैं - 1) भाव 2) कल्पना 3) बुद्धि 4) शैली
- 'संस्कृति' इस शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द 'कल्चुरा' से हुई है।
- प्रत्येक समाज में कोई न कोई संस्कृति होती है। प्रत्येक संस्कृति अपने आप में अलग और विशेष होती है।
- संस्कृति के अंतर्गत निम्नलिखित तत्त्व आते हैं।
- भाषा संस्कृति का एक महत्वपूर्ण तत्त्व है
- साहित्य जब-जब उच्च चिंतन से पूर्ण होता है तब-तब संस्कृति भी विकसित हो जाती है।
- पटकथा, साहित्य और संस्कृति का नजदीकी संबंध होता है।

- साहित्य का समाज और संस्कृति से गहरा संबंध है
- अज्ञेय जी ने कहा है– ''सौंदर्य बोध मूलतः बुद्धि व्यापार है।''
- कला मूल्य हमें अनुभव से प्राप्त होते हैं।
- बुद्धि से अनुभव प्राप्त किया जाता है इस अनुभव से जिसे सुंदर कहा जाता है वह आनंद होता है।
- लघुपट में बड़ी ही सुंदरता से समाज का चित्रण किया जाता है।
- लघुपट निर्माण बहुत हद तक तकनीक पर निर्भर होता है।
- कॅमेरा तथा कॅमेरामन के बिना लघुपट निर्माण का काम पूर्ण नहीं हो सकता।
- उपन्यास, कहानी, लघु कथा, कविता आदि साहित्यिक विधाओं को दृश्य-श्रव्य माध्यम में परावर्तित कर देना रूपांतरण कहलाता है।
- किसी पटकथा में अच्छे दृश्यों को भरने के लिए रूपांतरण की प्रक्रिया का उपयोग किया जाता है।
- सार्थक रूपांतरण द्वारा एक अच्छे दृश्य-श्रव्य माध्यम का रूप लेती है तो वह कृति लोकप्रिय हो जाती है।

2.14 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1) ब) 1913
2) क) रवींद्र नाथ टैगोर
3) ड) दादा साहब फाल्के
4) ब) कला
5) क) शब्द
6) ब) दृश्य-श्रव्य
7) अ) धर्म
8) ब) 4
9) ड) लैटिन
10) क) विशेष
11) अ) भाषा
12) ब) साहित्य

13) ड) बुद्धि

14) ब) अनुभव

15) क) समाज

2.15 क्षेत्रीय कार्य

1) मराठी उपन्यासो पर बनी फिल्मों की जानकारी लें।

2) हिंदी की साहित्य कृतियों पर बने फिल्मों और टीव्ही धारावाहिकों की सूची बनायें।

3) क्षेत्रीय विषय लेकर लघुपट के लिए कहानी लिखें।

2.16 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1) <https://www.youtube.com/watch?v=xwkjDk2wQ9w>

2) <https://www.youtube.com/@bandrafilmfestival/featured>

3) सिनेमा और समाज - विजय कुमार अग्रवाल

4) सवाक भारतीय हिंदी फिल्म्स उद्भव और विकास - डॉ. व्ही.एन. शर्मा

2.17 संदर्भ ग्रंथ

1) साहित्यिक निबंध-गणपतिचन्द्गुप्त - वाणी प्रकाशन

2) साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका-मैनेजर पाण्डेय - राजकमल प्रकाशन

3) संकलित निबंध-मैनेजर पाण्डेय-नॅशनल बुक ट्रस्ट

4) www.hindisamay.com

❑❑❑